बालमुनि की समाधि यात्रा

समाधि मरण

बिन बोले भी मुझसे मुनिवर !
कितना कुछ कह जाते हो...
आँखों से युं बाते करके,
मन में ही बस जाते हो...

कमजोर ये काया है फिर भी,
कर्मों से जंग मचाते हो...
बालमुनि का नाम धराकर,
महामुनि बन जाते हो...

सद्गुरु को श्रीकृष्ण बनाकर,
खुद अर्जुन बन जाते हो...
समाधि-राधावेध साधकर,
जीवन जीत बताते हो...

|| ॐ ह्रीँ अर्हं नमः ||

|| श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-राजेन्द्र-जितेन्द्र-गुणरत्नसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ||

बालमुनि की समाधि यात्रा

● आशीर्वाद ●

गच्छाधिपतिश्री प्रशांतमूर्ति, प.पू.आ.भ. **श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.**

● प्रेरणा मार्गदर्शन ●

दीक्षा दानेश्वरी प.पू.आ.भ. **श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा.** के शिष्यरत्न
निःस्पृहयोगी प.पू.आ.भ. **श्री पुण्यरत्नसूरीश्वरजी म.सा.**
सूक्ष्मसंयमी प.पू.आ.भ. **श्री यशोरत्नसूरीश्वरजी म.सा.**

● लेखक ●

विद्वद्वर्य पू. मुनि **श्री मौर्यरत्नविजयजी म.सा.** के शिष्य
मुनि **क्षमारत्नविजय**

प्राप्ति स्थान

हितेशभाई गांधी
२०१, सिद्धार्थ अेपार्टमेंट,
माणेकलाल रोड, सांड कुवा गेट,
पोलीस स्टेशन के सामने,
नवसारी-३९६४४५.
मो. : ९४२६६२८८००

अक्षयभाई जैन
D No. 11-16-1/1,
Singrajuvari Street,
Vijaywada - 520001 (A.P.)
Mob. : 9848111980

देवेन्द्रभाई चौहान
Aangan Silk & Saree
No. 3, Suresh Complex, 1st Flr.,
1st Cross Appaji Rao Lane,
Nagrath Peth, Bangalore - 560002.
Mob. : 7019024025

प.पू.आ.भ.
श्री प्रेमसूरिजी म.सा.

प.पू.आ.भ.
श्री भुवनभानुसूरिजी म.सा.

तस्मै श्री गुरवे नमः

प.पू.आ.भ.
श्री जयघोषसूरिजी म.सा.

प.पू.आ.भ.
श्री राजेन्द्रसूरिजी म.सा.

प.पू.आ.भ.
श्री जितेन्द्रसूरिजी म.सा.

प.पू.आ.भ. श्री गुणरत्नसूरिजी म.सा.

स्मरणांजलि...

सिद्धांत दिवाकर गच्छाधिपतिश्री
प.पू.आ.भ.
श्री जयघोषसूरीश्वरजी म.सा.

दीक्षादानेश्वरी गुरुदेवश्री
प.पू.आ.भ.
श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा.

गुरुदेव ! आप इस कदर
विदा हो चले...
चले आप अकेले और
हुए हम अकेले...

सादर श्रद्धांजलि

मातुश्री शांतीबहन वालचंदजी टोकराजी मेहता परिवार

हस्ते - पारसभाई, सुरेशभाई, चेतनभाई

पुरण (राज.) निवासी, हाल - बोरीवली (मुंबई)

C.E. INFRA (INDIA), H.M.V. ASSOCIATES

श्रीमती राजीबहन मुलतानमलजी कोठारी परिवार

हस्ते - श्रीमती वीणाबहन जितेन्द्रजी कोठारी

मुंडारा (राज.) निवासी, हाल - दादर (मुंबई)

ASC PVT. LTD.

॥ श्री महावीराय नमः ॥
॥ नमो नमः श्री गुरु भुवनभानुसूरये ॥

300 पुस्तकों के लेखक सरस्वतीनंदन

जैनाचार्य श्रीमद् विजय रत्नसुंदरसूरीश्वरजी म.सा.

जो देखा वह कल्पनातीत था...

एक छोटा बालक... नाम उसका संयम...
शायद जन्मोजनम का आराधक, शायद जन्मोजन्म का परिणत और
शायद जन्मोजनम का अंतर्मुख, रुप ऐसा कि सभी का मन मोह ले...
शब्दों में माधुर्य ऐसा कि सभी को प्रिय बना रहे... और
व्यवहार में शालीनता ऐसी कि सभी आफरीन पुकार उठे...
ऐसे बालक संयम को बहुत ही छोटी उम्र में संयम जीवन मिल गया।

आराधना और अध्ययन क्षेत्र में... प्रवृति और परिणति क्षेत्र में... अंतर्मुखता और अनुराग क्षेत्र में... सद्गुण और समाधि क्षेत्र में... उन्होंने जो छलांग लगाई वह कल्पनातीत थी !!!

उनका भविष्य तो उज्ज्वल था ही लेकिन उनसे प्रभुशासन का भविष्य भी उज्ज्वल लग रहा था... लेकिन अफसोस।

किसी अकल रोग ने उनके शरीर का भोग ले लिया। सभी प्रकार के द्रव्य - भाव उपचार भी उनके शरीर को व्याधिमुक्त न कर सके और मात्र ६ साल के संयम पर्याय में... २० साल की उम्र में... संयम से मुनिराज श्री दानरत्नविजय बने, उस आत्मा ने परलोक प्रयाण किया।

उनकी बीमारी दरमियान समाधि और स्वस्थता... मस्ती और प्रसन्नता... स्मित और सहजता... निहारने का महा सद्भाग्य मुझे प्राप्त हुआ। मैं स्तब्ध भी हुआ और आनंदित भी...

मैं आश्चर्यचकित भी हुआ और भावविभोर भी... इस छोटी उम्र में इस जालिम वेदना के बीच इतनी अकल्पनीय प्रसन्नता टिकी रही ! इस हकीकत ने मुझमें इस मुनिवर के प्रति जो बहुमानभाव प्रगटाया उसे शब्द में कहना मेरे लिए अशक्य है।

मुनिवर की सेवा-समाधि के लिए तपस्वीरत्न **आ. श्री पुण्यरत्नसूरिजी**, प्रवचनकार **आ. श्री यशोरत्नसूरिजी** तथा उनके शिष्यों ने जो उत्साहपूर्वक समयादि का भोग दिया है वह काबिलेदाद है।

मुनिवर की सेवा में लीन बने मुनि श्री क्षमारत्नविजयजी ने अत्यंत रोचक शैली में, दिल को जकड़ रखे इस तरह बालमुनि के जीवन प्रसंगों का जो वर्णन किया है, उसे पढ़ते आँखे अश्रु सभर बने बिना रहती नहीं।

कली पूर्णरुप से विकसित हो... पुष्प बने उससे पहले ही टूटकर बिखरती है, तब पीड़ा तो जरुर होती है, लेकिन इस दौरान उसने जो सुवास फैलाई है, उसका जब खयाल आता है, तब कुछ राहत का अनुभव होता है।

बाल मुनिवर के जीवन की यशोगाथा के आलेखन करने के लिए मुनि श्री क्षमारत्नविजयजी को खूब-खूब अभिनंदन...

ज्ञान दर्शन चारित्र

संपर्क सूत्र : रत्नत्रयी ट्रस्ट, 258, गांधी गली, स्वदेशी मार्केट, कालबादेवी, मुंबई-400002.
Ph.: +91 92233 49533 / 98251 21455 E-mail : gurudevshri1@gmail.com www.ratnaworld.com

बाल मुनि... का राधा वेध...

छोटी-सी पानी की बूंद छीप में छुप जाएँ तो मोती बनकर चमक उठती है...

छोटा-सा आश्वासन जिंदगी से हारे हुए को मिल जाएँ तो जीवन बचा सकता है...

छोटा-सा दीपक फैले हुए घने अंधकार का नाश कर सकता है... छोटों को कमजोर मत समझो...

यह छोटा-सा समय ही सारी दुनिया को नचा रहा है... छोटी उम्रवाले भी कभी बड़ा पराक्रम कर जाते हैं। वास्तव में छोटी उम्र केवल शरीर का परिणाम है।

आत्मा तो सभी की समान ही होती है इस आत्मा की शक्ति का परिचय हो जाएँ... अनुभव और अभ्यास हो जाएँ...

तो फिर पराक्रम बायें हाथ का खेल बन जाता है।

ऐसे ही बाल पराक्रमी मुनिराज **श्री दानरत्नविजयजी म.सा.** जो कद में छोटे थे लेकिन उनकी महानता आसमान छू रही थी, जीवन छोटा था लेकिन जीवन के हार्द को हस्तगत करनेवाले थे, साधना थोड़ी लेकिन समाधि के शिखर को सर करनेवाले थे...

२० साल की उम्र में मृत्यु का सामना करने में वे घबराये नहीं... ६ साल के संयम पर्याय में भी जालिम रोग के सामने समाधि का शस्त्र लिये एक अव्वल कोटी के योद्धा की अदा लोहा लेते रहे।

शालीन स्वभाव, समर्पण, स्वाध्याय, संवेदन, समझ, समाधि... इन सभी समृद्धियों को पाते हुए उन्होंने जीवन के परम तथ्य को न केवल समझा लेकिन आत्मसात् कर बताया।

हसमुख चेहरा, मधुरवाणी, औचित्यपूर्ण व्यवहार, निर्दोष मन और विचक्षण बुद्धि यह बालमुनि की प्रमुख पहचान थी, जो संपर्क में आनेवाले हर व्यक्ति के दिल को छू जाती थी।

अनादिकाल से संसार में भ्रमण करानेवाले बुद्धि (समीक्षा प्रधान विचारधारा) और अहंकाररुपी दोष युगल से परे रहकर निकट मोक्षगामी बालमुनि सभी के आदर्श बने रहे।

बालमुनि की समाधिमृत्यु वाकई राधावेध तुल्य पराक्रम था। राधावेध की तरह उन्होंने भी आठ चक्रों के पार निशाने पर तीर लगाया, जिसे देखकर सभी की वाचा ''अहो ! अहो !'' ध्वनित हो उठी।

१) **संसार का आकर्षण** छोड़कर संयम ग्रहण किया।

२) **स्वजनों का ममत्व** तोड़कर संयम के आनंद में डूब गये।

३) **दीर्घकालीन रोग** को समर्पण और धैर्य के बल से हँसते-हँसते सहन किया।

४) क्रमशः शरीर क्षीण होने पर भी **देह की चिंता** से ज्यादा समाधि को महत्त्व दिया।

५) २-२१/२ महिने पूर्व अंतकाल निकट होने का ही अंदाजा लगने पर भी **मरण के भय** को नहीं पायें।

६) इलाज लागु न पड़ने पर 'मुझे जीना है' 'मुझे बचा लो' ऐसी कोई **जीने की इच्छा** नहीं बताई।

७) प्रेम-वात्सल्यपूर्वक सतत सेवारत गुरुवर्यों-**सहवर्तीयों के राग से परे** होकर एकत्व भाव में लीन हुए।

८) अंतिम हितशिक्षा पाकर **मृत्यु की वेदना** में भी समाधिस्थ बनकर **'समाधिमरण'** प्राप्त किया।

इन आठों घूमते चक्रों के पार समाधिमरण का निशाना लगाकर मोहराजा के अहंकार को तोड़ बताया।

उनका साहजिक निर्मल गुणवैभव स्मृतिपट से हटता नहीं है। बालमुनि हमारे दिल के टुकड़े थे। उन्हें आराधना करवाने का अवसर देव-गुरु कृपा से हमें प्राप्त हुआ।

पू. गच्छाधिपति **श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.**, पू. गुरुदेव **श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा.** तथा पू.आ.भ. **श्री रत्नसुंदरसूरीश्वरजी म.सा.** की कृपा एवं मार्गदर्शन से बालमुनि की अंतिम आराधना करवाने में हम सफल हुए।

बचपन से ही उनके संसारी माता-पिताश्री ने उत्तम संस्कारों का सिंचन किया था, जिससे हमें मौलिक गुणों के लिए ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी। पूर्व साधक की तरह थोड़ी टकोर करते ही वे तुरंत भूल को सुधार लेते थे। संयम जीवन की विकासयात्रा और समाधि पाने में सफल होने में गुरुभगवंतों का मार्गदर्शन एवं वात्सल्य जरुरी है, वैसे ही उत्तम सेवा भी जरुरी है। ऐसी उत्तम सेवा करनेवाले हमारे शिष्यवृंद को भी धन्यवाद है। खासकर **मुनि क्षमारत्नविजयजी** ने पिछले ११/२-२ वर्ष में अत्यंत स्नेह और होशियारीपूर्वक बालमुनि की सेवा करके उन्हें सतत प्रसन्न और समाधि में रखा। हॉस्पीटल जाना हो या डॉक्टर-वैद्य को मिलना हो या उनको स्वाध्याय करवाना हो, तब स्वयं के स्वाध्याय आदि कार्यों को गौण करके बालमुनि की प्रसन्नता और समाधि को ही स्वकार्य मानकर अद्भुत सेवा करके अपूर्व निर्जरा की।

ठीक उसी तरह **मुनि हिरण्यरत्नविजयजी** ने पिछले ४ सालों से छाया की तरह उनके साथ रहकर अद्भुत सेवा की। अंतिम महीने में महत्त्व के कार्यों को गौणकर बालमुनिमय बने, ऐसे **मुनि मौर्यरत्नविजयजी** ने भी बालमुनि की समाधि के लिए, समाधि वचनामृत, तत्त्वश्रवण करवाकर महत्त्व की भूमिका अदा की। तीनों मुनिवरों को अंतर के आशीर्वाद !...

वर्तमान समय में जब बच्चे mobile वगैरह के कारण अत्यंत नीचे उतर गये हैं, तब इसी काल में बालवय में एक बालमुनि कितना ऊपर चढ़ सकते हैं, उसका एक आदर्श जगत को मिले उस आशय से हमारे शिष्य मुनि क्षमारत्नविजयजी ने बालमुनि की जीवनयात्रा की सफर करवाती इस पुस्तक का आलेखन किया है। उन्होंने जो मेहनत की है वह काबिले तारीफ है। बालमुनि के प्रसंगों को पढ़कर सभी लोग गुणविकास को साधे और परंपरा से मोक्ष सुख को पाएँ, इसी अभिलाष से...

श्री जवाहरनगर जैन संघ,
२०७६, द्वि. आसो सुद १,
दि. १७/१०/२०२०

पुण्यरत्नसूरि
यशोरत्नसूरि

सहवास की सुवास...

समय का माप सूक्ष्म लेकिन उसका महत्त्व अमाप है...

अणु का परिमाण सूक्ष्म लेकिन उसकी शक्ति अपरिमित है...

पानी का मूल्य नहीवत् लेकिन उसकी महत्ता सर्वस्वतुल्य है...

हर पदार्थ, वस्तु या व्यक्ति की गरिमा उसके माप या वजन से नहीं बल्कि उसकी कार्यशक्ति से अंकित होती है । जीवन की सार्थकता भी मात्र आयु की दीर्घता या कार्यों की सिद्धि से नहीं बल्कि जीवन के परम तथ्य की उपलब्धि से अंकित होती है। जीवन भले छोटा हो और कार्य भले कम सिद्ध हो लेकिन अगर वैराग्य और संवेग की गहनता में डूबकी लग जाएँ तो छोटा-सा भी जीवन वरदान तुल्य है। ऐसा ही एक २० वर्ष का सफल जीवन जीनेवाले **बालमुनिराज श्री दानरत्नविजयजी म.सा.....**

कद में छोटे लेकिन महानता के शिखर को सर करनेवाले थे...

जीवन जिनका छोटा लेकिन जीवन के हार्द को हस्तगत करनेवाले थे...

साधना जिनकी सीमित परंतु समाधि को आत्मसात् करनेवाले थे...

उनकी ६ वर्ष की संयम साधना दौरान उनका सहवास मेरे लिए चिरस्मरणीय बन चुका है। इन ६ साल में उनके साथ रहते हुए...

स्वाध्याय करते हुए...

उनके उपचार करते हुए...

सेवा करते हुए...

उनके पवित्र व्यक्तित्व का जो अनुभव हुआ, उसे क्षमतानुसार इस पुस्तक में प्रस्तुत किया है।

२० साल की नाजुक उम्र में असाध्य रोग एवं मृत्यु का सामना करने में उन्होंने जो कल्पनातीत समाधि और समझ को बरकरार रखी, वह वाकई होश उड़ानेवाली थी ।

आत्मा की शक्ति अनंत है... शरीर का साम्राज्य सीमित है, इस बात को अनोखी रीति से प्रदर्शित करनेवाले बालमुनिराजश्री ने एक आदर्श खड़ा कर बताया ।

हमारी आँखों से वे इस तरह ओझल हुए कि उनका मीठा सहवास आज एक मधुर स्वप्न की तरह भासित होता है। हर एक सहवर्ती उनके गुणगौरव का बयान करने लगे तो ऐसी कई पुस्तकें भर जाएँ, इतनी स्मृतियों की भेंट उन्होंने हमें दी है।

वय और पर्याय में छोटे होने पर भी बड़े आदर्श हमें देकर गये है । समाधिमरण तो मात्र एक side effect था। उनका जीवन ही ऐसा समाधिमय था कि इस श्रेष्ठ उपलब्धि के कारण अंत समय में समाधि अपने आप खींची चली आई। उनके गुणगौरव के वर्णन द्वारा उनके स्नेही सहवास के ऋण से मुक्त होने का अल्प प्रयास हुआ है।

दोनों गुरुदेवश्री प.पू.आ.भ. **श्री पुण्यरत्नसूरीश्वरजी म.सा.** तथा प.पू.आ.भ. **श्री यशोरत्नसूरीश्वरजी म.सा.** ने महत्त्व के एवं मार्मिक मार्गदर्शन, सलाह देकर और लेख की क्षतियों को दूर करके पुस्तक को खरा रंग दिया है।

मेरे गुरुमहाराज पू. मुनिराज **श्री मौर्यरत्नविजयजी म.सा.** ने सचोट सूचन देकर क्षतियों को परिमार्जित करके एवं अपने अनुभव को लेख का आकार देकर संकलन को समृद्ध किया है।

गुरुदेवश्री के सौंपने से **सा. श्री राजरत्नाश्रीजी म.** की शिष्याएँ **सा. श्री लक्ष्यज्ञनिधिश्रीजी** एवं **सा. श्री विश्वज्ञनिधिश्रीजी** ने पुस्तक के बहुभाग का हिन्दी अनुवाद सुचारु रुप से किया, उनका मैं तहेदिल से आभार व्यक्त करता हूँ। हिन्दी अनुवाद करने के उपरांत संपूर्ण पुस्तक में सुंदर वाक्यप्रयोग एवं समृद्ध शब्द प्रयोगों से प्रस्तुति में निखार लाकर पुस्तक को मनोहर आकार दिया है।

उनके इस निःस्वार्थ परिश्रम का मैं ऋणी रहूँगा... खूब-खूब अनुमोदना ।

मुद्रक सुश्रावक **श्री हितेशभाई वडेचा** एवं **सुशीलभाई** को विशेष धन्यवाद है, जिन्होंने बड़ी खंत से इस पुस्तक का मुद्रण करके हमारे शब्दों को रंगीली रीति से प्रस्तुत किया है।

द्वि.आसो वदी १४
जवाहर नगर
(गोरेगांव)

मुनि क्षमारत्नविजय

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पेज नं.
१.	उन्होंने जो पाया, उसकी खुशी उन्हें जो खोया, उसका गम...	१
२.	किस्मत के करिश्में...	२
३.	साहेबजी ! पधारिये मेरे घर...	४
४.	हम सब दीक्षा लेंगे...	५
५.	आज मुझे उपवास करना है...	६
६.	एक आदर्श पिता...	७
७.	आराधना में आनंद का लक्ष्य...	८
८.	जवाब... लाजवाब !...	१०
९.	प्रभु पार्श्वनाथ का एकासना...	१३
१०.	पाये की साधना... साधना का पाया...	१४
११.	तर्क शक्ति सही... दुरुपयोग नहीं...	१५
१२.	उस दिन तुझे दीक्षा की अनुमति दूंगी !...	१७
१३.	इसीलिए तो दीक्षा ली है...	२०
१४.	सहज समझ...	२१
१५.	सरलता के साथ प्रज्ञा...	२२
१६.	गुरु की इच्छा ही मेरा जीवन...	२३
१७.	विवेक बुद्धि...	२४
१८.	निरहंकार...	२६
१९.	स्वाध्याय में विचक्षण...	२८
२०.	चंद्र की खिली चांदनी... और हुआ राहु का संग...	२९
२१.	सहवर्तीयों का प्रेम...	३१
२२.	निर्यामणा की Net Practice	३२
२३.	पश्चात्ताप का ताप...	३४
२४.	कृतज्ञता...	३५
२५.	अखेद...	३६
२६.	उत्तम साधु-भक्ति...	३७
२७.	अद्वितीय श्रवण रुचि...	३८
२८.	स्वजन धूनन...	४०
२९.	कर्म की विचित्रता...	४१
३०.	गुरु बहुमान...	४२
३१.	आधी रात में भी लक्ष्य स्थिर...	४३
३२.	संवेदनशीलता...	४४
३३.	मुंबई में रोगनिदान में निष्फलता...	४६
३४.	शल्योद्धार...	४७
३५.	युद्ध की तैयारी शुरु...	४९
३६.	''मेराए ठिओ धम्मो''	५०
३७.	Lock Down में खुल जा सिम-सिम...	५२
३८.	आर्द्रचित्त...	५४
३९.	एक पाप के उदय के बीच अनेक पुण्य का उदय...	५६
४०.	गलती मेरी है...	५९
४१.	समाधि की सुरक्षा...	६०
४२.	सौभाग्य के साथ सद्‌गुण...	६२
४३.	मुझे कुछ सुनना है...	६६
४४.	अभी तो बहुत कुछ बाकी है...	६७
४५.	अकोउहल्ले जे स भिक्खू	६८
४६.	दुष्कृत गर्हा, सुकृत अनुमोदना...	६९
४७.	बालमुनि ने आखरी बार...	७०
४८.	एगोऽहं नत्थि मे कोइ	७३
४९.	औरों को भी समाधि...	७४
५०.	मैं गुरुदेव को पहचान नहीं सका !...	७६
५१.	पहेली निर्यामणा...	७९
५२.	साहेबजी ! अंतिम निर्णय आपका...	८१
५३.	अंतिम प्रायश्चित्त	८२
५४.	राधावेध साधना है ?	८६
५५.	रात्रि जागरण	८७
५६.	आत्मा दिखती है... क्या ?	८९
५७.	जब प्राण तन से निकले...	९०
५८.	एक सच बात कहूं ?...	९७
५९.	नहीं महाराज साहेब ! आपकी बात गलत है...	९९
६०.	समाधि के आधार स्तंभ...	१०१
६१.	श्रावकों की श्रेष्ठ वैयावच्च...	१०३
६२.	हृदयोद्‌गार...	१०६
६३.	मेरे हृदय सरोवर में विराजित सुंदर श्वेतकमल...	११३
६४.	आदर्श 'संयम' जीवन	११७
६५.	विमल-समाधि प्रार्थना	११८
६६.	दानगुण वंदनावली	११९
६७.	साधना की पुण्यकथा	१२०
६८.	समाधि की यशोगाथा	१२१

परिचय परिमल

नाम	:-	मुनिराज श्री दानरत्नविजयजी म.सा.
जन्म	:-	आसो सुदी १२, वि.सं. २०५५, दि. २२/१०/१९९९, सुवई (कच्छ)
माता-पिता	:-	श्रीमती दक्षाबहन, हितेशभाई गांधी
संसारी नाम	:-	संयमकुमार
निवासी	:-	नवसारी (रापर-कच्छ)
दीक्षा	:-	महा सुदी १३, वि.सं. २०७०, नवसारी
दीक्षादाता	:-	प.पू.आ.भ. श्री पुण्यरत्नसूरीश्वरजी म.सा.
गुरुदेव	:-	प.पू.आ.भ. श्री यशोरत्नसूरीश्वरजी म.सा.
विशिष्ट गुण	:-	गुरु समर्पण, प्रज्ञापनीयता, विनय-विवेक, कृतज्ञता, सरलता, निर्दंभता, देव-गुरु भक्ति, पापभीरुता, तत्त्वशुश्रुषा, गांभीर्य, दाक्षिण्य, उपशम, नम्रता, सत्त्व, सहिष्णुता, गुणदृष्टि, संवेग आदि
विशिष्ट उपलब्धि	:-	गुरुदेव सहित सभी के ह्रदय में वास, असाध्य रोग में अबाध्य प्रसन्नता
विशिष्ट अध्ययन	:-	न्याय-सामान्य निरुक्ति आदि, योगदृष्टि समुच्चय (बहुभाग) पिंड विशुद्धि, पिंड निर्युक्ति, पंचवस्तुक (बहुभाग) आदि
विद्यागुरु	:-	पू.आ. श्री पुण्यरत्नसूरिजी म.सा., पू.आ. श्री यशोरत्नसूरिजी म.सा. पं. श्री धर्मरत्नविजयजी म.सा., पं. स्थितप्रज्ञविजयजी म.सा., मुनि यशरत्नविजयजी म.सा., मुनि कुंथुरत्नविजयजी म.सा., मुनि मौर्यरत्नविजयजी म.सा., मुनि हिरण्यरत्नविजयजी म.सा. मुनि क्षमारत्नविजयजी म.सा., पंडितश्री संतोषभाई शास्त्री (सूरत)
समाधि	:-	आषाढ सुदी ५, सं. २०७६, दि. २६.६.२०२०, दोपहर २.३० बजे, जवाहरनगर, गोरेगांव.

१

उन्होंने जो पाया, **उसकी खुशी**
उन्हें जो खोया, **उसका गम...**

समय के प्रवाह में बह जानेवाली कई घटनाएँ और व्यक्ति ऐसे होते हैं कि जो अतीत के वासी होते हुए भी वर्तमान को महकता रखते हैं।

बारिश का निर्मल जल तो मिट्टी में मिलने के बाद ही सुगंध फैलाता है, परन्तु निर्मल जीव तो मिट्टी में मिलने से पहले भी सुगंध फैलाते हैं और बाद में भी...

ऐसे ही एक उत्तम बाल मुनिराज श्री दानरत्नविजयजी... जो जीवनकाल में अनुकरणीय थे और जीवन के पश्चात् चिरस्मरणीय हुए।

परम कृपालु परमात्मा का शासन जयवंत है कि जहाँ अल्पवय एवं अल्प पर्यायवाले बालमुनि भी सभी के लिए आदरणीय हैं।

याद आ रहे हैं खंधक आचार्य के बालमुनि, शय्यंभव आचार्य के बालमुनि मनक मुनि। जिस तरह इन्होंने अपने गुरुदेवश्री की शिक्षा प्राप्त कर अंत समय में उनके श्री मुख से निर्यामणा की भव्य आराधना करके सद्गति को साध लिया, ठीक उसी तरह बाल मुनिराज श्री दानरत्नविजयजी ने भी अपने गुरुदेव **आ. श्री पुण्यरत्नसूरिजी म.सा.** तथा **आ. श्री यशोरत्नसूरिजी म.सा.** की शिक्षा प्राप्त करके उनके मुखारविंद से निर्यामणा की भव्य आराधना करके सद्गति को जीत बताई।

इस बाल पराक्रमी की विजय गाथा आनंद तथा दुःख दोनों का अनुभव कराये ऐसी है।

**'उन्होंने जो पाया, उसकी खुशी,
उन्हें जो खोया, उसका गम...'**

चलो! खुशी और गम का अनुभव करानेवाली उस दिव्यात्मा की जीवन यात्रा के सफर में...

२

किस्मत के करिश्में...

सूर्य के प्रताप से सकल विश्व प्रकाशित होता है, यह बात सही है, परन्तु जगत का पुण्य है इसलिये ही तो सूर्य तपता है, यह बात भी कहाँ गलत है ?

पुण्य ऐसी चीज है जो स्वयं के स्वामी की सेवा के लिए पत्थर को मोम और सर्प को पुष्पमाला में परिवर्तित कर देती है।

मुनि दानरत्नविजयजी भी ऐसे ही किसी अपूर्व पुण्य के स्वामी थे, जिसके कारण उनके जन्म से पूर्व ही उनके भाग्योदय की व्यवस्था होती गई।

रापर (कच्छ) निवासी मातुश्री नंदुबहन चमनलाल गांधी परिवार के दो भाई राजेशभाई, हितेशभाई का परिवार नवसारी शहर में निवास कर रहा था। २० वर्ष पहले की बात है। दीक्षा दानेश्वरी **प.पू.आ.भ. श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा.** के शिष्य **प.पू.पं. पुण्यरत्नविजयजी म.सा.** तथा **प.पू.पं. यशोरत्नविजयजी म.सा.** का चातुर्मास श्री आदिनाथ जैन संघ नवसारी में हुआ। पर्युषण पर्व के बाद एक बार **हितेशभाई गांधी** सामायिक करने उपाश्रय में आये।

सामान्य वार्तालाप से गुरुभगवंत को ज्ञात हुआ कि कभी-कभी सामायिक तो करते हैं लेकिन व्यवसाय के कारण जिनवाणी श्रवण के लिए समय नहीं मिलता। गुरुभगवंत की प्रेरणा स्वीकार करके उन्होंने दूसरे दिन से प्रवचन में ही सामायिक करने का निश्चय किया।

अब तो प्रतिदिन प्रातः सामायिक के साथ जिनवाणी की जोड़ी जम गई। गुरुदेव की अनमोल वाणी का रंग ऐसा चढ़ा कि हितेशभाई को जीवन में अमूल्य वस्तु की प्राप्ति का अनुभव होने लगा। चंद दिनों में ही हृदय परिवर्तन हो गया। उनकी समझ को सही दिशा मिली। जीवन में विविध आराधनाओं ने प्रवेश किया। इसी सिलसिले में आसोज माह की ओली के पवित्र दिन आए। उनकी श्राविका श्रीमती दक्षा बहन गर्भवती होने से सुवई (कच्छ) स्वयं के पीहर में थी। प्रसूति का समय नज़दीक जानकर आसोज शुक्ल १३ के दिन उन्हें Hospital ले जाने की तैयारी की लेकिन Hospital जाते समय रास्ते में गाड़ी में ही उन्होंने प्रथम पुत्र को जन्म दिया। दुनिया को निहारने उत्साहित बना यह नवजात शिशु यानि मुनि दानरत्नविजयजी का जीव।

क्या यह घटना कोई संकेत के रुप में थी ? कि ''मेहनत पूर्ण हो उसके पूर्व ही कार्य की सिद्धि होगी।''

जिससे साधना संपूर्ण होने से पहले ही उन्हें समाधि सिद्ध हुई।

दीर्घ आयुष्य की फलश्रुति मात्र २० वर्ष में ही प्राप्त हो गयी।

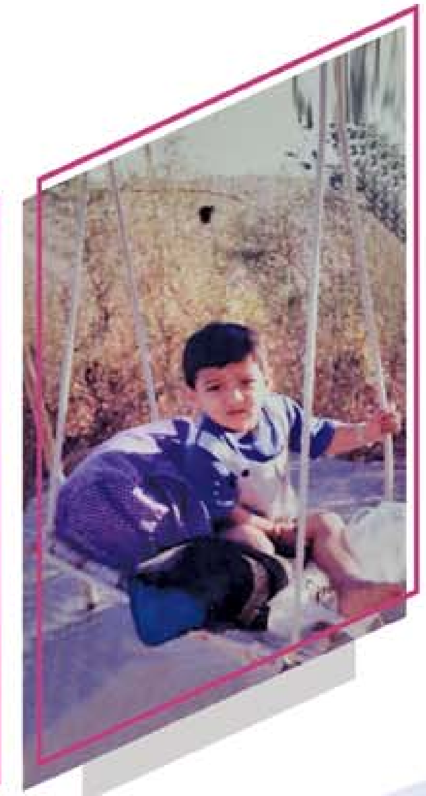

३ साहेबजी ! पधारिये मेरे घर...

तेजस्वी बालक की सौम्य मुखाकृति देखकर परिवारजनों के आनंद की सीमा न रही। सर्वप्रथम यह शुभ समाचार हितेशभाई को देने में आये।

हर्ष के साथ हितेशभाई उपाश्रय की तरफ दौड़े। शायद कोई सामान्य व्यक्ति होता तो किसी मिठाई की दुकान तरफ दौड़ता, परन्तु ये तो ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने जिनशासन के स्वाद को चखा था।

लगभग दोपहर के १२ बजे का समय होगा, गुरु भगवंत गोचरी की तैयारी कर रहे थे कि अचानक हितेशभाई ने उपाश्रय में प्रवेश किया।

हर्षान्वित होकर गुरुभगवंत से विनंति की 'साहेबजी ! पधारो मेरे घर, पगलिये करने पधारो।'

''पगलिये करने ? अभी १२ बजे ! क्यों ?'' गुरु भगवंत ने प्रश्न किया।

''साहेबजी ! कच्छ में मेरे पुत्र का जन्म हुआ है, इस निमित्त से पगलिये किजीये साहेब !'' गुरुदेव ने पुनः प्रश्न किया ''अरे ! जन्म कच्छ में हुआ है तो यहाँ पगलिये किसलिए ?''

इस प्रश्न का जवाब हितेशभाई नहीं किन्तु अंतर्मन में बसी प्रभु की वाणी देती है !

''साहेबजी ! अगर आप आज घर में पगलिये करेंगे तो मैं मेरे पुत्र से कह सकूंगा कि जब तुम्हारा जन्म हुआ था, तब अपने घर में साधु भगवंत के पगलिये हुए थे, इसलिए अब तुम्हें भी साधु ही बनना है।''

जवाब सुनकर गुरुभगवंत तुरंत तैयार हुए और हितेशभाई के साथ ही उनके घर पगलिये करने पधारे।

जिस तरह सूर्योदय के पूर्व ही आसमान में सूर्य की लालिमा छा जाती है, उसी तरह मुनि श्री दानरत्नविजयजी के जन्म से पूर्व ही उनके भाग्य के अंकुर फूटने लगे थे।

आज संतान के जन्म से पूर्व ही उसके लिए अच्छी से अच्छी School में Admission के सपने देखे जाते हैं। कोई भी माता-पिता पुत्र का जन्म होते ही मोह के परदे पर पुत्रवधू एवं अपने बुढ़ापे की सेवा के सपने सजा लेते हैं। लेकिन ये पिता विचार कर रहे हैं कि एक जीव संसार समुद्र में बहते-बहते भाग्य से मनुष्य भव में मेरे कुल में आया है तो बनती कोशिश ऐसा कुछ करूं कि उस आत्मा का कल्याण हो !

धन्यवाद है ! शासन के मर्म को समझनेवाले ऐसे पिता को !

४ हम सब दीक्षा लेंगे...

मुझे मेरे पुत्र को दुःख के मार्ग पर नहीं बल्कि परम सुख के मार्ग पर भेजना है। संसार चक्र में भटकते हुए यह जीव मेरे सहारे आया है। अब इसके भविष्य को संवारना मेरा कर्तव्य है। इसलिए इस जीव को मुझे विरति के मार्ग पर ही भेजना है। ऐसी उत्तम भावना के साथ हितेशभाई ने बालक का नाम भी **'संयम'** रखा, जिससे क्षण मात्र भी वह स्वयं के लक्ष्य को भूल न जाये।

जब दक्षाबहन बालक सहित नवसारी आये तब हितेशभाई ने संयम को **पं. पुण्यरत्नविजयजी म.सा.** की गोद में वोहराया। बालक के अहोभाग्य का क्या कहना ? जीवन के प्रारंभ में जो गोद मिली अंत तक वही सौभाग्य कायम रहा।

धीरे-धीरे पिता के स्वप्न सोलह श्रृंगार सजने लगे। जिनभक्ति, जयणा, विनय, विरति आदि सभी संस्कार बालक **''संयम''** के व्यक्तित्व को गढ़ने लगे। इस जीव की योग्यता भी ऐसी उत्तम थी कि जो कोई भी शिक्षा दी जाए, उन सभी शिक्षाओं को सरलता से स्वीकार कर आचरण में उतार लेता था।

मेवाड़ देशोद्धारक प.पू.आ.भ. **श्री जितेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.** का चातुर्मास नवसारी में था। उस समय पिताजी के साथ वंदन करने आये हुए ३ वर्ष के बालक संयम को गुरुभगवंत ने सहज ही पूछा - ''संयम ! दीक्षा कौन लेगा ?'' संयम ने अपनी सरल, मीठी, मोहक वाणी में प्रत्युत्तर दिया ''मैं दीक्षा लूंगा, मम्मी भी दीक्षा लेगी, पापा भी दीक्षा लेंगे, हम सब दीक्षा लेंगे।''

निर्दोष बालक की प्यारभरी वाणी सुनकर सभी के मुख पर आनंद सभर स्मित छलक उठा।

यही है उत्तम संस्कारों का गहरा असर कि एक छोटा बच्चा भी भौतिक सुख और रागभरी दुनिया को छोड़ने के तथा त्याग की दुनिया को अपनाने के अरमान संजोता है।

५ आज मुझे उपवास करना है...

माता-पिता ने अत्यंत लाड़ प्यार से संयम और उसके छोटे भाई यश का संस्करण किया। School के लिए तो कई माँ-बाप Tution रखते हैं लेकिन पाठशाला जाने के उपरांत हितेशभाई ने बच्चों के लिए धार्मिक Tution की व्यवस्था की जिससे घर में भी धार्मिक अध्ययन जारी रहे।

बच्चों को अष्टप्रकारी पूजा के लिए ले जाना, बाजार के चटाकेदार अभक्ष्य खाद्य पदार्थ घर पर नहीं लाना और बच्चों को वह खाने की इच्छा न हो, खराब मित्रों की संगति न लगे, ऐसी समझ उनको देने का संपूर्ण ध्यान उन्होंने रखा।

एक बार हितेशभाई को ध्यान आया की बच्चे रोज T.V. देखते देखते ही भोजन करते हैं। उन्हें यह बात जरा भी नहीं जंची। इसलिए बच्चों के School जाने के बाद Building की Terrace पर जाकर T.V. को पीछे रही कचरा पेटी में फेंक दिया और इस T.V. का दोबारा उपयोग न हो इसलिए पहले ही उन्होंने T.V. का काँच फोड़ दिया था। यह था बच्चों को उन्मार्ग से बचाने के लिए पिता का सच्चा प्रेम।

एक दिन सुबह संयम को School के लिए जगाया। पर उस दिन उसे School जाने का जरा भी Mood नहीं था, इसलिए उसने कहा - ''पापा आज मुझे School नहीं जाना।'' कह तो दिया पर जब पिता ने कारण पूछा तब सोचा कि जो सही जवाब दिया तो दाल नहीं गलेगी। इसलिए पिता के धर्मप्रेम का सहारा लिया और कहा - ''आज मुझे उपवास करना है।'' संयम को अंदाजा था कि पिताजी को धर्म इतना प्रिय है कि School नहीं जाने की Permission तो अवश्य मिल ही जाएगी। पिताजी भी समझ गए कि इसे उपवास करने की भावना तो नहीं है पर सिर्फ School नहीं जाने के लिए तरकीब अपनाई है।

फिर भी पिता ने विचार किया कि School को गौण करके भी जो धर्म संस्कार पड़ते हों तो मुझे मंजूर है। पिता उसे उपवास का पच्चक्खाण करवाकर मध्याह्न में अष्टप्रकारी पूजा के लिए मंदिर ले गए। सुबह तक तो School नहीं जाने का खूब आनंद था, पर दोपहर में उसे ध्यान आया कि School नहीं जाने के लिए उपवास तो कर लिया पर यह तो सोचा ही नहीं कि जब भूख लगेगी तब क्या हालत होगी ?

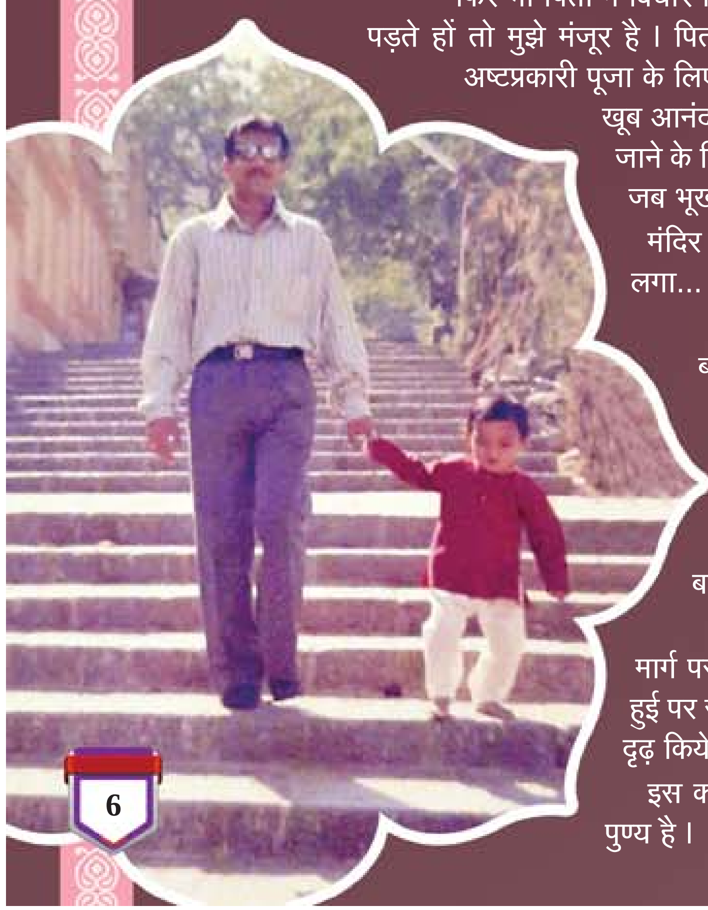

मंदिर जाते समय जो भी विचार आये वे सब पिता से कहने लगा...

''पप्पा ! कल मम्मी से कहना कि बाजरा का सोगरा बनाये।''

''हाँ बेटा...''

''पप्पा ! उसके साथ कढ़ी भी बनाने के लिए कहना।''

''हाँ बेटा, ठीक है।''

अंदर ही अंदर हँस रहे पिता समझ गये कि ये सब बातें मुश्किल लगा हुआ उपवास बोल रहा है।

फिर भी इस तरह से उपवास करवाकर उसे तप के मार्ग पर ढालने का उन्हें अपार आनंद था। बेटे को तकलीफ हुई पर स्वयं नहीं डिगे। हिम्मत देकर तप पूर्ण करने के संस्कार दृढ़ किये।

इस काल में ऐसे दृढ़धर्मी पिता की प्राप्ति भी एक अद्वितीय पुण्य है।

६ एक आदर्श पिता...

हितेशभाई वारंवार दोनों गुरुदेव पू.आ.भ. **श्री पुण्यरत्नसूरीश्वरजी म.सा.** तथा पू.आ.भ. **श्री यशोरत्नसूरीश्वरजी म.सा.** को वंदन करने जाते और पुत्र की परवरिश के संबंध में मार्गदर्शन प्राप्त करते। अवसर मिलने पर पर्युषण की आराधना करने सपरिवार गुरुभगवंत की निश्रा में जाते। इसके अतिरिक्त School के Vacation में पुत्रों के साथ माता-पिता भी १०-१५ दिन गुरुभगवंत की निश्रा में रहते।

इस प्रकार गुरु भगवंत के साथ पुत्र का मीठा संबंध बंधने के बाद संयम की मात्र १२ वर्ष की छोटी उम्र में एक साहसिक निर्णय लिया। हाँ ! 6th standard की exam के बाद School छुड़वाकर गुरुभगवंत के पास रखने का निर्णय !

ऐसे तो यह कार्य सरल नहीं था। कई संबंधी परिचितों का विरोध और सबसे महत्वपूर्ण बात तो अपनी पत्नी को समझाना था। उन्हें पुत्र पर अपार स्नेह होने से न ले जाने का विरोध और प्रयास भी किये। लेकिन हितेशभाई की हिम्मत और समझदारी तो लाजवाब !! सभी को समझाकर, विरोध की परवाह किये बिना पुत्र के साथ जोधपुर में स्वयं एक माह रहे ताकि उसे अकेलापन महसूस न हो।

धर्म समझनेवाली माता को भी बाद में बहुत अफसोस हुआ कि ''मैंने गलत किया, ऐसे उत्तम मार्ग पर जाने का विरोध क्या करना ?'' और तुरंत फोन लगाकर हितेशभाई से माफी मांगी और गुरुदेव से प्रायश्चित लिया।

यही तो है पुण्य का खेल ! सारी व्यवस्था अपने आप हो गयी और प्रतिकूल परिस्थिति भी अनुकूल हो गयी।

७ आराधना में आनंद का लक्ष्य...

अब तक प्रत्येक परिस्थिति में संयम को कोई पुरुषार्थ नहीं करना पड़ा, लेकिन अब पुरुषार्थ करने की बारी मात्र संयम की ही थी, राग तोड़ने का पुरुषार्थ।

शुरुआत में बहुत बार ऐसा होता कि हितेशभाई साथ में होते हुए भी संयम एक तरफ अकेला बैठा रोये और बहुत पूछने पर कहे कि ''मम्मी की याद आ रही है।''

'लेकिन घर में तो तू School जाता है, तब कहाँ मम्मी साथ होती है ?'

'पर फिर तो मिल जाती है ना ?'

यही समय था प्यारी मम्मी के स्नेह को भूलने का। संयम को माँ के प्रति विशेष लगाव होने से यह काम उसके लिए कठिन था। पर समय बीतते वह भी शक्य हुआ।

संयम अब गुरुदेव के पास अकेले रहना सीख जाये, इसलिये किसी काम के बहाने हितेशभाई नवसारी गये। शुरुआत के २ दिन वह गमगीन रहा, लेकिन फिर स्वस्थ हो गया।

पहले ही सप्ताह में उसे बुखार आया। गुरुदेव ने हमें कहा, 'संयम को बुखार आया है, अकेला है, सेवा के लिए कोई गृहस्थ भी नहीं है, शायद ढीला पड़ गया होगा, प्रतिक्रमण के बाद उसे थोड़ा fresh कर देना।'

प्रतिक्रमण के बाद गुरुदेव सहित हम २-३ साधु संयम के पास गए। गद्दी बिछाकर संयम लेटा हुआ था।

''संयम ! कैसा है ?''

''महाराज साहेब ! आप मेरी तबियत पूछ रहे हैं ?''

''हाँ तुझे बुखार है ना ?''

''पर आप तो मुनि हैं...''

''तू भी तो बाल श्रावक है'' जवाब सुनकर संयम थोड़ा मुस्कुराया। थोड़ी बात-चीत शुरु हुई, थोड़े Jokes सुनाये। कुछ ही देर में तो सभी मुनि भगवंत इकट्ठे हो गए।

उसके पैर तो दबा नहीं सकते थे, पर बातें और कथाएँ सुनाकर उसका मन स्वस्थ रखने का पूरा प्रयास किया।

बुखार था, शरीर कमजोर था फिर भी चेहरे की मुस्कान न बदली, प्रसन्नता कम न हुई। उसका कहानी सुनने का रस तो जैसा का वैसा ही था as it is...

उस दिन पहली बार संयम के जीवन में देखने मिला कि तन में प्रतिकूलता होते हुए भी श्रवणरुचि के कारण चित्त प्रसन्न था।

यह छोटा सा बीज आगे जाकर समाधिमरण के वटवृक्ष का रुप लेगा, ऐसी तो कल्पना ही नहीं थी।

अब गुरुभगवंत की निश्रा में पिता के बिना अकेले रहना भी संयम को अच्छा लगने लगा।

स्वाध्याय एवं विरति के अभ्यास से उसका मन ज्यादा प्रफुल्लित रहने लगा।

जीव की योग्यता कुछ ऐसी थी कि सहजता से उसकी गति सही मार्ग पर ही थी। आराधना में गिनती नहीं पर आनंद का ही लक्ष्य था।

राजस्थान के ब्राह्मणवाड़ा तीर्थ में ध्वजारोहण का प्रसंग था। दीक्षार्थी अंकुश के साथ संयम बावन जिनालय की देहरीओं की ध्वजा चढ़ाने लगा। अंकुश की उम्र बड़ी थी और मन में स्पर्धा का भाव। वह जल्दी-जल्दी ध्वजा चढ़ाने लगा ताकि ज्यादा चढ़ा सके। प्रसंग संपूर्ण होने के बाद संयम और अंकुश भोजन करने बैठे। तब उसने कहा - ''भैया ! आज तो कितना आनंद आया ना ? मजा आ गया।''

अंकुश सोच में पड़ गया कि मैं तो ज्यादा ध्वजा चढ़ाने की गिनती में ही रह गया और यह तो कम ध्वजा चढ़ाकर भी आनंद में है।

संयम का जीव ही ऐसा उच्च कोटि का था कि उसे शुरुआत से ही स्वयं की आराधना की गिनती नहीं, बल्कि आनंद में ही ज्यादा दिलचस्पी रही।

उसका लक्ष्य Quantity नहीं Quality पर था।

८ जवाब... लाजवाब !...

बाल्यवय, गुरुकुलवास, सौम्य मुखाकृति, तेजस्वी मुखमंडल, चेहरे से छलकती निर्दोषता, यह सभी तत्व मिलकर देखनेवाले पर ऐसा जादू कर देते कि नजर स्थिर होने के साथ-साथ हृदय में संयम की छवि भी स्थिर हो जाती। इतना होने के बाद उनकी वाणी का एक-एक शब्द सुननेवाले का हृदय सहजता से चुरा लेता था।

यह तो मात्र आकर्षक आकृति एवं मधुर वाणी का कमाल था, उसमें बुद्धि की कुशाग्रता जब जुटती तब तो एक वार्तालाप भी जीवनभर चिरस्मरणीय बन जाता और इसका साक्षात् अनुभव करनेवाले अनेक व्यक्ति हैं जो आज भी भूतकाल की उन बातों को भूल नहीं सके।

सबसे पहली बार जब संयम School छोड़कर गुरुदेवश्री की निश्रा में रहने आया था, तब ३-४ दिन के बाद गरम पानी के भरे घड़े के साथ साध्वीजी म.सा. ने अपने उपाश्रय के बाहर से उसे जाते हुए देखा। १२ वर्ष का तेजस्वी बालक, पानी का घड़ा और वेशभूषा देखकर वे समझ गये कि कोई बालक आचार्य भगवंत के पास रहने आया है। संयम ने झुककर साध्वीजी भगवंत को 'मत्थएण वंदामि' किया। बालक इतना मनोहर लगा कि बड़े साध्वीजी श्री अमितरेखाश्रीजी म.सा. को उससे पूछने का मन हो गया - 'तुझे दीक्षा लेने की भावना है ?'

प्रश्न सुनकर वह पहले तो जरा अचंभित हुआ फिर सहजता से निर्दोष हास्य के साथ उसने जवाब दिया - ''पप्पा मुझे इस भाव के साथ ही गुरुदेव के पास लेकर आए हैं और मुझे भी भाव तो जगाने ही हैं, पर फिर तो गुरुदेवश्री को मुझमें योग्यता दिखाई देगी तो ही दीक्षा मिलेगी ना ? दीक्षा सभी को कहाँ नसीब होती है... उसके लिए तो बहुत पुरुषार्थ करना पड़ता है ना ? बस ! गुरु भगवंत और मम्मी-पापा के आशीर्वाद से सब हो जाएगा। फिर मैं भी दीक्षा लूंगा !'' छोटी-सी हँसने-खेलने की उम्र में इतनी समझ... ऐसी परिणति... गजब गजब गजब... सभी साध्वीजी भगवंत अवाक् रह गए... बड़े साध्वीजी भगवंत

के मुख से सहज ही उद्गार निकले - ''यह खूब आराधक एवं प्रभावशाली संयमी बनेगा।''

अपने इन उद्गारों को भविष्य में साक्षात होने का अनुभव उन साध्वीजी भगवंत ने किया।

जोधपुर चातुर्मास में पर्युषण आए। पिता हितेशभाई ने चौसठ प्रहरी पौषध करने की योजना बनाई। पिताजी को कभी नकार किया ही नहीं था, इसलिए योजना सहर्ष स्वीकार की। पर माता दक्षाबहन को पुत्र पर अत्यंत स्नेह था। उन्होंने पूछा - ''पप्पा ने भले ही योजना बनाई है पर तुझसे होगा ?'' आदर्श पुत्र के गुणों से समृद्ध संयम ने पिता की इच्छा को स्वीकारते हुए कहा - ''हाँ ! हाँ ! जरुर होगा, मेरी भी भावना है।'' माता ने पूछा - ''तो ठीक है और कोई विशेष जरुरत हो तो बता।'' संयम ने कहा - ''मम्मी ! यहाँ मच्छर का बहुत उपद्रव है, रोज तो कुर्ता पहनकर सो जाता हूँ, इसलिए खास तकलीफ नहीं होती पर पौषध में तो सीने पर दुपट्टा होगा, वह तो रात में कभी भी खिसक सकता है, इसके लिए कोई उपाय हो तो कीजिये।''

तुरंत ही दक्षाबहन ने Medical में से Mosquito Repellent (जिससे मच्छर न काटें) लाकर दिया।

पर्युषण तो स्वस्थतापूर्वक, चौसठ प्रहरी पौषध में बीते। पर एक बात की जानकारी देता हूँ - जितने प्यार से मम्मी ने Mosquito Repellent दिया था, उतने ही प्यार से पापा ने उसे गायब किया था। ''मेरा बेटा Exam के एक भी Question में Fail नहीं होना चाहिए।'' इस पिता ने कमाल कर दिया।

पर इससे भी बड़ा कमाल तो संयम ने किया - आठों दिन एकासने में माता मिलने आई पर Cream गायब होने की complaint तो दूर उसका जिक्र तक नहीं किया। बाद में पूछने पर उसने जवाब दिया, **''प्रभु जब मेरी परीक्षा कर रहे हों तो उसमें Fail थोड़ी होना है, वैसे भी मच्छरों से मैं कहाँ मर जानेवाला था ?** थोड़ा - थोड़ा सहन करना सीखूंगा, तो ही आगे बढ़ पाऊंगा ना ?'' जवाब सुनकर सब स्तब्ध हो गए कि इस उम्र में ऐसी विचारधारा कैसे आयी ?

---

१४ कि.मी. का विहार करके हम हरजी नाम के राजस्थान के एक गाँव में पहुँचे। २ मंदिरों के दर्शन किये। गाँव में घर कम थे और उस दिन साध्वीजी भगवंत भी १४ ठाणा विहार करके वहाँ पधारे थे। बड़े गुरुदेवश्री ने परिस्थिति देखकर गोचरी की निर्दोषता को ध्यान में रखते हुए ४ कि.मी. विहार करके आगे थाँवला गाँव में पहुँचने का निर्णय किया।

विहार के लिए घड़े में पानी भरते संयम को सा. श्री दीपेशरेखाश्रीजी ने कहा - ''संयम ! तू नवकारसी तो कर ले, आगे लंबा चलना है और १०.३० तो बज ही गये हैं।''

ना म.सा. ! आज आठम है इसलिए मुझे एकासना है, नवकारसी नहीं।

१४ कि.मी. चलकर आया, १०.३० बज गए हैं, ४ कि.मी. आगे चलना है, १३ वर्ष की उम्र, हाथ में पानी का घड़ा, शरीर पर उपधि बांधी है और आगे जाकर एकासना... यह सब विचार करके साध्वीजी भगवंत ने उससे कहा -

''तू यहीं रुक जा। यहाँ भोजनशाला है, एकासना करके फिर गाड़ी में पहुँच जाना, वहाँ भोजनशाला तो नहीं पर जैनों के घर भी नहीं हैं।''

बात सुनकर संयम ने उनसे प्रश्न किया -

''म.सा. ! दीक्षा के बाद लंबा विहार आएगा तो मुझे गाड़ी में भेजेंगे ?

और दीक्षा के बाद आप मुझे जैनों की ही गोचरी वपराएंगे ? गुरुदेव जैसे वापरेंगे, मैं भी वैसे खा लूंगा; पर मैं उनसे अलग तो नहीं होऊंगा।''

यह जवाब सुनकर तो साध्वीजी भगवंत आश्चर्यचकित हो गए कि इतना छोटा होते हुए भी कितनी खुमारी के साथ जवाब दे रहा है। सहनशीलता के अच्छे संस्कारों से परिपक्व हुआ है।

ऐसे जवाब सिर्फ सामनेवाले को Impress करने के लिए दिये हों ऐसा नहीं है। बुद्धि उनके लिए मात्र सहायक बल थी। उनकी वाणी का उद्‌गम स्थल हृदय था। जिन भावों का उन्हें स्पर्श हो वही वाणी में होते थे, ऐसा हमारा नित्य अनुभव रहा है।

दीक्षा के ५ वर्ष पश्चात् जब स्वास्थ्य अत्यंत नाजुक हुआ और अनेक उपचारों के बाद भी कोई सुधार नहीं आया, तब एक मनोचिकित्सक ने उनके साथ मुलाकात की। लगभग २ घंटे एकांत में बातचीत करने के बाद उसने अभिप्राय दिया - ''बहुत ही sharp mind है, but very true very true... कुछ भी छुपाने की आदत नहीं है, जैसा मन है वैसा ही बोलना।'' यह मुहर तो Doctor ने लगायी बाकी हम तो शुरुआत से ही उनके स्वभाव से परिचित थे। उम्र और समझ जैसे जैसे बढ़ती गयी वैसे वैसे जीवन के तथ्यों को वे समझने लगे। उनके उत्तरों से ऐसा प्रतीत होता था कि जीवन के सही लक्ष्य पर उन्होंने निशाना ताक दिया था।

घर में, मुमुक्षु अवस्था में और अंत में संयम जीवन में हर अवस्था में उन्होंने अपने लक्ष्य को संभालकर रखा था। मुझे क्या करना है ? इस विषय में वे एकदम Crystal clear थे। इसी संदर्भ में दीक्षा के ५ वर्ष पश्चात् जब शरीर रोगग्रस्त हुआ, तब का एक प्रसंग याद आता है -

सूरत के उमरा जैन संघ में हम रुके हुए थे। उनकी उम्र १९ वर्ष थी। स्वास्थ्य लाभ के उपचार जारी थे। प्रवर्तिनी साध्वी श्री पुण्यरेखाश्रीजी म.सा. उन्हें वंदन करने आए। वंदन करके साता पूछने के बाद उन्हें प्रोत्साहित करते हुए कहा - ''आपके स्वास्थ्य के लिए हम सब 'आरुग्गबोहिलाभं' की प्रार्थना करते हैं।'' यह सुनते ही उन्होंने हँसते-हँसते जवाब दिया, **''यह प्रार्थना नहीं करोगे तो चलेगा पर 'समाहिवरमुत्तमं दिंतु' की प्रार्थना अवश्य कीजियेगा।''**

जवाब सुनकर तो सब स्तब्ध हो गए। साधना के लिए आरोग्य तो साधन है पर समाधि साध्य है।

आरोग्य नहीं होगा तो चलेगा लेकिन समाधि तो १००% चाहिए। इस उम्र में... इतने पर्याय में... ऐसी परिणति... ऐसी दृष्टि की स्पष्टता...। कमाल है !!

जीवन की प्रत्येक अवस्था में उनकी उम्र की अपेक्षा परिणति ५ वर्ष आगे गतिमान रही। उनके मनोगत भाव इतने उत्तम थे कि उसके अनुसार जो जवाब सुनने मिलते, वो सुनते ही सचमुच एहसास होता ''जवाब... लाजवाब...''

१ प्रभु पार्श्वनाथ का एकासना...

अब संयम इतना स्थिर हो गया कि विहारादि करते हुए वह न तो किसी प्रकार की शिकायत करता था और न ही किसी प्रकार के दुःख का अनुभव। हर पल आनंद में ही व्यतीत होता था।

वदी १० का दिन था, विहार करके हम नांदाणा तीर्थ (जिला-पाली) में पहुँचे थे। वैसे तो विहार की थकान संयम को थी ही और सुबह नवकारसी भी नहीं की थी क्योंकि आज तो उसे वदी १० यानि पार्श्वनाथ प्रभु का एकासना करना था। भोजनशाला के व्यवस्थापक ने उपाश्रय में आकर गोचरी के लिए विनंति की; गुरुभगवंतों ने तो मात्र पानी वहोरने की स्वीकृति दी। गोचरी तो गाँव के घरों में जाना था। इसलिए उनसे कहा कि 'यह दीक्षार्थी बालक है और आज उसे एकासना है। भाई ने तुरंत संयम से पूछा-''बेटा बोल क्या बनाना है ?''

यह चीज बना दो, ऐसा जवाब या Order तो कभी दिया ही नहीं था और इतने दिनों में भोजन करने जहाँ भी जाये वहाँ जो भी बना हो वही खाकर आ जाता था। उसने कहा - 'जो बनाओगे चलेगा !' बार-बार विनंति की 'नहीं बेटा बोल, जो कहो बन जाएगा।'

थकान के साथ जोरदार भूख लगी हुई थी पर Order तो कैसे देना ? आखिर बालक बुद्धि से उसने तरकीब अपनायी।

''हाँ अंकल ! आपके यहाँ आटा तो होगा ही।''

''हाँ ! है।''

''गुड भी होगा।''

''हाँ !''

''घी भी होगा।''

''हाँ !''

''बस ! तो फिर हिला दो।''

भले कितना भी पूछ रहे हो पर सीरा बनाने का आदेश तो कैसे दे सकता हूँ ? यह सुनते ही हम सभी को हँसी आ गई। एक तरफ संकोच और दूसरी तरफ भूख के द्वंद्व से विह्वल हुए बालक ने मस्त रास्ता ढूंढ निकाला।

उस वक्त तो हम सब हँसे थे, पर हमें कहाँ मालूम था कि ये छोटी-सी घटना वर्षों बाद भी याद आएगी क्योंकि ऐसा देखने का तो यह पहला ही मौका था। भोजन के पश्चात् आकर उससे संबंधित प्रशंसा या शिकायत तो संयम ने कभी की ही नहीं थी।

मेरे गुरुदेवश्री का मानना है कि ''भोजन व्यवस्था न हो ऐसे क्षेत्र में दीक्षार्थी को विहार करवाकर भोजन की प्रतिकूलता का अभ्यास जरुर करवाना चाहिए।''

एक बार एक गाँव में जैन का एक भी घर नहीं था और वैयावच्च के लिए कोई चौका भी चालू नहीं था। उस गाँव में विहार करके हम पहुँचे। वहाँ एक स्वामीनारायण के भक्त के घर संयम को भोजन के लिये भेजा। वहाँ से आने के बाद पूछने पर हमें पता चला कि उनके घर में प्याज-लहसुन तो नहीं खाते पर आज आलू की सब्जी बनायी थी। उसने लेशमात्र भी खेद किए बिना रोटी-दाल-चावल सहर्ष स्वीकार लिया।

सामान्यतया गृहस्थ रोटी-सब्जी का combination पसंद करते हैं, पर गृहस्थ जीवन की इस आदत को टालने में वह सफल हो गया।

मेवाड़ के गाँवों में विहार करते देखा कि कितने घरों में खाखरा तो होता ही नहीं था और नाश्ते में मेहमान की दूध-Biscuit से ही मेहमान नवाज़ी की जाती थी। वहाँ भी मुस्कुराते हुए वह कहता ''कोई बात नहीं महाराज साहेब ! उनके घर में सुबह सुबह रोटी बन रही थी तो दूध-रोटी से ही मैंने नवकारसी कर ली है।''

१० पाये की साधना... साधना का पाया...

पाली शहर में चातुर्मास हुआ। गुरुदेव ने विरति के अभ्यास के लिए विशेष प्रेरणा की। प्रेरणा को सहर्ष स्वीकार करके, अभ्यास के रुप में संयमकुमार ने कुल ३ महीने पौषध की आराधना की। पौषध चल रहे थे और **मुनि अममरत्नविजयजी** ने संयम को वर्धमान तप का पाया डालने की प्रेरणा की। वैसे तो उसे आयंबिल तप कठिन लगता था, पर प्रेरणा ऐसी जबर्दस्त थी कि सामूहिक वर्धमान तप का पाया डालने का समय नहीं होते हुए भी off season में पाया डालने के लिए वह तैयार हो गया और पौषध में ही पाये का शुभारंभ किया।

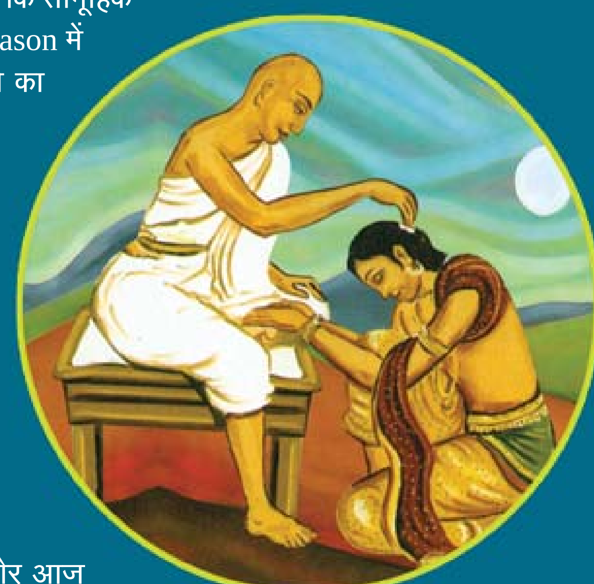

इस वर्धमान तप के पाये की भी उनकी एक विशेषता है। पहले ही उपवास के पारणे आयंबिल करना था, पर उसने उपवास के दिन ही अगले दिन पारणा करने का पक्का मन बना लिया था। थोड़ा समझाने पर भी वह टस से मस नहीं हुआ।

दूसरे दिन सूर्योदय हुआ और पौषध पारकर पारणा करने की तैयारी ही थी कि गुरुदेव ने संयम को बुलाया और बहुत प्रेम से पूछा -

''पारणा क्यों करना है ?''

''बहुत भूख लगी है।''

''आज एक आयंबिल कर ले, फिर कल तेरी मर्जी और आज आयंबिल जल्दी कर लेना, जिससे बहुत देर भूख सहन नहीं करनी पड़े।''

इस एक प्रेरणा का उसने समर्पण भाव से स्वीकार किया और संपूर्ण पाया पूरा हो गया।

जैसे धन्नाशाह ने राणकपुर तीर्थ की नींव में घी डालकर देपा शिल्पी को खर्च के लिए निश्चिंत किया वैसे ही संयम ने श्री वर्धमान तप के पाये में समर्पण रुपी घी डालकर साधना के विषय में गुरुदेव को निश्चिंत किया। यह समर्पण का पाया मजबूत था इसलिए समाधि का शिखर निश्चल टिका रहा।

११ तर्क शक्ति सही... दुरुपयोग नहीं...

राणकपुर तीर्थ के निर्माता धन्नाशाह पोरवाल के वंशज मीठालालजी संघवी की तरफ से उदयपुर से राणकपुर तीर्थ के छःरि पालक संघ के लिए पाली चातुर्मास के बाद हम विहार करके उदयपुर पहुँचे। दीक्षार्थी अंकुशभाई और संयम केशरीयाजी तीर्थ यात्रा करने गये। वहाँ पहुँचकर धर्मशाला में जाते हुए ज्ञात हुआ कि यहाँ कोई महाराज साहेब रुके हुए हैं। धर्मशाला में Room लेकर दोनों ने विचार किया ''यहाँ साधु भगवंत विराजित हैं तो वंदन कर आते हैं, फिर शाम का प्रतिक्रमण भी वहीं कर लेंगे।''

उपाश्रय में प्रवेश करके सभी साधु भगवंत को वंदन करके बड़े म.सा. के पास बैठें। पहले विहार दरमियान एक-दो बार इन साधु भगवंत से मिलना हुआ था, इसलिए सामान्य परिचय तो था ही। ऐसे तो वे महात्मा भिन्न पक्ष के अनुयायी थे और अपने पक्ष का प्रचार और श्रावकों को अपना अनुयायी बनाने के लिए वैसी बातें प्रस्तुत करने के कारण, राजस्थान के कई संघों में उनकी छवि उसी प्रकार की थी।

दोनों ने बड़े म.सा. के साथ थोड़ी औपचारिक बातें की। फिर म.सा. ने अपना Mission उठाया। ''तुम इस पक्ष में दीक्षा क्यों ले रहे हो ? यह गलत है, सत्य को पहचानो। भगवान ने जो दिन बताया है उसी दिन आराधना करनी चाहिए।'' अंकुशभाई जानते थे कि बात करने का कोई अर्थ नहीं, इसलिए बात को दबाते हुए उन्होंने कहा, ''आप सही होंगे लेकिन वे भी गलत तो नहीं ही हैं, सभी अपनी परंपरानुसार आचरण कर रहे हैं।''

''लेकिन यह पक्ष तो बाद में शुरु हुआ है, पहले तो हमारा पक्ष ही चलता था। यह सब नये दूषण घुस गये हैं।''

संयम को यह बात वाजिब न लगने से जोश में आकर लेकिन होश संभालकर वह बोला, ''म.सा.! पहले तो साधु गाँव के बाहर उद्यानों में रहते थे, जंगलों में रहते थे, तो फिर अब आप क्यों शहरों में हमारे साथ रुकते हो? गाँव से बाहर ही रहना चाहिये ना ?''

बालक का प्रत्युत्तर सुनकर वे अचंभित हुए लेकिन वर्षों से यही काम करने के कारण महाराजजी जवाब देने में माहिर थे। उन्होंने कहा - ''ये तो अभी के समय के हिसाब से परिवर्तन हो गया है।''

''तो इसमें परिवर्तन लाने में क्या तकलीफ है। द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के हिसाब से सभी में परिवर्तन करने की छूट दी ही हैं ना ? अपवाद की जगह अपवाद का स्वीकार ही करना होता है वहाँ अपनी बात खींचने की नहीं होती और पहले आपका पक्ष चलता था इसके विषय में मुझे कोई जानकारी नहीं है।''

जवाब तो जोरदार था, लेकिन महाराजजी अब छूटने का मौका ढूंढ रहे थे। अंकुशभाई खड़े होकर Room में जाने की तैयारी में थे, क्योंकि उन्हें पता था कि ये महाराजजी सिर्फ समझाने के लिये ही बोल रहे हैं, उन्हें समझना तो कुछ है नहीं इसलिए Time waste करने में सार नहीं और संयम से भी कहा कि चल ''अब Room में चलते हैं, लेकिन संयम यह सब सुनकर चुप न रह सका और जवाब सुने बिना जाने के लिए मन तैयार नहीं हुआ।''

अब महाराजजी बोले, ''आचारों में बदलाव करने की छूट दी है, सत्य में कुछ बदलाव नहीं किया जाता। जो दिन बताया है उस दिन आराधना कम ज्यादा करने की छूट है, लेकिन दूसरे दिन को उस दिन का नाम देकर आराधना नहीं की जाती। शास्त्र में सब लिखा है कहाँ परिवर्तन करना, कहाँ नहीं। शास्त्र के आधार पर सत्य समझना चाहिए।''

''अच्छा ! तो एक शास्त्र का नाम तो बताओ, जिसमें लिखा हो कि आपका पक्ष सच्चा है और ऐसा न करो तो झूठे कहलाओगे।''

यह Bouncer तो महाराजजी को बहुत ही भारी पड़ गया। ऐसी बात किसी शास्त्र में हो तो कहें ना? यह सवाल आज तक उन्हें किसी ने पूछा नहीं था, इसलिये जवाब ढूंढा हुआ नहीं था और फिर चुप तो कैसे रह सकते हैं, इसलिए कोई नया तर्क सोचने लगे।

बात आगे चलाते हुए संयम ने कहा, ''आप शास्त्र की बात कर रहे हैं तो मैं इतना तो जानता हूँ कि शास्त्र में सिर्फ दो ही पात्रे रखने की विधि है। एक पात्रा और दूसरे को जो कहते होंगे वो। तरपणी और दोरी का तो कहीं उल्लेख नहीं है तो फिर आप क्यों वापरते हैं ?''

''तू ने शास्त्र पढ़े हैं ?''

''मैंने पढ़े नहीं लेकिन मेरे गुरुदेव के सानिध्य में, अनेक तत्त्वचर्चाओं में मैंने सुना है। यह बात सही है इसका पूर्ण विश्वास है, अब जवाब हो तो कहो।''

''अभी का संघयण कैसा होता है ? शरीर संभालने के लिए तरपणी वगैरह वापरनी पड़ती है, अपवाद है।''

''आपके मत के अनुसार शरीर रक्षा के लिए अपवाद होते हैं, शासन रक्षा के लिए नहीं ?''

अंकुशभाई स्तब्ध होकर विचारने लगे कि ये बच्चा ऐसा सब भी बोल सकता है ? द्रव्य-क्षेत्र... उत्सर्ग-अपवाद... शास्त्र प्रमाण मांगना... यह सब किसीने सिखाया नहीं, सिर्फ तत्त्वचर्चा सुन-सुनकर जवाब देने में होशियार हो गया है। जवाब न होने से महाराजजी नये नये तर्क लगाते रहे, लेकिन संयम ने फिर कठिन सवाल किया, ''महाराजजी ! शास्त्र में आधाकर्मी के उपयोग का निषेध है ना ?''

''हाँ ! निषेध है।''

''तो ये आधाकर्मी पाट Desk-Table वगैरह क्यों वापरते हो ?''

''नहीं मिले तो कहाँ ढूंढने जाएँ। वापरना पड़ता है।''

''इनके बिना चल सकता है ?''

''हाँ !''

''तो क्यों वापरते हो ? छोड़ दो ना। जिसके बिना चल सकता है, वह शास्त्र विरुद्ध भी आपको करना है और शास्त्र में जिसकी छूट है वह नहीं करना है, यह क्या बात हुई ?''

जवाब तो नहीं मिला पर महाराजजी तर्क करते गए और संयम भी पूरे जोश के साथ सामना करता गया। अंत में अंकुशभाई ने संयम को जबरदस्ती Room में ले जाकर कहा, ''बोलने से कोई फायदा नहीं होनेवाला, वे कुछ न कुछ नया बोलते ही रहेंगे। निरुत्तर होने पर भी स्वीकार तो नहीं ही करेंगे इसलिये वहाँ जाना व्यर्थ है।''

व्याकुल होते हुए संयम बोला, ''ऐसा थोड़ी होता है, उचित जवाब देना चाहिये, ये तो जो मन में आए बोलते ही जाए तो क्या सब चुपचाप सुन लेना ?'' फिर उनके पास जाना निरर्थक लगने से प्रतिक्रमण भी Room में ही कर लिया। तत्त्व के साथ छेड़छाड़ होती हो वहाँ बहुत बार उनका यह रुप हमने देखा है। शासन के विषय में कुछ भी गलत, वे सहन नहीं कर सकते थे, अपने बड़ों की गलत पहचान उन्होंने कभी सहन नहीं की, परंतु जब भी उनकी भूल बताने में आयी, तब गलत बचाव किये बिना गलती का स्वीकार ही किया। अपनी तर्कशक्ति का दुरुपयोग कभी नहीं किया। उन्हें अपनी शक्ति का अभिमान नहीं था।

दीक्षा के ४ साल बाद जब हम सूरत में थे, तब उनका शरीर काफी कमजोर हो गया था। गुरुदेवश्री के पैर में Fracture होने से, वे मांडली से अलग प्रतिक्रमण करते थे। बालमुनि मांडली में नीचे बैठ-बैठे प्रतिक्रमण करते थे। प्रतिक्रमण में जो मुख्य आचार्य म.सा. थे, उन्होंने कुछ दिन ऐसा देखा और एक दिन प्रतिक्रमण में ही बालमुनि से कहा ''खड़े होकर प्रतिक्रमण करो। ऐसे तो अपनी गोचरी वहोरने जाते हो 1 km walking भी करते हों, तो प्रतिक्रमण में क्यों बैठ जाते हो ?''

यह सुनकर भी वे मौन ही रहे, कोई अभिप्राय या जवाब दिये बिना प्रतिक्रमण किया। वजन घटते-घटते आधा हो गया था। शाम तक तो बहुत थकान लगने लगती थी। लेकिन कोई कारण स्पष्ट करने की उन्हें इच्छा नहीं हुई और बाद में गुरुदेव से शिकायत भी नहीं की कि, ''गुरुदेव ! देखा आपने, उन आचार्य भगवंत ने सभी के सामने मुझे कैसा कहा ? मेरी क्या परिस्थिति हैं ?'' उनके मन की स्वस्थता में भी कोई फर्क न पड़ा।

थोड़े दिनों बाद गोचरी वहोरकर आने के बाद वे गोचरी मांडली में वापरने बैठे और वही आचार्य म.सा. फिर से बोले, ''क्यों बालमुनि ! ऐसे तो तुम गोचरी जाते हो, दुसरों के लिए भी लाते हो और walking भी करते हो तो प्रतिक्रमण क्यों खड़े होकर नहीं करते ?'' इस बात का बालमुनि ने सौम्य भाषा में इतना ही जवाब दिया, ''साहेब ! शाम होती है और मेरी Battery Down हो जाती है। अशक्ति का एहसास होता है, इसलिए बैठकर करता हूँ।''

चाहते तो जवाब दे सकते थे, तर्क लगाकर अपनी निर्दोषता साबित कर सकते थे, लेकिन स्वयं के लिए उन्होंने अपनी बुद्धि का उपयोग नहीं किया। उनकी आँतों की पाचन शक्ति भले ही कमजोर क्यों न हो ? लेकिन सब कुछ सुनकर पचा लेने की उनके मन की पाचन शक्ति खूब जबरदस्त थी।

११ उस दिन तुझे दीक्षा की अनुमति दूंगी !...

अब संयम को संयमी बनने का विशेष भावोल्लास जगा। मौका देखकर उसने दीक्षा के लिए बात की। पिताजी तो तैयार ही थे पर माता ने कहा - ''जब तू घर से गुरु भगवंत के पास रहने जाता है, तब तुझे देखकर मुझे रोना आता है और मुझे देखकर तेरी आँखें भी तो भर आती हैं, फिर भले तू मुझे याद नहीं करता होगा।

इसलिए जब सबकी आँखों में आँसू होने पर भी तेरी आँखों में आँसू नहीं आए ऐसा तेरा वैराग्य होगा उस दिन तुझे दीक्षा की अनुमति दूंगी।''

राग होते हुए भी कल्याण की उत्तम भावना थी। जिस मार्ग पर भेजना है, उस मार्ग की पूरी योग्यता होनी चाहिए।

१४ वर्ष की उम्र में परीक्षा करने के बाद परिवार ने संयम को दीक्षा देने का निर्णय किया।

पालीताणा में गुरुदेवश्री दीक्षादानेश्वरी प.पू.आ.भ. **श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा.** की निश्रा में सुश्रावक रमेशभाई मुथा ने भव्य चातुर्मास का आयोजन किया था। भरत-चक्रवर्ती भोजन खंड में हजारों आराधकों की भक्ति दिल खोलकर चल रही थी। पर इस चातुर्मास में संयम ने वर्धमान तप की ३-४ ओली की और आयंबिल के साथ पक्की दोस्ती कर ली।

भारतभर में प्रसिद्धि के शिखर पर पहुंची विनीता नगरी में दीक्षादानेश्वरी पू. गुरुदेवश्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा. ने संयमकुमार को **दीक्षा का शुभ मुहूर्त** प्रदान किया।

घर के प्रमुख राजेशभाई गांधी ने जोर-शोर से दीक्षा के शानदार महोत्सव की तैयारियाँ शुरु कर दी। खूब उदारता एवं उत्साहपूर्वक संपूर्ण दिन की साधर्मिक भक्ति के साथ पंचाह्निका महोत्सव का आयोजन किया।

भव्य वर्षीदान यात्रा में समस्त नवसारी संघ ने शासन की शोभा को चार चाँद लगा दिये । जैनों सहित पटेल आदि समाज के भाविकों ने भी उल्लासपूर्वक महोत्सव में भाग लिया। इस परिवार में देरानी के बेटे की दीक्षा थी, पर देरानी के साथ साथ जेठानी के मायके से भी मायरा हुआ था।

चाची जिज्ञा बहन को संयम पर माँ जैसा स्नेह होने से उनके मायके से भी स्वयं के भानजे की दीक्षा हो, वैसा मायरे का प्रसंग हुआ ।

शाम को बिदाई समारोह का समय ८.०० बजे का था, पर ७.३० बजे आनेवाले लोगों को भी बाहर खड़े रहना पड़ा, इतनी बेताबी के साथ लोगों ने मंडप पहले ही भर दिया।

दीक्षा के दिन सुबह गुरुदेव ने मंडप में प्रवेश किया । उससे पहले ही मंडप खचाखच भरा हुआ था । आज भी

नवसारी संघ उस ऐतिहासिक दीक्षा महोत्सव को याद करता है और कहता है अंजनशलाका प्रतिष्ठा जैसा ही माहोल का सर्जन हुआ था ।

माघ सुदी १३ की मंगल प्रभात में संयमकुमार प.पू.आ.भ. श्री पुण्यरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के पवित्र करकमलों से रजोहरण स्वीकार कर प.पू.आ.भ. श्री यशोरत्नसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य बने । उनका नया नाम **''मुनि दानरत्नविजय''** रखा ।

छोटा कद... छोटी उम्र... निर्दोष चेहरा... होने से प्रेम से सब उन्हें **''बालमुनि''** बुलाते और आगे जाकर २० वर्ष की उम्र होते हुए भी झलक तो निर्दोष बालक जैसी ही थी । इसलिए सर्वत्र बालमुनि के रुप में उनकी प्रसिद्धि हुई ।

नये जीवन के साथ उन्होंने नयी गति पकड़ी । गुरु समर्पण, स्वाध्याय, सेवा आदि गुणों से कुछ ही समय में अपने अभ्युदय का आह्वान करने लगे ।

१२ इसीलिए तो दीक्षा ली है...

दीक्षा के दूसरे दिन सुबह नूतन दीक्षित के पगलिये उनके संसारी घर में कराने के लिए हितेशजी उपाश्रय में आये । उन्होंने मुझे पूछा, ''नये म.सा. को किसका पच्चक्खाण कराया है ?''

''बियासने का'' मैंने कहा ।

''म.सा. ! एकासना कराओ, हो जाएगा ।''

''गुरु महाराज से बात करता हूँ !'' ऐसा कहकर मैंने बात टाल दी । उन्होंने गुरुदेव से भी एकासना करवाने के लिए कहा पर गुरुदेव ने उन्हें बियासना ही करवाया ।

ज्यादातर माँ-बाप तप कम कराने की भावनावाले होते हैं, लेकिन संयम की साधना में दुगुने विकास की इच्छा रखनेवाले ऐसे पिता तो विरले ही होते हैं ।

उपवास का पारणा करके पहला बियासना किया और दोपहर में दूसरा बियासना करने बैठे ।

सामान्य बात है कि गोचरी में अनेक प्रकार की चीजें वहोरी हुई होती हैं । उसमें कोई उत्तम तो कोई नीरस भी होती है। नूतन दीक्षित और फिर बालमुनि होने के कारण उत्तम

चीजों से उनकी भक्ति की गयी । उन्होंने देखा कि ये नीरस आहार तो मुझे पूछा तक नहीं ।

मांडली के महात्माओं को वे सामान्य ठंडी, सुबह की बनी हुई वस्तुएँ वापरनी पड़ेगी, इस विचार से उन्होंने उत्तम वस्तु को मना करके, स्वयं होकर नीरस वस्तु की माँग की ''मुझे भी यह चलेगा, दे दीजिये ।'' हम सभी को आश्चर्य हुआ । हमने कहा - ''यह तो नीरस है, आपने तो कल ही दीक्षा ली है, यह आपको नहीं दे सकते ।'' फिर भी उनके भाव जानने के लिए पूछा कि ''यह वस्तु आपको कैसे अनुकूल आएगी ?'' **''उसमें क्या हुआ ? इसीलिए तो दीक्षा ली है ।''**

जवाब सुनकर आचार्य भगवंत सहित सभी चकित हो गए । छोटी उम्र में दीक्षा ली है लेकिन पूरी समझ के साथ । छोटी उम्र में Adjustment करने की तैयारी होना, सचमुच अनुमोदनीय है ।

उस दिन से लेकर कभी भी कहीं भी कोई भी चीज, परिस्थिति आदि की शिकायत उनके मुख से सुनी नहीं । सभी जगह यथाशक्ति Adjust करते ही रहे ।

१३ सहज समझ...

दीक्षा के दूसरे दिन शाम को विहार किया और थोड़े ही दिनों बाद विहार में मुनि दानरत्नविजयजी के संसारी परिवारवाले मिलने आये । उपाश्रय में आये हुए देखकर उन्हें अंदाजा तो हो ही गया था कि अब मेरे पास आकर बातें करेंगे । दानरत्न म.ने सहवर्ती महात्मा से पूछा - 'अब ये लोग आकर बैठेंगे तो बात क्या करनी ?'

महात्मा को आनंद सहित आश्चर्य हुआ कि छोटी उम्र में सिखाये बिना गृहस्थों के साथ भाषा समिति का उपयोग रखना कहाँ से जाना ? और उससे भी ज्यादा आनंद इस बात का था कि 'मम्मी-पापा', 'मेरा संसारी परिवार' ऐसा कोई ममत्ववाला संबोधन दिये बिना उन्होंने 'ये लोग' ऐसा पराया संबोधन देना कहाँ से सीखा ? संयम लेने के बाद स्वजनों के प्रति ममत्व नहीं रखना, इसका बोध उन्हें होगा इसलिए ही तो ऐसा बोल सके ।

सहवर्ती महात्मा ने थोड़ी समझ दी की - पूछे तो अपनी आराधना की बात करना, उनकी आराधना पूछना और जो नहीं करते हों, ऐसी कोई आराधना की प्रेरणा देना । दूसरी कोई इधर-उधर की बातें करे तो ज्यादा महत्त्व नहीं देना । बात बदल देना ।

बालमुनि को वंदन करके परिवारवाले बैठे ।

थोड़ी बातें हुई फिर पूछा - ''आपने गोचरी वापरी ?''

''हाँ !'' इतना बोलकर वे चुप हो गए । साथ में आए हुए दूसरे दो परिचितों ने आगे बात बढ़ाई। ''क्या वापरा ?'' कितने द्रव्य वापरे ? ''जो गोचरी में आया वह वापर लिया ।''

''पर क्या ?'' बार-बार पूछकर जवाब देने का आग्रह किया । उन्होंने बुद्धि लगाकर जवाब दिया। ''एक द्रव्य वापरा ।''

''क्या ?'' ''पुद्गल द्रव्य वापरा ।''

सुनकर सभी को हँसी आ गयी ।

सामनेवाले को नाराज किये बिना परिस्थिति को संभालने की कला उनमें जैसे सहज ही थी ।

जवाब सुनकर गृहस्थ समझ गये कि गोचरी की बात गृहस्थों को नहीं कहते यह बात बालमुनि अच्छी तरह से जानते हैं ।

फिर बालमुनि ने यह वार्तालाप गुरुभगवंत को बताया तो गुरुभगवंत ने उनसे पूछा ''तुमने जो वापरा, वो उन्हें क्यों नहीं कहा ?''

हम सबको हँसाते हुए बालमुनि ने उत्तर दिया -

''गुरु महाराज ! ये तो अंदर की बात है !''

१४ सरलता के साथ प्रज्ञा...

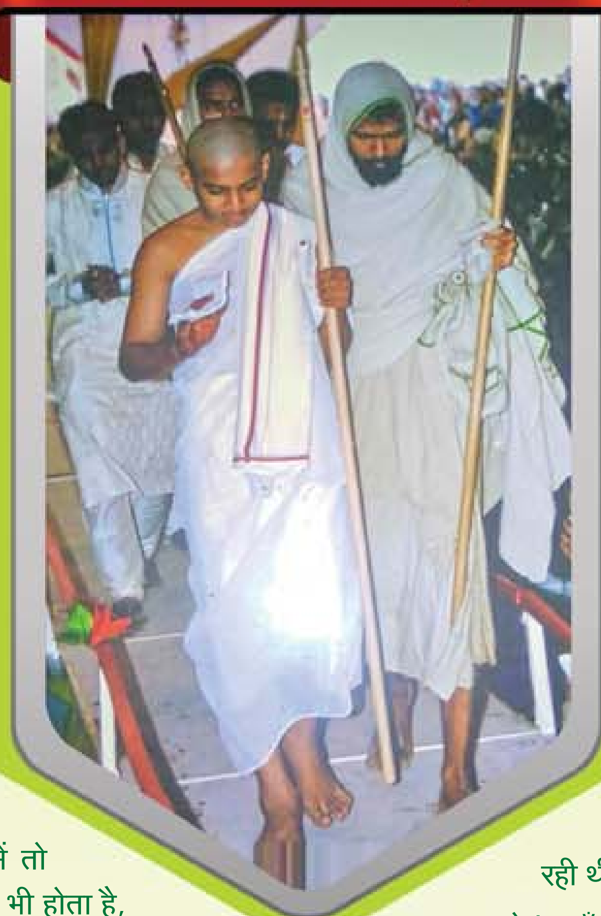

गुरुभगवंत के पडिलेहण में पहुँचने में देर हो जाये, तब बालमुनि दूर से ही आवाज लगाते ''मेरे लिए वींटिया रखना'' कपड़ा नहीं, उत्तरपट्टा नहीं और वींटिया ही क्यों रखने को कहा ? ऐसा कई बार होने से पूछने पर उन्होंने सरलता से अपने भोले मन की बात कही ''देखो, दूसरा कुछ भी पडिलेहण करुं तो एक या दो वस्तु ही पडिलेहण करने मिलती है। विंटिये में तो कपड़ा भी होता है, चोलपट्टा भी होता है, पांगरणी भी होती है, सब होता है, वींटिया पडिलेहण करने से सब पडिलेहण करने का लाभ मिलता है।''

जवाब सुनकर हम सभी को हँसी आ गयी लेकिन उनकी सरलता ऐसी थी कि हमें हँसता देखकर मुँह की रेखा भी नहीं बदली। कभी-कभी ही ऐसा होता बाकी नियत तौर पर गुरुदेव तथा विद्यागुरु का पडिलेहण वे अचूक रीति से करते थे। शरीर अस्वस्थ होने के बाद भी काफी अरसे तक यह नित्यक्रम उन्होंने जारी रखा था।

सरल होने के साथ वे प्राज्ञ भी थे। दीक्षा को मात्र ३ महीने हुए होंगे और पाली शहर के बाहर सोसायटी में हम रुके हुए थे। वे पारिष्ठापनिका समिति पालने गये थे। आधा-पौना घंटा होने आया और वापस नहीं लौटे। हम सभी राह देखते रहे। जब लौट आए तब देर होने का कारण पूछने पर बताया ''जगह नहीं मिल रही थी।''

''अरे ! यहाँ तो चारों ओर खुली जगह है, मकान भी बहुत दूर-दूर हैं, जगह तो मिल ही जानी चाहिए।''

''जगह तो थी लेकिन योग्य नहीं थी, कहीं पर लाल मिट्टी थी वह तो सचित्त होती है ना ? कहीं पर थोड़ी घास थी, इसलिए अचित्त भूमि ढूंढने में समय लग गया।''

हम सभी को आश्चर्य हुआ कि उम्र और पर्याय छोटा होने के बावजूद संयम की ऐसी परिणति ! अत्यंत अनुमोदनीय है।

१५ गुरु की इच्छा ही मेरा जीवन...

पहला चौमासा और पहला पर्युषण... मैंने थोड़ी प्रेरणा की ''इस वक्त तो अपने को अट्ठाई करना है।''

थोड़े जोश में आकर पहले दिन बेले का पच्चक्खाण लिया। तीसरे दिन पारणा करने के अरमान बना लिए थे। गुरुदेव ने कहा ''आज तो अट्ठम पूरा हो जायेगा।''

''गुरुमहाराज ! मुझे तो आज पारणा करना है।''

''क्यों ? पित्त हो रहा है ?''

''नहीं ! लेकिन बस अब कुछ करने की इच्छा नहीं होती, स्वाध्याय की भी इच्छा नहीं होती...''

''देखो आज एक उपवास कर लो मेरी भावना है, अट्ठम पूरा हो जायेगा, फिर जैसी आपकी इच्छा,''

गुरुदेव की इच्छा पूरी करने के लिए तीसरा उपवास किया।

चौथे दिन... नवकारसी आने में देर थी, गुरुदेवश्री को वंदन करने साध्वीजी भगवंत आये थे, बालमुनि को भी वंदन करके साध्वीजी भगवंत ने पूछा ''दीक्षा के बाद पहला अट्ठम किया है शाता में हो ना ? खूब धन्यवाद है आपको...'' ''ना, मुझे तो बस बेला ही करना था, गुरु महाराज की इच्छा थी इसलिए अट्ठम किया।''

''अच्छा ! गुरुमहाराज की इच्छा से एक उपवास किया तो हम सभी साध्वीजी भगवंत की भी इच्छा है एक उपवास हो जाएगा, हमारी खुशी के लिए एक उपवास नहीं करोगे ?''

थोड़ा भावताव चला लेकिन आखिर मान गये और चार उपवास के बाद गुरुदेव ने उनको पारणा करवाया। गुरुदेव सिवाय औरों की भी इच्छा हो और शक्ति हो तो अवश्य औरों की भी इच्छा पूरी करते थे।

एक बार विहार में वर्धमानतप की छोटी-सी ओली की थी और उपवास के दूसरे दिन विहार करके सांडेराव गाँव पहुंचे, वहाँ छ'रि पालित संघ का जोरदार स्वागत के साथ प्रवेश होनेवाला था, इसलिए गाँव के बाहर हम रुके हुए थे। बालमुनि को एकासना का पच्चक्खाण था,

गुरुदेव की भावना थी कि प्रवेश के बाद गाँव में जाकर उन्हें एकासना करवाएंगे। बाल होने पर भी ऐसी सहिष्णुता थी कि सामने से पारणे की कोई बात नहीं की।

प्रवेश के बाद श्रीसंघ की नवकारसी में गोचरी वहोरी, १०-१०.३० बजे बालमुनि को गोचरी वापरने बैठाया और कहा ''थोड़ा वापर के बैठे रहना, हम प्रवचन करके आ रहे हैं, फिर दोपहर की गोचरी थोड़ी जल्दी लाकर उसमें से भक्ति करेंगे।'' दोपहर को भी स्वामिवात्सल्य था।

वे थोड़ी गोचरी वापरकर बैठे रहे, प्रवचन तो लंबा चला, १¹/₂ घंटा हो गया, मैंने कहा ''अब पता नहीं गुरुमहाराज कब आयेंगे, प्रवचन कितना लंबा चलेगा ? यह सुबह की गोचरी में आपका एकासना पूरा हो जायेगा, वापर लो, अब ज्यादा राह मत देखो।''

''नहीं, गुरुमहाराज ने कहा है - मैं आकर वपराउंगा।'' गुरु की आज्ञा के उल्लंघन का जरा भी विचार नहीं किया। २ घंटे राह देखकर फिर गुरुदेव के हाथ से गोचरी वापरकर पारणा किया।

गुरु की इच्छा और आज्ञा दोनों जीवन की गाड़ी की पटरी बन चुके थे।

पू.पं. पद्मबोधिविजयजी म.सा. भी छ'रि पालित संघ में हमारे साथ थे, बालमुनि की आज्ञांकितता और आनंद देखकर उन्होंने बालमुनि से मजाक में कहा, ''दानरत्न महाराज ! इस तरह मुँह हँसता रखो यह नहीं चलेगा, थोड़ी मुँह की चमक कम होनी चाहिए, थोड़ी कमजोरी दिखनी चाहिए, पता चलना चाहिये कि ओली का पारणा है तो सभी लोग साता पूछेंगे।''

१६ विवेक बुद्धि...

संस्कृत बुक का अध्ययन करके काव्यों का वांचन वे पं. धर्मरत्नविजयजी म.सा. के पास करते थे, एक दिन पाठ चल रहा था और बालमुनि को वंदन करने उनके संसारी चाचा-चाची, भाई वगैरह दूर से आये थे, आकर वहाँ बैठे, विद्यागुरु ने कहा ''आज पाठ इतना ही रखते हैं,'' बालमुनि ने वंदन करने आये संबंधियों से कहा ''रोज तो एक घंटा पाठ होता है, लेकिन आपके लिए महाराज साहेब ने १५ मिनिट में ही पूरा कर दिया।'' सुनकर तुरंत गृहस्थों ने कहा ''नहीं... नहीं... महाराज साहेब आप पाठ चालू रखो हम तो बैठे हैं।''

''आपको कोई हर्ज तो नहीं है ना'' बालमुनि ने पूछा।

''नहीं महाराज साहेब ! हमारे लिए स्वाध्याय कम मत करो, एक नहीं सवा घंटा पाठ चलाओ।''

श्रावकों को संमत करके पाठ किया और फिर वंदनार्थी से मिले, छोटा पर्याय होने पर भी स्वजनों से ज्यादा स्वाध्याय में रस था।

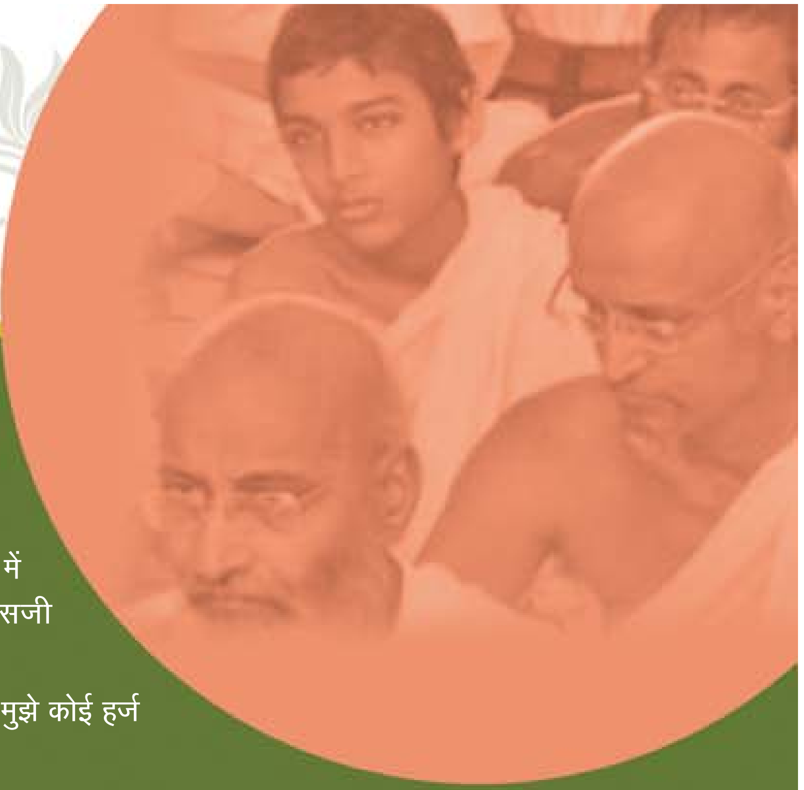

दूसरे दिन पाठ चल रहा था और विद्यागुरु को वंदन करने उनके संसारी संबंधी आये, वे पास में बैठे इसलिए बालमुनि ने कहा ''पंन्यासजी महाराज ! आज बस इतना ही रखते हैं।''

विद्यागुरु ने जवाब दिया, ''नहीं, मुझे कोई हर्ज नहीं, ये बैठे ही हैं, फिर मिल लूंगा।''

''नहीं, लेकिन मुझे पाठ करना ही नहीं है, आज बस हो गया।'' वंदनार्थीओं को ऐसा न लगे कि एक दिन के लिए आये और समय नहीं दिया, इसलिए दबाव करके पाठ बंद करवाया और विद्यागुरु को मुक्त रहने की अनुकूलता करके दी। यह थी उनकी विवेकबुद्धि, व्यवहार कुशलता। नियम स्वयं के लिए अलग थे और दूसरों के लिए अलग। इन्हीं गुणों के कारण वे सभी के प्रीतिपात्र बने।

गढ़सिवाना गाँव में हमारे चौमासे का प्रवेश था। प्रवेश के बाद प्रवचन चल रहा था। ऊपर उपाश्रय में पं. धर्मरत्नविजयजी म.सा. बीमारी के कारण आराम कर रहे थे। बालमुनि ने गुरुदेव के पास जाकर अनुज्ञा मांगी ''गुरुमहाराज मैं ऊपर जाऊँ ?''

''क्यों ?''

''ऊपर पंन्यासजी महाराज आराम कर रहे हैं तो उनकी सेवा करनी है।''

''हाँ ! ठीक है।''

ऊपर जाकर बालमुनि उनके पैर दबाने लगे।

थोड़ी देर बाद पं. धर्मरत्नविजयजी म.सा. ने उनसे कहा, ''बस हो गया अब आप जाओ, स्वाध्याय करो !''

''आप यहाँ बीमार हो तो मुझे स्वाध्याय में मन भी नहीं लगेगा। थोड़ी देर मुझे लाभ दो।'' कुछ देर सेवा करके बाद में ज्यादा कहने पर वे गये।

स्वाध्याय काल और बाद में भी वे विद्यागुरु के विनय में कभी चूके नहीं, स्वाध्याय कम होगा तो चलेगा विनय कम नहीं चलेगा। यह बात उनके जीवन में साफ दिखाई देती थी।

विद्या विनयेन शोभते।

१७

निरहंकार...

बडी दीक्षा होने के बाद संयमैकलक्षी पू.आ.भ. श्री जगच्चंद्रसूरीश्वरजी म.सा. को वंदनार्थ जाना हुआ। बालमुनि से मिलकर वे खुश हुए, पूज्यश्री ने बालमुनि से पूछा...

''जोग में आयंबिल-नीवी रास आती है ना ?''

''हाँ जी !''

''तकलीफ तो नहीं होती ना ?''

''ना जी !''

पूज्यश्री ने कहा, ''आपको पता है एकासना यानि स्वाध्याय, जो स्वाध्याय करना हो तो एकासना करना चाहिए।''

पूज्यश्री ने स्पष्टता करते हुए कहा, ''नवकारसी हो तो सुबह-शाम पात्रे पडिलेहण करना, गोचरी जाना, गोचरी के बाद पात्रे साफ करने में बहुत समय चला जाता है, इसलिए स्वाध्याय कम हो जाता है और एकासने में बचे हुए समय में स्वाध्याय होता है, इसलिए एकासना वह स्वाध्याय है।'' बालमुनि भी 'हाँ' कहकर बात स्वीकार कर रहे थे और पूज्यश्री ने पूछा, ''तो आजीवन एकासने का अभिग्रह दे दूँ ?''

दूसरे ही पल में हाथ जोड़कर पूज्यश्री को पच्चक्खाण फरमाने की विनंती की, उनका समर्पण देखकर पूज्यश्री प्रसन्न हुए और ''आपके गुरुमहाराज की छूट रखना,'' इतना कहकर पच्चक्खाण फरमाया। यह बात पू. गुरुदेव श्री गुणरत्नसूरिजी म.सा. को पता चली। वे वाचना में साधु-साध्वीजी भगवंतों से कहते थे ''यह बालमुनि भी अगर ऐसा अभिग्रह धारण करते हैं, तो सक्षम साधु-साध्वीजी भगवंतों को ''एगभत्तं च भोयणं'' का नियम अवश्य पालना चाहिए।''

बालमुनि से हम कहते थे कि ''वाह ! बालमुनि साहेबजी भी वाचना में आपका आदर्श सभी को देते हैं। आप तो बड़े गजब के निकले !''

इन सभी बातों का केवल मंद मुस्कान के रुप में प्रतिभाव देते हुए किसी प्रकार का गर्व किया हो ऐसा हमें अनुभव नहीं हुआ।

बालमुनि की सेवा-समर्पण-स्वाध्याय आदि की अनुमोदना कई साधु-साध्वीजी-श्रावक-श्राविकाएँ करते थे, लेकिन उनके मन में अहंकार अंकुरित नहीं हुआ, बल्कि अपनी न्यूनता व्यक्त करके बात झुठला देते थे। बीमार अवस्था में जब सभी व्यक्ति उनकी समाधि की भरपेट अनुमोदना करते थे, तब स्थितप्रज्ञ होकर उसे सुनते हुए किसी प्रकार का हर्ष उनके मुख पर देखने नहीं मिलता था। कभी भी वे overconfidence में नहीं आये कि मुझे समाधि स्थिर हो गई है। समाधि बनाए रखने के प्रयत्नों में वे अंत तक उद्यमशील रहे।

कालधर्म के २ दिन पहले की बात है... बालमुनि की Room के बाहर एक युवान बैठा ध्यान कर रहा था। बालमुनि की नजर उस पर पड़ी। इशारा कर बालमुनि ने पूछा, ''यह कौन है ?''

मुनि मौर्यरत्नविजयजी म.सा. ने जवाब दिया, ''यह हर्ष है। पं. कल्पज्ञविजयजी म.सा. के पास दीक्षा लेने की भावना है। भक्तियोगाचार्य पू.आ.भ. श्री यशोविजयसूरीश्वरजी म.सा. की वाचना में आपका नाम सुना, साहेब के मुँह से आपकी समाधि की अनुमोदना सुनकर आपके दर्शन की भावना हुई। इसलिए यहाँ आपकी aura में बैठकर समाधि के स्पंदन प्राप्त करने के लिए ध्यान कर रहा है।''

भक्तियोगाचार्यश्री के मुख से स्वयं की अनुमोदना हो रही है, यह जानकर भी उनके मुँह की आकृति में कोई फर्क नहीं पड़ा। स्वप्रशंसा सुनकर किसी प्रकार का हर्ष उनके मुँह पर देखने नहीं मिला।

उनके जीवन में अहंकारजन्य कोई भी प्रवृत्ति और वाणी हमने देखी नहीं, यह उनकी निरहंकारता का प्रमाण है।

१८ स्वाध्याय में विचक्षण...

संयम अंगीकार के साथ ही बालमुनि की स्वाध्याय साधना भी शुरु हो गयी थी।

४ प्रकरण, ३ भाष्य, ५ कर्म ग्रंथ तो संसारी अवस्था में ही कंठस्थ किये थे, अब उसके अर्थ की वाचना शुरु हुई। उनकी मेधा ऐसी तीव्र थी कि सामान्य व्यक्ति को कर्मग्रंथ पढ़ते हुए जो प्रश्न उठते थे वे प्रश्न उन्हें जीव विचार पढ़ते वक्त ही उठने लगे।

संस्कृत बुक का अध्ययन करते समय नियमों के विषय में उनके प्रश्नों का जवाब देने के लिए कई बार गुरुदेवश्री को व्याकरण ग्रंथ में देखकर जवाब देने पड़ते थे। उनकी विचक्षण बुद्धि देखकर बड़े गुरुदेवश्री **(आ. पुण्यरत्नसूरिजी म.सा.)** ने भविष्यवाणी कर दी थी कि इनका क्षयोपशम न्याय और कर्मग्रंथ में विशेष खिलनेवाला है।

संस्कृत करने के बाद त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र का वाचंन उन्होंने मात्र आठ महीनों में (शेषकाल के विहार के साथ) संपूर्ण किया। स्वाध्याय में ऐसे अप्रमत्त थे कि पढ़ते वक्त जो भी प्रश्न उठते उन्हें एक कागज़ पर लिखकर रखते। विहार करते समय कागज़ निकालकर चलते-चलते गुरुदेव से उन प्रश्नों का समाधान प्राप्त करते।

समय के सदुपयोग का यह गुण देखकर गुरुदेव अंदर ही अंदर खूब प्रसन्न होते थे। नाकोड़ा चौमासे में गुरुदेव ने उन्हें न्याय के अध्ययन में प्रवेश करवाया। उन्होंने बड़े गुरुदेव की भविष्यवाणी को सच कर बताई। अपनी तीव्र-सूक्ष्म-विचक्षण प्रज्ञा से न्याय के जटिल पदार्थों की गहराई को छूकर अध्यापक को करिश्मा कर बताया। १६ वर्ष की छोटी उम्र में न्याय के क्लिष्ट पदार्थों को सरलता से समझने की उनकी अद्वितीय प्रतिभा थी।

न्याय का तलस्पर्शी अध्ययन करने पर भी उनका सम्यग्दर्शन इतना निर्मल था कि उस अध्ययन का उन पर विपरीत असर नहीं हुआ। न्याय मात्र उनके दिमाग में ही था, उसे मन और जीवन तक पहुँचने न दिया। किसी के साथ भी कभी भी कुतर्क लगाकर अपनी बात को सच साबित करने का तुच्छ प्रयास उन्होंने नहीं किया।

मुनि **श्री यशरत्नविजयजी** और मुनि **श्री मौर्यरत्नविजयजी म.सा.** के पास 'प्रमाणनयतत्त्वालोक' का अध्ययन कर जैनदर्शन, स्याद्वाद, षड्दर्शन का बोध प्राप्त कर जिनशासन की दिव्यदृष्टि का स्पर्श प्राप्त किया।

सबसे छोटे होते हुए भी सभी परीक्षाओं में उनका पहला नंबर रहता था। न्याय के अध्ययन के सिवाय ४ प्रकरण, ३ भाष्य, ६ कर्मग्रंथ, दशवैकालिक सूत्र, वीतराग स्तोत्र, शांत सुधारस (प्रायः १२ भावना तक) इतना तो उन्होंने कंठस्थ किया था और अस्वस्थता में भी पुनरावर्तन करते थे।

५ काव्य, त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र, हीर सौभाग्य काव्य-२ सर्ग, प्रकरण-भाष्य, २ कर्म ग्रंथ अर्थसहित, पिंडविशुद्धि, पिंडनिर्युक्ति, पंचवस्तुक (अधूरा), प्राकृत बुक, पाइअविन्नाण कहा, समरादित्य महाकथा (अधूरी) वगैरह का उन्होंने अध्ययन किया।

अस्वस्थता बढ़ने लगी तब स्वाध्याय की अनुकूलता न रहने पर कुछ ग्रंथ अधूरे ही रह गये।

उनकी विचक्षणता और पदार्थों को गहराई से समझने की कुशाग्रता के कारण सभी विद्यागुरु के वे चहेते विद्यार्थी बने। न्याय का अध्ययन इतनी मेहनत से किया कि जटिल पदार्थों को मात्र समझने से उन्हें तसल्ली नहीं होती थी, लेकिन समझे हुए पदार्थों को लिखकर ही चैन की सांस लेते थे कि ''हाँ ! अब मुझे बराबर समझ में आया।''

१९ चंद्र की खिली चांदनी... और हुआ राहु का संग...

स्वाध्याय के साथ नित्य एकासना और हर सुदी ५ के दिन उपवास का तप नियमित तौर से करते थे।

स्वाध्याय की मस्ती में मस्त रहने से दिन-प्रतिदिन उनकी समझ और प्रज्ञा खिलने लगी थी।

लेकिन जिस तरह चंद्र को चांदनी की शोभा के साथ राहु का उपद्रव होता है, उसी प्रकार मुनि दानरत्नविजयजी के मस्तीभरे जीवन में भी रोगरुपी राहु का उपद्रव हुआ। ऐसे तो उनकी खुराक जरा कम हो गयी थी, लेकिन कई दवाएँ करने पर भी कोई लाभ नहीं हुआ। एकाएक उनको भारी बदहजमी की शिकायत हुई, दिनमें बार-बार दस्त लगने लगे, इसके कारण हलका खुराक ही ले पाते थे, कई दवाएँ करने पर भी इस समस्या का समाधान न हुआ।

इस परिस्थिति में भी उनका न्याय का अध्ययन जारी था। अब गुरुदेव ने उन्हें एकासना छुड़वाकर नवकारसी का पच्चक्खाण करवाया, तकलीफ होने के बावजूद स्वाध्याय का रस वैसा ही रहा और उत्साह के साथ अध्ययन में आगे बढ़े।

ऐसी तबियत में मेवाड़ से सूरत का ७०० कि.मी. लंबा विहार किया, गुरुदेव सहित सभी सहवर्ती उनका संपूर्ण खयाल रखते थे, लेकिन दूसरी सभी अनुकूलता मिलते हुए भी बीमार व्यक्ति को विहार करना मुश्किल ही होता है, लेकिन बालमुनि ने किसी प्रकार के खेद या शिकायत के बिना प्रसन्नता के साथ यह लंबा विहार किया।

एक तरफ राहु का उपद्रव हुआ तो दूसरी ओर मित्र मिला, उनके संस्कृत बुक के विद्यागुरु मुनिश्री हिरण्यरत्नविजयजी म.सा. उनकी ऐसी तबियत में पूरी संभाल लेते थे। साये की तरह साथ रहकर अंतसमय तक ४ साल अखंड सेवा की। सेवा ऐसी अद्भुत थी कि देखनेवाले ऐसा ही कहते ''यह बालमुनि की माँ है क्या ?'' किसी की प्रेरणा के बिना अपने उत्साह से उन्होंने बालमुनि का इस तरह ध्यान रखा कि गुरुदेव को कभी भी इस विषय में चिंता न रही।

कई बार उनकी सेवा देखकर बालमुनि के संसारी स्वजन और मुनि भगवंतों की आँखे भर आती। मेवाड़ से सूरत चौमासे के लिए हम आये। भिन्न-भिन्न वैद्यों की दवाईयाँ करवाई, लेकिन कोई नतीजा न निकला। भारी खुराक तो पचता ही नहीं था। हलका खुराक भी परिमित मात्रा में ही ले सकते थे और वजन भी काफी उतर गया था।

सूरत में न्याय के प्रसिद्ध अध्यापक पंडितवर्य श्री संतोषभाई के पास 'व्युत्पत्तिवाद' का पाठ शुरु हुआ। पंडितजी ने एक बार बालमुनि से कहा -

''महाराज साहेब ! आपका शरीर ऐसा क्यों है ?''

''मैं थोड़ा बीमार हूँ, इसलिए।''

''लेकिन दिमाग तो आपका ठीक चलता है।, ऐसा दुबला शरीर होते हुए भी इतना कठिन ग्रंथ, इतनी सरलता से आप पढ़ रहे हो, आश्चर्य है !''

''गुरुदेव के आशीर्वाद हैं।''

''वो तो है ही, लेकिन आप अच्छी दवा करवाना, हमारा बचपन पेट की बीमारी में बीता, हमें सही इलाज नहीं मिला था, आपको देखकर मुझे दुःख होता है।''

कुशल प्रज्ञा के कारण पंडितजी को बहुत प्रिय थे, इसलिए कई बार उनकी तबियत के समाचार पूछते, इलाज के लिए सलाह देते, चिंता व्यक्त करते थे। उनकी मानसिक प्रसन्नता देखकर पंडितजी बड़े खुश होते और दुगुने उत्साह से उन्हें पढ़ाते थे।

उनके पास व्युत्पत्तिवाद, सिद्धांत लक्षण, सामान्य निरुक्ति, अवच्छेदकत्व निरुक्ति वगैरह कठिन ग्रंथों का तलस्पर्शी अध्ययन किया। आज पंडितजी उनको याद करके द्रवित हो उठते हैं। कहते हैं **''२० साल के अध्यापनकाल में बहुत सारे आये - गये, लेकिन इतना लगाव कभी महसूस नहीं किया, इतना आघात भी कभी नहीं लगा। बीमारी में भी इतनी मानसिक प्रसन्नता थी, इसीलिए अंत में इतनी समाधि रही।''**

२० सहवर्तीयों का प्रेम...

कई उपचार करने पर भी फायदा नहीं हो रहा था, यह बात हमारे मन का शूल बन बैठी थी। सहवर्ती कई महात्माओं ने उनके संकल्प से अलग-अलग आराधनाएँ शुरु की।

किसी ने मिष्ठान्न त्याग किया तो किसी ने जाप शुरु किया इत्यादि।

बालमुनि को एक सुंदर व्यसन था... दोनों गुरुदेव की भक्ति का, इसलिए रोज गोचरी के बाद दोनों गुरुदेव के पात्रे पोंछने की भक्ति बड़े उत्साह से वे करते थे। सुरत उमरा संघ में एक बार पात्रे पोंछते वक्त उन्होंने गुरुदेव से पूछा, ''गुरु महाराज ! ये कुंथुरत्न म.सा. शुद्ध आयंबिल क्यों कर रहे हैं ?'' कितने दिन से देख रहा हूँ।

गुरुदेव ने जवाब दिया, ''पूछो उनको... !''

मुनि कुंथुरत्न म.सा. ने इशारे में जवाब दिया लेकिन वे समझ नहीं पाये इसलिये गुरुदेव ने स्पष्टता की ''आपका स्वास्थ्य जल्दी अच्छा हो जाये इस संकल्प से ३ शुद्ध आयंबिल किये हैं।''

''क्या ? मेरे लिए...'' बस इतना ही बोलकर फटी आँखों से आश्चर्य व्यक्त किया और २ सेकंड बाद फूट-फूट कर रोने लगे।

''मेरे लिए आपने शुद्ध आयंबिल किये ! धन्यवाद है आपको !'' इतना बोलकर मुनि भगवंत के चरणों में झुक गए लेकिन कुछ बोल नहीं सके।

अनेक सहवर्तीओं ने उनके संकल्प से किये हुए तप-त्याग जानने मिले तब ऐसे ही कृतज्ञतापूर्वक वे उपकारभाव व्यक्त करते थे।

सबसे विशेष मुनि **श्री हिरण्यरत्नविजयजी** ने बालमुनि की सेवा में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था। ४ साल से चल रहे सेवा यज्ञ में उन्होंने अपने स्वाध्याय को भी होम दिया था, जब भी किसी बड़े तीर्थ जाना हुआ, तब बालमुनि के स्वास्थ्य के संकल्प से अट्ठम तप करके संपूर्ण दिन जिनालय में अप्रमत्त रीति से जाप किये (प्रायः दिन के १२-१३ घंटे) ऐसे हर साल ३ से ४ अट्ठम वे करते थे, बालमुनि के लिए हमेशा उनका अद्वितीय प्रेम रहा है।

पं. धर्मरत्नविजयजी म.सा. ने बालमुनि के स्वास्थ्य के लिए लगातार ७ महीने आयंबिल किये और सुबह १ घंटा जाप करते थे। बालमुनि को जब मुंबई उपचार के लिए आना हुआ, तब पं. धर्मरत्नविजयजी म.सा. ने उनके निमित्त से १०८ आयंबिल किये।

२१ निर्यामणा की Net Practice...

उमरा जैन संघ (सूरत) में चौमासे के बाद हम भटार रोड जैन संघ में मासकल्प के लिये रुके थे। बालमुनि का वजन काफी घट जाने के कारण Gastro Surgeon डॉक्टर को बताया। डॉक्टर के अनुसार Malrotation अर्थात् पेट की आँते दूसरी दिशा में मुडी होने से खाना सही ढंग से नहीं पचता, इसलिये Operation करना पड़ेगा। जितनी देरी होगी, वजन और घटता जायेगा। डॉक्टर की राय जानकर 'बीमारी का कुछ पता तो चला' इस आशा से अन्य परिचित डॉक्टरों की सलाह ली और गुरुदेव पू.आ. **श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा.** की आज्ञा प्राप्त कर Operation करवाने का निश्चय किया।

Operation के एक दिन पहले बालमुनि ने गोचरी वापरने बैठे सभी महात्माओं को ३ प्रदक्षिणा रुप मांगलिक कर सबके आशीर्वाद प्राप्त किये। हॉस्पीटल की तरफ विहार करते समय मुनि **श्री मौर्यरत्नविजयजी म.सा.** ने बालमुनि को पूछा ''आपको पता है सूरत में रोज कितने लोग मरते हैं ? कितनों के Operation वगैरह होते हैं तो भी सभी महात्मा केवल आपके लिए ही साथ आ रहे हैं। इतने सारे अपवाद, विराधना क्यों स्वीकार रहे हैं ?''

''पता नहीं।''

''आप संयमी हो, आप निरोगी बनकर आराधना करोगे, तो जल्दी से मुक्ति प्राप्त करोगे। जिससे हमेशा के लिए सभी जीवों को अभयदान मिलेगा। आप स्वस्थ होकर अनेक लोगों के मिथ्यात्वादि भावरोगों को मिटाओगे। आप भी साधना तभी कर पाओगे, जब शरीर स्वस्थ और मन समाधिमय होगा, उसी के लिये यह Operation आदि सारे प्रयास हैं और सभी महात्मा आपकी देखभाल कर रहे हैं।''

यह सुनकर बालमुनि ने अपना लक्ष्य स्थिर किया।

Operation के पहले Anesthesia दिया जाता है। बेहोश किया जाता है और अगर कोई भूल हो जाय तो... यह चिंता मन में होने से मुनि **श्री मौर्यरत्नविजयजी म.सा.** ने छोटी-सी निर्यामणा करवाई।

''बालमुनि ! संथारा पोरिसि पढ़ाते समय हम सब कुछ क्यों वोसिराते हैं ? नींद आने के बाद स्थूल मन निष्क्रिय बन जाता है और सूक्ष्म मन जागृत हो जाता है। इसलिये जब सजाग अवस्था हो तब 'मैं आत्मा हूँ - शरीर नहीं' यह स्मृति शक्य है, समाधि शक्य है, जो होनी ही चाहिए। परंतु, नींद में क्या ? इसलिए संथारा-पोरिसि द्वारा सूक्ष्म मन (Subconscious Mind) को सूचना देते हैं। उसी तरह Operation के पहले भी हमें ४ शरण - दुष्कृत गर्हा - सुकृत अनुमोदना, ४ आहार के त्यागरुप सागारिक अनशन लेना चाहिए, मात्र अंत समय में ही यह विधि करनी ऐसा नहीं है। जब भी जागृति घटने की संभावना हो, तब यह प्रक्रिया कर लेनी चाहिए।'' (उस समय मृत्यु का नाम लेने में हमें भी डर लगता था, मगर किसे पता था कि ये वीरपुरुष मृत्यु को भी सहर्ष स्वीकार ले ऐसे हैं।)

Hospital पहुँचने के बाद उन्होंने शक्रस्तव, नवस्मरण, पंचसूत्र वगैरह की आराधना की और Operation के पहले ४ शरण, सर्वक्षमापना, सागारिक अनशन आदि स्वीकारे।

इस तरह बालवय होते हुए भी प्रभुभक्ति, गुरुसमर्पणभाव और सहवर्तीओं के बहुमानभाव से सत्य को जानने स्वीकारने और उसके अनुसार आचरण करने की तैयारी स्वरुप योग्यता पूरे बहार खिली हुई थी, जो कि उनकी समाधि की नींव थी।

Operation theatre में पता चला कि उनको Malrotation नहीं, लेकिन SMA Syndrome है (नस द्वारा आँतों का दबना) और उसका Operation करने में आया, परंतु कर्म विपरीत होने के कारण बाद में भी स्वास्थ्य में कोई सुधार नहीं हुआ।

२२ पश्चात्ताप का ताप...

न्याय का अध्ययन चल रहा था, पंडितजी को आने में थोड़ी देर थी। मुनि त्रिभुवनरत्नविजयजी, मैं और बालमुनि हम तीनों का वार्तालाप चल रहा था। मुनि त्रिभुवनरत्नविजयजी म.सा. बालमुनि के अति आत्मीय मुनि रहे हैं। दीक्षा के पहले से ही बालमुनि उनके पास हितशिक्षा ग्रहण करते और साहजिक कोई पूर्वभव का संबंध हो, इस प्रकार से दोनों का स्नेह रहा और एक-दूसरे के लिए आलंबन भी बने। **''परस्परोपग्रहो जीवानाम्''**

सूक्ष्म विराधना से भी बखूबी बचनेवाले मुनि श्री न्यायरत्नविजयजी म.सा. की बेनमून जयणा के २-३ प्रसंगों का मैंने जिक्र किया। सुनकर बालमुनि की आँखें भर आई और रोते-रोते कहने लगे ''मेरे जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है, मैं तो गोचरी में सिर्फ अनुकूलता ही देखता हूँ। इस मार्ग पर आने के बाद जयणा नहीं होगी, तो मेरा क्या होगा ?'' शांति से समझाने पर शांत हुए। पाठ हो जाने के बाद मुनि त्रिभुवनरत्न वि.म. ने मुझे कहा - ''एक बात तो पक्की है कि इस जीव की कक्षा बहुत ऊँची है।''

''पिण्डविशुद्धि'' ग्रंथ का पाठ चल रहा था। ग्रंथ की शुरुआत में सबसे पहले 'आधाकर्मी' की विशेष जानकारी दी है। वह पढ़ते समय ''आधाकर्मी वापरनेवाला साधु दुर्गति में जाता है।'' यह पंक्ति संपूर्ण पढ़ी भी नहीं और बीच में ही वे रो पड़े। ''मैं तो आधाकर्मी ही वापरता हूँ।'' इतना ही बोल पाये। मैंने जवाब दिया ''लेकिन यह बात तो निष्कारण आधाकर्मी वापरते हैं उनके लिये है। आपको तो निर्दोष गोचरी से पथ्यसेवन अशक्य है, इसलिए दोषित वापरना पड़ रहा है।''

''परंतु, उसमें राग तो होता है, उसका क्या ?''

''राग होता है, यह बात तो सच है लेकिन हमें तो निरोगी हो जाने के बाद सब कुछ छोड़ ही देना है। कहाँ हमेशा चालू रखना है ? अगर इससे छूटना है तो अब रोज परमात्मा को प्रार्थना करो कि हे प्रभु ! उत्सर्ग मार्ग से आपकी आज्ञा पाल सकूं ऐसी कृपा करो। इस अपवाद के सेवन में मैं प्रमादी न बनूं ऐसी कृपा करो !'' इस तरह समझाने पर शांत हुए। ऐसा एक बार नहीं, अनेक बार हुआ।

कोरोना के वातावरण में सुरक्षा के लिए अधिकांश साधु-साध्वीजी भगवंतों को गोचरी में अपवाद का सेवन करना पड़ा है। इस अपवाद सेवन के समय राग पर अंकुश रखना सबके लिये मुमकिन न भी बना हो, लेकिन उस राग के पश्चात्ताप के आँसू बहानेवाले तो बालमुनि जैसे विरले ही होंगे।

कालधर्म के दो महीने पहले मुनि मौर्यरत्नविजयजी म. का हाथ पकड़कर गोवालिया टैंक उपाश्रय में वे चलते-चलते अचानक रोने लगे - ''परलोक में मेरा क्या होगा ? मैं इन्द्रियों का गुलाम हूँ, गोचरी चटाकेदार चाहिए, जीभ मानती नहीं है।'' उनकी जागृति - पश्चात्ताप देखकर आश्चर्य हुआ। उन्हें सांत्वना दी कि तुम प्रभु को प्रार्थना करो, तुम्हारी प्रार्थना निष्फल नहीं जायेगी क्योंकि प्रभु को रीझाने का Best उपाय आँसू है, जो अतिदुर्लभ है और आपके पास हैं।''

''कुछ दो या ना महावीर, इस अपने दीवाने को, दो आँसू तो दे दो, चरणों में बहाने को...
गौतम ने बहाए थे, चंदना ने बहाए थे, जब जब भी कोई रोया, तुम दौड़ के आये थे...
काफी है दो बूंदे भगवान रीझाने को, दो आँसू तो दे दो, चरणों में बहाने को...''

उनके इस अश्रुपात के समय उन्हें कह दिया था कि 'आपकी समाधि Reserved है। क्योंकि आपने सच्चे दिल से प्रार्थना की है' और सच में प्रभु ने उनकी प्रार्थना सुनी और ''शरणागतवत्सल'' का अपना बिरुद दुनिया के सामने पुनः जीवंत किया।

२३ कृतज्ञता...

Hospital में Admit होकर ७ दिन रुकना हुआ। उस दरमियान Hospital में प्रतिक्रमण के बाद मुनिश्री यशरत्नविजयजी म.सा. ने दानरत्नविजयजी से कहा ''बालमुनि ! देखो तुम्हारा कैसा भाग्य है। कोई भी डॉक्टर के पास जाना हो, किसी भी Hospital में बताना हो, C.T. Scan वगैरह कुछ भी करवाना हो तब तुम्हारे गुरुदेव (आ. यशोरत्नसूरिजी) साथ आते हैं। स्वयं सब ध्यान रखते हैं, सभी पूछताछ करते हैं और यहाँ Hospital में भी इतने दिन स्वयं साथ में रहे। दूसरे शिष्य होने के बावजूद स्वयं सभी देखभाल कर रहे हैं...

गद्गद होकर जवाब देते हुए बालमुनि ने कहा, ''अरे ! गुरुमहाराज तो मेरा इतना ध्यान रखते हैं कि ''दीक्षा को ४ साल होने आए लेकिन आज तक मुझे माँ की याद आने नहीं दी।'' इतना कहकर भीगी आँखों के साथ अपने गुरुदेव के चरणों में लिपट गए।''

गुरु की कृपा तो सभी के ऊपर बरसती है, लेकिन उसे ग्रहण करने के लिए कोई प्रबल तत्त्व है, तो वह है कृतज्ञता। इस कृतज्ञता के बल पर शिष्य गुरु के शक्तिपात को ग्रहण कर सकता है... अनुभव कर सकता है। इसीलिए तो अध्यात्म जगत में गुरुकृपा से भी महत्वपूर्ण कोई शक्तिपुंज हो तो वह है कृतज्ञता और बालमुनि की कृतज्ञता की अभिव्यक्ति के इस मनोरम दृश्य ने सभी मुनिभगवंतों को धन्य बना दिया।

Operation होने के बाद उपाश्रय में आकर २-३ दिन हुए होंगे... कई साधु भगवंत बालमुनि के पडिलेहण का लाभ लेने आये थे और कुछ वार्तालाप होने के बाद बालमुनि गद्गद होकर रोने लगे, ''मैं छोटा साधु हूँ लेकिन सभी मेरी कितनी सेवा कर रहे हैं। अरे ! गुरुमहाराज स्वयं हर बात का ध्यान रखते हैं। मेरी कोई लायकात नहीं है, इतनी सेवा कैसे ली जा सकती है ?''

इतना ही बोल सके और आँखे सावन भादो के मेघ की तरह बरसने लगी... रुदन हृदय से उछलकर मुख से छलकने लगा।

उस दिन सभी मुनि भगवंतों ने उनकी कृतज्ञता को वंदन किये। सेवा तो कंईयों को कई बार लेनी पड़ती है, लेकिन उसका इस प्रकार ऋण स्वीकार तो विरले ही करते हैं।

२४ अखेद...

Operation होने के बाद स्वास्थ्य में कुछ भी सुधार न हुआ। खुराक में कोई फर्क न पड़ा और वजन भी काफी कम हो चुका था, तीनों वक्त १-१ कटोरी जितना ही खुराक ले पाते थे और शरीर ऐसा हो गया था कि स्पष्ट रीति से हड्डीयाँ गिनी जा सके।

सभी की एक ही शिकायत थी कि ''महाराज साहेब बहुत पतले हो गये हो...'' लेकिन इस बात का कोई खेद व्यक्त न करते हुए सभी को यही कहा करते थे कि ''कर्म के उदय के आगे किसका जोर चलता है ?''

मस्त-प्रसन्नता से अपने स्वाध्याय में लीन रहते थे। एक बार पू. गुरुदेवश्री **गुणरत्नसूरिजी म.सा.** के सामने गोचरी वापरने बैठे, उनका कृश शरीर देखकर उन्हें प्रसन्न करने के लिए पूज्यश्री ने सहजता से इशारा करते हुए कहा ''श्रीमद्‌जी''।

इस बात के जवाब के रुप में तुरंत ही श्रीमद्‌जी की तरह ध्यानमुद्रा में आँखे मूंदकर बैठ गये और पूज्यश्री को खुश करके ज्यादा खुश हुए। अपनी नाजुक परिस्थिति का खेद तो नहीं किया, लेकिन दूसरों को खुश करने के लिए स्वयं का मज़ाक भी किया करते थे।

२५ उत्तम साधु-भक्ति...

दीक्षा के कुछ दिनों पहले ही विशिष्ट संयमी पू.पं. **श्री कल्परक्षितविजयजी म.सा.** ने सुपात्रदान की दमदार प्रेरणा की। मुमुक्षु काल के अंत में यह प्रेरणा मानो शक्तिपात रुप बनी।

सुपात्रदान का ऐसा लाभ लूटा कि जैसे एक व्यसन हो गया हो और संयमजीवन में भी महात्माओं की भक्ति का कोई अवसर वे चूके नहीं।

तीनों वक्त बालमुनि अपनी गोचरी लेने जाते। इतनी शक्ति थी, इसलिए गुरुदेव ने उन्हें छूट दी थी। तदुपरांत गोचरी वापरने के बाद २ बार थोड़ा चलते भी थे, जिससे पाचनतंत्र स्वस्थ रहे। इन सभी कार्यवशात् जब भी बाहर जाना होता, तब गुरुभगवंत और साधुभगवंत के भक्ति-प्रायोग्य दूसरी वस्तुएँ बिना भूले ले आते थे। बड़े गुरुदेव **(आ. श्री पुण्यरत्नसूरिजी म.)** को जब भी अट्ठम - अट्ठाई का पारणा हो तब उत्साह के साथ नियमित तौर पर गोचरी वहोर कर लाते और पारणे का लाभ लेकर अत्यंत प्रसन्न होते। पूज्यश्री को जब भी अट्ठम का उत्तरपारणा हो तब बालमुनि अपनी भक्ति लिये बिना पूज्यश्री को उठने नहीं देते थे। गोचरी वापर ली हो तो मीठा आग्रह कर पात्रे में रख देते और कभी पूज्यश्री उनका हाथ पकड़कर रोकते तो दूसरे हाथ से पूज्यश्री का हाथ पकड़ लेने की हिम्मत उनमें थी। जबरदस्ती से पूज्यश्री के हाथ को दूर करके पात्रे में गोचरी रख देते। पूज्यश्री कितना वापर सकते हैं इसका खयाल उन्हें था। गोचरी मांडली में बालमुनि और गुरुदेव की ऐसी कुश्ती तो हमने कई बार देखी है। इसमें कोई अविनय का दोष नहीं लगता, भक्ति में तो भगवान से भी लड़ने की ताकत आ जाती है और आखिर भगवान को हार माननी पड़ती है, इसीलिए तो ऐसी ''खींचातानी'' के बाद रखी हुई गोचरी पूज्यश्री हँसते हुए वापर लेते थे।

उनकी भक्ति करने की रीत अनोखी थी। कोई साधु भगवंत उन्हें ४ रोटी लाने को कहे तो बालमुनि रोटीयाँ चूर कर उसमें घी और गुड़ डलवाकर लाते और साधु भगवंत को वह चुरमा देते हुए कहते, ''लो ! आपकी ४ रोटी...'' हर परिस्थिति में अधिक से अधिक भक्ति किस तरह की जाए, उसका ध्यान बालमुनि अवश्य रखते थे। उनका भक्ति का तरीका **'मूलदेव'** की याद दिलाता है।

महात्मा वापरने बैठे हो और दोबारा वहोरने जाना हो तो भक्ति भाव के कारण वे स्वयं वहोरने जाते। नजदीक जाने का निर्देश दिया हो तो भी वे उत्साह के साथ ५-६ मंजिल चढ़कर उत्तम भक्ति करते। उनकी प्रसन्नता टिकाने के लिए मुनि भगवंत भी दूसरी बार उन्हें ही लाभ देते थे।

धुलिया से मुंबई उपचार हेतु आना तय हुआ, तब निकलने के एक दिन पहले बालमुनि मुनि **श्री हिरण्यरत्नविजयजी म.सा.** के साथ गोचरी वहोरने गये और गोचरी वहोरकर उपाश्रय में सभी महात्माओं की दिल से भक्ति करके खूब आनंदित हुए, शायद... अब १-१½ महीने बाद ही सभी से मिलना हो, इसलिए दिल से भक्ति करके मंगल कर लूं...'' इस भाव से खूब भक्ति की।

२६ अद्वितीय श्रवण रुचि...

पहला चौमासा... पहला लोच... बड़े गुरुदेवश्री उनका लोच कर रहे थे। छोटी उम्र होने से पहला लोच कठिन तो होगा ही, इसलिए मुनि मौर्यरत्नविजयजी म.सा. पास बैठकर **पू. भुवनभानुसूरि म.सा.** द्वारा लिखित ''वार्ताविहार'' पुस्तक में से एक-एक कथा रसप्रद शैली में सुनाते गये। ये कथाएँ सुनने में ऐसे डूब गए कि लोच पूरा होने के बाद भी कथा पूरी करके ही आगे के कार्य किये। श्रवण रुचि के बल पर प्रतिकूलता में से पसार होने की गजब की कला उनके पास थी।

शरीर की अस्वस्थता में भी आत्मोन्नति का रस ज्वलंत था। Operation होने के बाद रोज **मुनिश्री यशरत्नविजयजी म.सा.** के पास जाकर वाचना प्रदान करने की विनंती करते थे ''मुझे हितशिक्षा दीजिए।''

मुनि यशरत्नविजयजी म.सा. अद्वितीय कोटि के विद्वान और संवेदनशील मुनि भगवंत हैं, वे विद्यार्थी की क्षमता होने पर दिन में ६-७ घंटे पढ़ानेवाले पाठक मुनिवर है। पठन और लेखन आदि कार्यों में अतिव्यस्त होने के बावजूद बालमुनि की श्रवणरुचि से प्रोत्साहित होकर मात्र उन्हें लक्ष में रखकर **''लक्ष्यवेध''** नाम की हितशिक्षा पुस्तिका लिखी और रोज उस पुस्तक में से एक-एक बिंदु को खोलकर समझाते थे।

बालमुनि ने भी सतत चार महीनों तक रोज १ घंटा उनके पास वाचना ग्रहण करके अपनी अध्यात्मिक भूमिका दृढ़ की। रोज की वाचना सुनने पर भी टिका हुआ अनूठा उत्साह उनकी श्रवणरुचि का प्रमाणपत्र था।

एक बार शारीरिक अस्वस्थता के कारण उनका मन भी जरा अस्वस्थ हो गया था। गुरुदेव ने मुझे कहा ''थोड़े दिनों से बालमुनि की तबियत अस्वस्थ है तो जरा upset हो गए हैं। उनको जरा fresh कर देना।'' उनकी सबसे प्रिय वस्तु से उन्हें स्वस्थ करने का मैंने उपाय ढूंढा। उनकी सबसे प्रिय वस्तु... हितशिक्षा...। थोड़े - थोड़े दिनों के फासले रखकर मैं उनकी जगह पर उनके नाम का हितशिक्षा पत्र रख देता था। थोड़ा मजा लेने के लिए मेरा नाम गुप्त रखकर मुनि श्री निरागरत्नविजयजी म.सा. के पास वह पत्र लिखवाता था, जिनके अक्षरों से बालमुनि अपरिचित थे। उस समय उपाश्रय में ४०-५० साधु भगवंत होने के कारण पत्र लिखनेवाले को ढूंढना बालमुनि के लिए जरा मुश्किल हो गया था, मैं तो उनके पास ही बैठता था, इसलिए मुझे खयाल तो आ गया था कि बालमुनि को यह हितशिक्षा कितनी पसंद आई और मुझे ढूंढने के लिए उत्सुक भी थे। बालमुनि ने मुझे भी उस अनामी पत्र का जिक्र किया और मैं जैसे कुछ जानता ही नहीं, ऐसा दिखावा कर उनकी बातों को सुनता रहा। हर ३-४ दिनों में एक नया पत्र बालमुनि की तरपणी में रख देता ताकि सुबह पडिलेहण के समय पत्र बालमुनि के हाथ आ जाए। इस दौरान बीच में २- ३ पत्रों में मैंने लिखा था कि ''तुम पत्र में अपना प्रतिभाव लिखकर पत्र अपनी तरपणी में रख दो, मैं प्राप्त कर लूंगा।'' उन पत्रों में बालमुनि ने हितशिक्षाओं की अनुमोदना करते हुए सामने आ जाने की विनंति की।

इस तरह प्रायः १ महीने तक लुकाछुपी का खेल चला, अंत में मैं स्वयं प्रकट हुआ। इन हितशिक्षाओं को प्राप्त करते हुए वे ऐसे स्वस्थ हुए कि शारीरिक प्रतिकूलता में भी उनका मन प्रसन्न-प्रसन्न रहता था। एक बात साफ कहना चाहूंगा कि इस लुकाछुपी के खेल में बालमुनि को इतना रस नहीं था जितना हितशिक्षा प्राप्त करने में था, क्योंकि मेरे प्रकट होने के बाद भी हर साल एक बार उन संकलित पत्रों को पढ़ते-

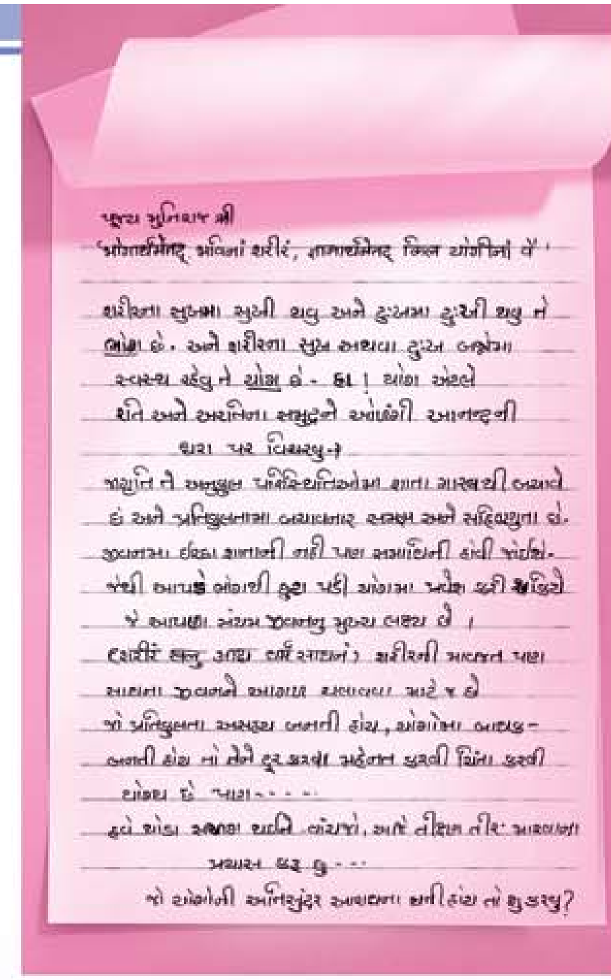

પૂજ્ય મુનિરાજ શ્રી
'ભોગાર્થમિદં ભવિનાં શરીરં, જ્ઞાનાર્થમિદં કિલ યોગિનાં વૈ'
શરીરના સુખમાં સુખી થવું અને દુઃખમાં દુઃખી થવું તે
ભોગ છે. અને શરીરના સુખ અથવા દુઃખ બન્નેમાં
સ્વસ્થ રહેવું તે યોગ છે - હા! યોગ એટલે
શાંતિ અને સમાધિના સમુદ્રને આંબી આનંદની
ધરા પર વિચરવું...
જાગૃતિ તે અનુકૂળ પરિસ્થિતિઓમાં શાતા ગારવથી બચાવે
છે અને પ્રતિકૂળતામાં બચાવનાર સમજ અને સહિષ્ણુતા છે.
જીવનમાં ઈચ્છા શાતાની નહીં પણ સમાધિની હોવી જોઈએ.
જેથી આપણે બંનેથી છૂટા પડી યોગમાં પ્રવેશ કરી શકીએ
જે આપણા સંયમ જીવનનું મુખ્ય લક્ષ્ય છે।
'શરીરં ખલુ આદ્યં ધર્મસાધનં' શરીરની માવજત પણ
સાધના જીવનને આધાર આપવા માટે જ છે
જો પ્રતિકૂળતા અસહ્ય બનતી હોય, યોગોમાં બાધક-
બનતી હોય તો તેને દૂર કરવા મહેનત કરવી ચિંતા કરવી
યોગ્ય છે પણ....
હવે થોડા સમય પછી વાંચજો, [illegible]
પ્રયાસ કરું છું...
જો યોગોની અતિસુંદર આરાધના થતી હોય તો શું કરવું?

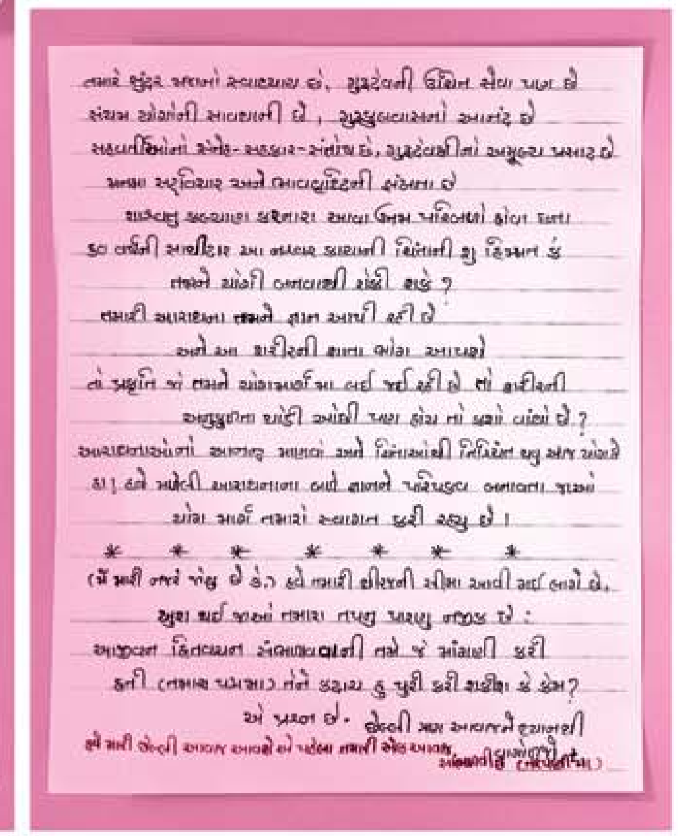

તમારે સુંદર મજાનો સ્વાધ્યાય છે, ગુરુદેવની ઉચિત સેવા પણ છે
સંયમ યોગોની આરાધના છે, ગુરુકુળવાસનો આનંદ છે
સહવર્તીઓનો સ્નેહ-સહકાર-સંતોષ છે, ગુરુદેવશ્રીનો અમૂલ્ય પ્રસાદ છે
મજાના સદ્વિચાર અને ભાવવૃદ્ધિની ઝંખના છે
શાશ્વતું કલ્યાણ કરનારા આવા ઉત્તમ પરિબળો હોવા છતાં
50 વર્ષની આવરદા આ નશ્વર કાયાની ચિંતાની શું કિંમત છે
તમને ઝાંખી બનાવી શકે ?
તમારી આરાધના તમને જ્ઞાન આપી રહી છે
અને આ શરીરની શાતા ભોગ આપશે
તો પ્રકૃતિ જો તમને યોગમાર્ગમાં લઈ જઈ રહી છે તો શરીરની
અનુકૂળતા થોડી ઓછી પણ હોય તો શું વાંધો છે ?
આરાધનાઓનો આનંદ માણવો અને ચિંતાઓથી નિશ્ચિંત થવું એજ યોગ્ય
છે। હવે મોટી આરાધનાના બધા જ્ઞાનને પરિપક્વ બનાવવા [illegible]
યોગ માર્ગે તમારું સ્વાગત કરી રહ્યું છે।
* * * * * * *
(મેં મારી જાતે જોયું છે કે.) હવે મારી શીરની સીમા આવી ગઈ લાગે છે.
[illegible] તમારા તરફ [illegible] છે :
આજીવન હિતવચન સંભળાવવાની તમે જે માંગણી કરી
હતી (તમારા પત્રમાં) તેને કદાચ હું પૂરી કરી શકીશ કે કેમ?
એ પ્રશ્ન છે. [illegible]
[illegible]

पढ़ते खुश होकर मुझे लिपट कर धन्यवाद देते ''आज भी उन हितशिक्षाओं को पढ़कर सच में आनंद आ रहा है, धन्यवाद !''

पत्र के खेल में बालमुनि ने एक पत्र में मुझे लिखा था कि ''इसी तरह आजीवन आप मुझे हितवचनों का पान कराते रहना !'' और कुदरत की करामात से उनकी यह इच्छा भी पूर्ण हुई।

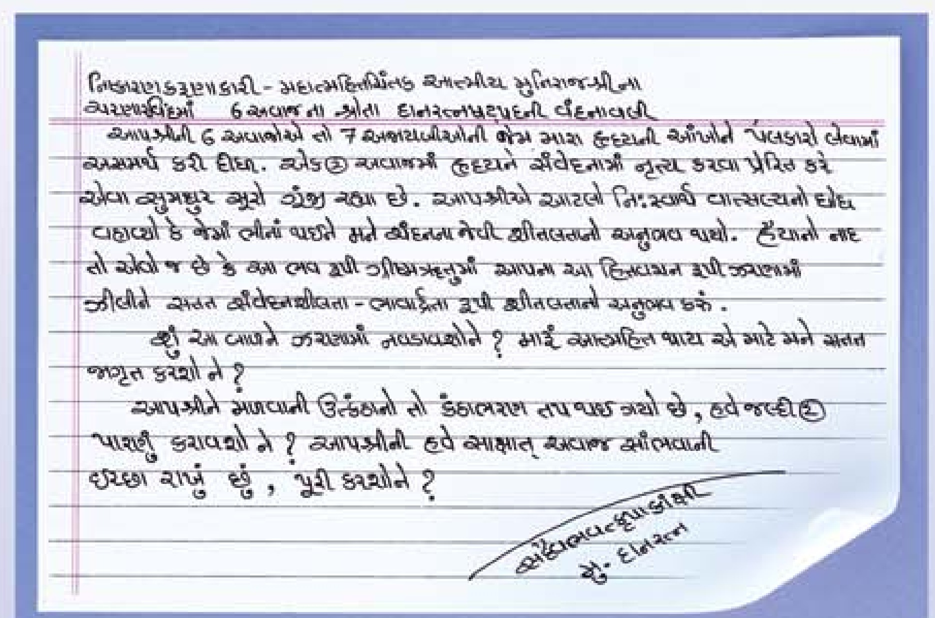

નિષ્કારણકરુણાકારી - મહાત્મહિતચિંતક આત્મીય મુનિરાજશ્રીના
ચરણકમળોમાં 6 સવાજના શ્રોતા દાનરત્નવિજયની વંદનાવલી
આપશ્રીની 6 સવાજોએ તો 7 સજ્ઝાયોની જેમ મારા હૃદયની આંખોને પલકારો લેવામાં
અસમર્થ કરી દીધા. એકે(2) સવાજમાં હૃદયને સંવેદનાથી નૃત્ય કરવા પ્રેરિત કરે
એવા સુમધુર સૂરો ગૂંજી રહ્યા છે. આપશ્રીએ આટલો નિઃસ્વાર્થ વાત્સલ્યનો ધોધ
વહાવ્યો કે જેમાં ભીનાં થઈને મને ચંદનના જેવી શીતળતાનો અનુભવ થયો. હૈયાનો નાદ
તો એવો જ છે કે આ ભવ સુધી ગ્રીષ્મઋતુમાં આપના આ હિતવચન રૂપી ઝરણામાં
ઝીલીને સતત સંવેદનશીલતા - ભાવાર્દ્રતા રૂપી શીતળતાનો અનુભવ કરું.
શું આ બાળને ઝરણામાં નવડાવશોને ? મારું આત્મહિત થાય એ માટે મને સતત
જાગૃત કરશો ને ?
આપશ્રીને મળવાની ઉત્કંઠાનો તો [illegible] તપ પણ થઈ ગયો છે, હવે જલ્દી(2)
પારણું કરાવશો ને ? આપશ્રીની હવે સાક્ષાત્ સવાજ સાંભળવાની
ઈચ્છા રાખું છું, પૂરી કરશો ને ?
[illegible]
મુ. દાનરત્ન

उनकी हितवचन श्रवण की उत्कट पिपासा को धन्यवाद है कि देह की प्रतिकूलता को भी वे भूल जाते थे, उनकी अंतसमय की समाधि भी उनकी जीवनभर की श्रवणरुचि की ही आभारी है।

२७ स्वजन धूनन...

दीक्षा को १½-२ महिने हुए होंगे, तब बालमुनि को वंदन करने हितेशभाई आए थे। किसी ने बालमुनि से कहा ''तुम्हारे पप्पा आये हैं।'' तुरंत बालमुनि ने जवाब दिया ''मेरे पप्पा और आये ? यानि क्या ? मेरे तो पप्पा भी यहीं है और मम्मी भी यहीं है तो उसमें आने की बात कहाँ से आयी ?'' १४ साल की उम्र में इतना तो बोध था ही कि साधु का मम्मी-पप्पा इन संबंधो के साथ मेल नहीं खाता।

३ वर्ष के बाद बालमुनि के संसारी परिवार का अदम्य आग्रह होने के कारण उनके घरांगन में नवसारी संघ में हमारा चातुर्मास तय हुआ, लेकिन बालमुनि के मन में किसी प्रकार का Excitement नजर नहीं आया, उनकी कोई भी प्रवृत्ति या वार्तालाप से ऐसा नहीं झलक रहा था कि उन्हें अपने संसारी निवास स्थान जाकर चौमासा करना इष्ट है। चौमासे का प्रवेश होने के बाद भी कई परिचित लोग आते थे, लेकिन वे किसी के साथ भी बेतुकी बातों में बैठकर समय व्यर्थ नहीं करते थे। औपचारिक बातें करके तुरंत अपने स्वाध्याय की पुस्तक खोलकर बैठ जाते। लोग पगलिए करने के लिए विनति करते लेकिन वे किसी के घर जाने के लिए उत्साहित नहीं थे। गुरुभगवंत आदेश करे उस घर चले जाते... लेकिन स्वयं ने किसी के घर जाने की कोई बात नहीं की।

उनका संसारी छोटा भाई यश भी २ वर्ष तक संयम की तालीम लेने गुरुभगवंत की

निश्रा में रहा, लेकिन ''यह दीक्षा लेकर मेरा शिष्य बनेगा'', ऐसा कोई आनंद या अधिकारभाव उन्हें नहीं था। छोटा भाई रहने आया तब और उसके पहले इन दोनों अवस्था में बालमुनि की मनःस्थिति में कोई फर्क नहीं था।

छोटे भाई के भावों की विशेष उन्नति न होने से उसे संयम स्वीकार करने के परिणाम नहीं जगे और school की पढ़ाई में जुड़ गया, लेकिन बालमुनि के चेहरे की रेखा भी नहीं बदली... मन में किसी तरह का खेद न हुआ। भवितव्यता का विचार कर पूर्व की तरह ही स्वस्थ रहते थे, छोटा भाई साथ में रहा तब और उसके बाद भी बालमुनि की प्रसन्नता यथावत् रही।

इस छोटी उम्र में ऐसा स्वजन धूनन करनेवाले बालमुनि को नमन है।

२८ कर्म की विचित्रता...

किसी भी प्रकार के उपचार कामयाब न होने पर एक होशियार ज्योतिषी को बालमुनि की कुंडली बताई। ज्योतिषी ने कहा, ''इन्हें शारीरिक तकलीफ है, लेकिन क्या है ? यह पता नहीं चलेगा। आप मेहनत कर लो लेकिन अंत तक आप जान नहीं पाओगे कि तकलीफ क्या है ? उनकी ग्रहस्थिति ही इस प्रकार की है।'' हमें जानकर आश्चर्य हुआ, लेकिन पुरुषार्थ जारी रखे। सभी ज्योतिषीयों ने एक बात तो की थी कि ''उनकी कुंडली में आठवें स्थान में राहु बैठा है, अतः जीवन में कसौटी तो भयानक आयेगी, परंतु साथ में Positive ग्रहस्थिति भी इतनी ही दमदार है, वाकई बहुत ही ऊँची आत्मा है। Willpower तो पर्वत जैसा है, सामान्य जीवों से कुछ ऊँचे दर्जे की महानता है इनकी।''

सारी जाँच करने के बाद कुछ हाथ न लगने पर डॉक्टरों के लिए एक ही शरण था... मानसिक बीमारी... अंत में डॉक्टर कहते ''इनको मानसिक बीमारी है, शरीर तो पूरा ठीक है।'' बालमुनि के वर्तन और व्यवहार से हमें लगता ही नहीं था कि बालमुनि को कोई मानसिक रोग हो सकता है। फिर भी डॉक्टरों के कहने से दिमाग के डॉक्टरों से भी इलाज करवाया, लेकिन कोई सफलता न मिली। डॉक्टर से पूछा ''इन्हें'' दिमाग का कौन-सा रोग है ? जवाब मिला ''Anorexia Nervosa'' लेकिन इस रोग के लक्षणों के साथ बालमुनि की स्थिति मेल नहीं खा रही थी। इस रोग में भूख नहीं लगती, लेकिन बालमुनि को तो पूरी भूख लगती थी, इस रोग में मरीज खाने-पीने से हो सके, उतना दूर रहता है लेकिन बालमुनि के जीवन में ऐसा कुछ देखने नहीं मिलता था, दिमाग के दूसरे डॉक्टर को पूछा तो कहा कि ''इन्हें Anorexia Nervosa नहीं है क्योंकि इसके लक्षण मेल नहीं खाते।''

मुंबई के दूसरे डॉक्टरो ने कहा इनके पेट का operation करवाकर गलती की। इन्हें जरुरत ही नहीं थी। हमने हर दिशा में प्रयत्न करके देखे, लेकिन कहीं भी आशा की कोई किरण दिख नहीं रही थी और इस तरफ बालमुनि के शरीर की परिस्थिति धीरे-धीरे बिगड़ती ही जा रही थी, शरीर का वजन ४५ किलो से २५ किलो हो चुका था।

२९

गुरु बहुमान...

मुनि दानरत्नविजयजी म. की तबियत दिनबदिन शिथिल होती जा रही थी, लेकिन प्रसन्नता को आँच न आयी ! नवसारी, आदिनाथ जैन संघ में हमारा चौमासा था। एक दिन बालमुनि को उनकी संसारी माताजी दक्षाबहन वंदन करने आये, उन्होंने बालमुनि से कहा ''महाराज साहेब ! मेरे मन की एक बात कहूँ ?''

''कहो.. ?''

''मुझे बड़े महाराजजी **(आ. पुण्यरत्नसूरिजी)** पर अपार श्रद्धा है। उनके तप-संयम-साधना के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य संभल जाएगा, लेकिन...'' इतना कहकर रुक गये...

''लेकिन क्या ?''

''लेकिन एक मुश्किल काम आपको करना पड़ेगा...''

''वह क्या ?''

''साहेबजी ! महापुरुषों की पवित्रता के प्रभाव से दुनिया भी पवित्र हो जाती है। उनके तप-आत्मबल-आत्मशुद्धि के प्रभाव से मात्र उनके आशीर्वाद ही नहीं लेकिन उनकी वाणी और काया में भी पवित्र शक्ति का पुंज निहित होता है। अरे ! काया ही नहीं काया के मैल में भी ऊर्जा होती है। मुझे पूरी श्रद्धा है, आप अगर बड़े महाराज साहेब के मूत्र को अपना औषध बना दो तो अवश्य आपको लाभ होगा।'' दूसरे ही क्षण में बालमुनि ने जवाब दिया, ''इसमें क्या मुश्किल बात है ? वैसे भी गुरुदेव का ऐसा लाभ तो भाग्यशाली को ही मिलता है। अरे ! मैं तो सोच रहा हूँ कि यह उत्तम विचार आपको आया लेकिन मुझे क्यों नहीं ?''

थोड़े दिन बाद आचार्य भगवंत को ९ उपवास की तपश्चर्या चालू थी, उस समय बालमुनि ने पूज्यश्री को मनाकर रोज सुबह उनके मात्रु को औषध स्वरुप उपयोग करना शुरु किया। प्रायः १ महिने तक इस औषध का सेवन करने बाद बड़े गुरुदेव ने उन्हें मना करके रोका। यह था उनका गुरुबहुमान भाव।

देह को लाभ हुआ न हुआ, लेकिन उनकी आत्मा को अवश्य लाभ हुआ। **इस प्रकार के गुरु बहुमान भाव से उनके अशाता वेदनीय कर्म शिथिल न हो पाये, लेकिन मोहनीय कर्म तो निश्चित तौर से काँप उठा।**

३०

आधी रात में भी लक्ष्य स्थिर...

शरीर की ऐसी परिस्थिति में भी गोचरी वापरना, थोड़ा चलना, दवाएँ लेना वगैरह कार्य होने के बाद तुरंत बालमुनि अपने स्वाध्याय में जुड़ जाते। समय बरबाद करने की तो बात ही नहीं थी, नंदुरबार चौमासे में एक रात बालमुनि की नींद उड़ गई... इतने में **मुनि श्री कुंथुरत्नविजयजी म.सा.** की आँख खुली। बालमुनि ने उनसे पूछा, ''मुझे नींद नहीं आ रही है तो मेरे साथ स्वाध्याय करोगे ?'' उस रात १$^{१}/_{२}$ बजे से ३ बजे तक स्वाध्याय करके नींद आने पर फिर से संथारा किया।

उसी चौमासे में आषाढ सुदी ५ की रात प्रायः १$^{१}/_{२}$ बजे होंगे... सभी साधु भगवंतों की नींद उड़ गयी, ''आ... ह ! आ... ह!'' आवाज आ रही थी। उठकर देखने से पता चला कि बालमुनि पेट दर्द के कारण जोर-जोर से कराह रहे हैं। पूछने पर मालूम हुआ कि रात के १०.०० बजे से ही पेट में दर्द हो रहा है, नींद नहीं आ रही और अब दर्द असह्य हो गया है।

श्रावक डॉक्टर को ले आये। Injection दिया, फिर भी एक घंटे तक वेदना कम नहीं हुई और बालमुनि ''प्रभु... प्रभु...'' की पुकार करते रहे। एक घंटे के बाद मुश्किल से राहत हुई और थोड़ी नींद आयी। १$^{१}/_{२}$ घंटे की नींद के बाद फिर पेट दर्द शुरु हुआ और ''प्रभु... प्रभु...'' का रटन करने लगे। डॉक्टर ने Bottle चढ़ाकर injection लगाये, सुबह Hospital में Admit किया। ३ दिनों के उपचार के बाद स्वस्थ हुए। पेट में infection होने से दर्द हो रहा था।

सारी रात पीड़ा के कारण नींद नहीं आई, लेकिन निःसत्व होकर रोए नहीं ''प्रभु... प्रभु...'' का स्मरण करके सहिष्णुता रखी।

यह घटना शायद एक संकेत था, क्योंकि ठीक १ साल बाद उसी आषाढ सुदी ५ के दिन गोरेगांव में भी ''प्रभु... प्रभु...'' स्मरण करते हुए उन्होंने विदाई ली।

३१ संवेदनशीलता...

ई.सन् २०१८ हमारा चौमासा आदिनाथ जैन संघ, नवसारी में था । आम तौर पर बड़े गुरुदेवश्री अट्ठम तप करके, ३-४ एकासणा करके फिर अट्ठम तप करते, इस तरह पूज्यश्री की अट्ठम तप की हारमाला चल रही थी । लेकिन इस साल एक विशेष बात थी कि अट्ठम तप के पारणे और उत्तरपारणे के अलावा सारे एकासने मात्र २ द्रव्य से ही करते थे, रोटी और सब्जी अथवा दाल । थोड़े एकासने करके फिर से अट्ठम, इस तरह से बहुत अट्ठम हो जाने के बाद एक दिन बालमुनि ने बड़े गुरुदेवश्री को विनति की :-

''साहेबजी ! आज तो कुछ वापरो शरीर की भी थोड़ी संभाल रखो ।''

''मुझे कोई दिक्कत नहीं हैं, ऐसी कोई तकलीफ लगेगी तो मैं वापरुंगा, मुझे नहीं ही वापरना ऐसा कोई नियम नहीं है । अच्छा है, २ द्रव्य में हो जाता है ।'' बड़े गुरुदेव का जवाब सुनकर बालमुनि धड़-धड़ आंसू टपकाते रोने लगे ।

''मैं तो पूरे दिन वापरता रहता हूँ, तो भी कुछ नहीं छूटता, आप तो अट्ठम करते हो, तो भी सब त्याग करते हो ।''

यह उनकी अंदर की आवाज थी, एक गुरुदेव के प्रति स्नेह और दूसरा अपने दोषों का स्वीकार । इन दोनों संवेदनाओं में वे डूब गये और यह अनमोल दृश्य हमारे सामने खड़ा हुआ ।

चौमासे के बाद हम विहार करके सूरत गये, वहाँ हम उमरा जैन संघ में रुके हुए थे । बहुत सारे महात्मा उपाश्रय में एक साथ रुके हुए थे । सभी को बालमुनि के प्रति विशेष प्रेम था । बालमुनि को अस्वस्थता में राहत मिले ऐसे उपचार, आहार-पद्धति आदि बता जाते । एक महात्मा ने आकर बालमुनि को विनती की ''तुम्हारे लिये यह वस्तु अनुकूल रहेगी, मैं गोचरी जा रहा हूँ तो वहोर

लाऊँगा ।'' बालमुनि को वह वस्तु पसंद आयी, परंतु उन्हें पता था कि गुरुदेव को पूछे बिना कोई वस्तु का उपयोग नहीं किया जाता, इसके बावजूद उन्होंने महात्मा को लाने के लिये हाँ कह दिया ।

थोड़ी देर के बाद बालमुनि के मन में खटकने लगा । बालमुनि गुरुदेवश्री के पास आकर बैठे और कहा-''गुरु महाराज ! ये म.सा. मेरे पास आये थे, उन्होंने मुझे यह वस्तु लाने के लिये पूछा और मैंने हाँ कह दी, वे अब लेने गये हैं ।'' गुरुदेवश्री ने कहा- ''इसकी क्या जरुरत है ? इससे तुम्हें कोई फायदा नहीं होगा । व्यर्थ ही यह वस्तु वापर के क्या मतलब ? ये वस्तुएँ लाना, वापरना और रखना इसमें दोष है और पूछे बिना ही बाहर से मंगवाना ये कोई साध्वाचार है ?''

थोड़ी देर तक तो वे सुनते रहे और अचानक रोने लगे । ''मुझे पता है गुरुमहाराज ! यह उचित नहीं है, फिर भी मैंने मंगवायी, मेरी भूल हो गयी, मुझे माफ करो, दूसरी बार पूछे बगैर कुछ भी नहीं मंगवाऊंगा, मुझे मन में खटकने लगा कि आपको पूछे बगैर क्यों मंगवाया ?'' रोते-रोते गुरुदेवश्री के पास अपराध का स्वीकार किया । गुरुदेवश्री ने शांत करते हुए कहा - ''हमारी कहाँ मनाई है ? लेकिन कोई भी वस्तु मंगवाने से पहले पूछ लेना चाहिये, नहीं तो स्वच्छंदता बढ़ती जाती है ।'' गुरुदेवश्री ने उन्हें पुनः स्वस्थ किया ।

स्वयं के अपराध का डंख दूसरे ही क्षण में खटकने लगा और गुरुदेवश्री के सामने जाकर प्रकट किया । इस प्रकार शुद्ध होने की तलब बहुत ही दुर्लभ होती है ।

नाकोड़ा चौमासे में उपाश्रय में काम करनेवाला गोपाल रोजाना की तरह झाड़ू लगाने हमारे Room में आया । मैं और बालमुनि हम दोनों डेंग्यु से पीड़ित थे और गोपाल ने हमारे पास आकर बात शुरु की - ''महाराज साहेब ! मुझे कल गाँव जाना है, लेकिन आप बीमार हो, तो आपके ठीक हो जाने के बाद जाऊँ, कोई काम आ जाये तो ?'' मैंने जवाब दिया - ''नहीं, हमारे लिए कोई रुकने की जरुरत नहीं है । हमारी सेवा तो ये महाराज साहेब करते ही है और दूसरी कोई जरुरत पड़े तो इस धर्मशाला के कर्मचारी हैं ही ।''

बालमुनि ने सहजता से गोपाल को पूछा - ''तुम्हारे घर पर कौन कौन है ? आप क्या करते हो ?'' और जवाब में गोपाल ने स्वयं का इतिहास खोला - ''मेरी पत्नी, २ बच्चे, मेरा भाई जो शांत हो गया है, उसकी पत्नी और बच्चे, इन सबका मैं भरण-पोषण करता हूँ । खेत में काम पर जाता हूँ, पगार मिलता है, उसमें से बचाकर जमा करता हूँ, खर्चा आता है, तो साफ हो जाता हूँ, फिर कमाता हूँ, कर्ज होता है...'' पूरी बात सुनकर बालमुनि की आँखे फटी की फटी रह गयी । उन्होंने दूसरा सवाल किया - ''इतनी कम कमाई और इतने सारे लोग, तो सब्जी का ही खर्चा कितना हो जाय ?''

''सब्जी की क्या बात करते हो, महाराज साहेब ! (हँसते-हँसते गोपाल ने कहा) हम तो रोटी पर तेल, मिर्च-मसाला लगाकर ही खाते हैं । हमारे सब्जी-वब्जी नहीं होती ।''

मकान की परिस्थिति वगैरह आगे-आगे की बातें पूछने पर जो जवाब मिले, वे सुनकर बालमुनि की आँखों के साथ मुँह भी खुला ही रह गया । उसके जाने के बाद वे मुझे कहने लगे ''ये कैसी जिंदगी ? हमें तो जो कुछ भी चाहिये वह श्रावकगण भक्ति से दौड़-धूप करके सवायी सेवा देते हैं और इस बेचारे को तो रोटी के साथ सब्जी अथवा दाल भी नहीं है ।''

उनकी वाणी में पीड़ा थी । किसी का दुःख न सुन सकने की लाचारी थी । समझे हुए प्रौढ़ व्यक्ति को परदुःख में ऐसी पीड़ा देखने को मिलती है, परंतु १७ साल की उम्र में तीव्र रुप से देखने मिले, वह इस कलिकाल का आश्चर्य ही कहलाता है । उस व्यक्ति की प्रतिकूलता सुनने के बाद बालमुनि को स्वयं के जीवन की अनुकूलता भी अखरने लगी, यह उनकी हृदय की कोमलता का प्रतिबिंब है ।

उनकी संवेदनशीलता इतनी उत्कट थी कि मन में भावों का स्पर्श होता और तुरंत ही मुँह पर उसकी स्पष्ट अभिव्यक्ति हो जाती ।

३२ मुंबई में रोगनिदान में निष्फलता...

स्वास्थ्य में कोई सुधार न होने से पूज्य **गच्छाधिपतिश्री** और गुरुदेव **गुणरत्नसूरिजी म.सा.** की आज्ञा से मुंबई जाकर उपचार करवाना निश्चित हुआ। मुंबई पहुँचकर बड़े-बड़े डॉक्टरों से मुलाकात कर रोग का निदान करने की कोशिश की। ३ साल से परीक्षण करते-करते Reports की बड़ी ३ Files इकट्ठी हो गयी थी। Files पढ़कर डॉक्टर भी आश्चर्यचकित हो गये। ''आपने सारे परीक्षण करा दिये परंतु कुछ भी हाथ न लगा, बीमारी तो है, यह बात तो निश्चित है, परंतु पता नहीं चल रहा है।'' अंत में सभी डॉक्टरों की एक ही बात ''इनको मानसिक बीमारी होगी।'' किसी डॉक्टर ने कहा - ''मानसिक बीमारी नहीं है, आप खुराक पर ध्यान दीजिए, इससे सुधार होगा।'' और कोई डॉक्टर कहते - ''इनको पाचन की ही तकलीफ है, आयुर्वेद से इलाज कराओ।'' डॉक्टर एक मत न हुए। हमें ज्योतिषी की बात याद आती रही - ''तुम मेहनत कर लो, लेकिन बीमारी का पता नहीं चलेगा।''

१ महीने तक अलग-अलग डॉक्टरों की मुलाकात लेकर ७ दिन के लिये ख्यातनाम Gastrologist डॉक्टर की देखरेख में Hospital में Admit भी किये लेकिन कोई फायदा न हुआ। भारत में तीसरे नंबर पर जिसका नाम आता है, ऐसे उस पेट के डॉक्टर ने कहा - ''महाराजजी ! आप मुझसे ठीक हो जाओ... तो मुझे विश्व में नोबल अवॉर्ड मिल जायेगा।''

अंत में हमने मुंबई के ख्यातनाम वैद्य देवचंदभाई गाला की दवा शुरु की। वैद्यजी ने हमें कह दिया था कि ''महाराज साहेब ! Case बहुत गंभीर है, फिर भी हम प्रयत्न कर लेते हैं।''

January के बाद उनके स्वास्थ्य में तेज गति से गिरावट आई। March महिने में तो शक्ति इतनी घट गई कि अब पाट के ऊपर से खड़े होने में भी काफी श्रम पड़ता था। जगह-जगह पर वे स्वयं की अशक्ति अनुभव कर रहे थे। उन्होंने स्वयं सहवर्ती से कहा कि - ''शक्ति बहुत घट गई है और खुराक भी पहले से काफी कम लिया जा रहा है, पेट भर जाता है।''

यह फरियाद उनके मन के ऊपर असर न कर दे, इसलिये मैंने बात को टालते हुए कहा कि, ''यह तो अभी Hospital में C.T. Scan के लिये जो Liquid पिलाया था, तबसे थोड़ा पेट पर असर हुआ है। थोड़े दिन में Control आ जायेगा और Normal हो जायेगा। फिर थोड़ी शक्ति भी महसूस होगी।'' परंतु मुझे तो खयाल था कि क्या तकलीफ है।

३३ शल्योद्धार...

मुझे आशंका थी कि बालमुनि के मन में कोई विचार चल रहा है, जो उन्हें निरुत्साही बना रहा है। शाम को प्रतिक्रमण करने से पहले मैंने वार्तालाप शुरु किया और प्रोत्साहन की बातों से Track Change कर दिया। बालमुनि पर असर हो रहा है, ऐसा जानकर बात आगे बढ़ायी। धीरे-धीरे तत्त्वरुचि, मोक्षरुचि, भविष्य की निर्भयता आदि बातों का समावेश करता गया, प्रायः ३०-४० मिनट का समय पसार हो गया।

''श्रेणिक महाराजा विशेष कोई आराधना कर न सके, परंतु प्रभु की वाणी पसंद आ गई और इस पसंदगी के आधार से संसार सागर को सीमित कर दिया।

बालमुनि ! प्रभु की वाणी पर ऐसा सच्चा प्रेम हमने जीवन में अनेक बार अनुभव किया है तो हम उससे ही कृतार्थ हो गये हैं। जीवन में दूसरा भले कुछ न हुआ, परंतु अनंतकाल में नहीं बनी हुई घटना यहाँ हो गई है, प्रभु की वाणी पर प्रेम, इस सच्चे प्रेम की ताकत है कि आनेवाले दिनों में ऊँची अवस्था को प्राप्त कराकर हमें पार उतारेगा।

बालमुनि ! प्रभु की वाणी का, प्रेम का आनंद ऐसा होता है कि दुनिया की कोई भी वस्तु-परिस्थिति की चिंता अपनी प्रसन्नता को कम न कर सके। इसीलिए तो नरक में भी श्रेणिक महाराजा प्रभु के प्रेम के आधार पर साधना कर रहे हैं। प्रभु के मार्ग की पसंदगी का आनंद, संसार सागर से पार उतारने का विश्वास दिलाता है और उस विश्वास में ऐसी शांति छुपी हुई है कि दुनिया के सुख-दुःख मिले या न मिले उसका कोई रंज नहीं होता। अनंतकाल में जो नहीं मिला वह मिल जाने से दुनिया का अपने ऊपर असर कम हो जाता है।

बालमुनि ! यह सम्यक्त्व का धमाका अपने दिल में एक बार तो हो ही चुका है। तो यह घटना ही इतनी आनंददायक है कि दूसरी किसी बात की परवाह ही नहीं करनी चाहिए, दूसरा सब कुछ यूँ ही खींचा चला आएगा।''

ये सारी बातें सुनकर अंत में बालमुनि बोले - ''हाँ ! ऐसी कोई बात हो तो यूं Charge हो जाने का अनुभव होता है।'' बस यह बात सुनकर मैं उनकी परिस्थिति को समझ गया।

परंतु, बालमुनि की नस-नस से वाकिफ गुरुदेव मुखाकृति को देखते ही जान गये थे कि उनको क्या तकलीफ है ? एक दिन दोपहर में Room का दरवाजा बंद करके बालमुनि का हाथ पकड़कर गुरुदेव ने बालमुनि का मन खुलवाया।

गमगीन आँखों से बालमुनि बोले - ''गुरु महाराज ! मुझे ऐसा लगता है कि अब इतनी कम शक्ति से ज्यादा समय नहीं निकलेगा। अब जिंदगी का अंत आ रहा हो ऐसा लगता है।''

''गुरु महाराज ! ज्योतिषी का क्या कहना है ?''

गुरुदेवश्री ने कहा - ''आपने ही तो मुझे पहले उमरा (सुरत) में कहा था कि जो होना है होने दो मुझे कोई चिंता नहीं, तो अब क्यों ढीले पड़ रहे हो ?''

''हाँ ! कहा तो था।''

''बस ! तो अब हिम्मत रखकर शूर बनकर सामना करना है। जो होना है, होने दो। **शरीर शरीर का काम करेगा, आपको अपनी आत्मा को संभालना है।** एक बात समझ रखो कि, हम शरीर को संभालने इस मार्ग पर नहीं आये हैं, आत्मा का लक्ष्य लेकर आये हैं। शरीर को साथ देना होगा तो दे, आपको उसके सामने हाथ नहीं फैलाने हैं। अपनी आत्मा में अनंत शक्ति है। अकेली आत्मा के सहारे साधना करेंगे... शरीर को तो हम पूरी तरह से संभाल ही रहे हैं, आप बस आपकी आत्मा का ध्यान रखो, ज्योतिषी कहते हैं कि ग्रहस्थिति खराब है, इसलिए ऐसा हुआ है। परंतु, आपको अगर जीवन का अंत दिख रहा है, तो अब आगे की तैयारी शुरु कर देनी चाहिए। अब इस जगत की चिंता छोड़कर, इस शरीर का Tension छोड़कर समाधि को दृढ़ बनाना है। इतने में ढीले पड़ जाओगे तो नहीं चलेगा।

अभी तो बहुत कुछ बाकी है। मजबूत बनकर तैयार हो जाओ। शरीर तो यूँ भी आज नहीं तो कल ढल पड़ेगा, उसके पीछे दीन नहीं बनना है, आत्मा अमर है और उसे साधने के लिये ही इस मार्ग पर आये हैं। **अब नश्वर को छोड़ शाश्वत को पकड़ो।''**

गुरुदेवश्री की अमृतवाणी से बालमुनि का मन पुनः जीवित हो गया। उनके मन का शल्योद्धार हुआ और अपने लक्ष्य में सुस्थिर हुए। अब उन्होंने समाधि को अपने जीवन का Target बना दिया था।

८० वर्ष के वृद्ध को भी जब खयाल आता है कि अब मरना पड़ेगा, तब Hospital में हाय - तौबा मचाकर Doctor से भीख माँगता है कि ''मुझे बचा लो...''

जबकि मात्र २० वर्ष की उम्र में मृत्यु को गले लगाने के लिये ये महामुनि अपने मन को तैयार कर रहे हैं।

३४ युद्ध की तैयारी शुरु...

पहले बहुत सारे ज्योतिषीयों को कुंडली बताई हुई थी, परंतु ऐसी मरणांत परिस्थिति आयेगी ऐसा बतानेवाले इक्के-दुक्के ही थे। हमने फिर से एक होशियार ज्योतिषी का संपर्क किया। ज्योतिषी ने इस बार वर्तमान समय की ग्रहस्थिति को ध्यान में रखकर दिग्दर्शन दिया।

जन्मकुंडली में आठवें स्थान पर राहु की उपस्थिति से जीवन संकटमय तो लग ही रहा था, उस पर २४ जनवरी से शनि की पनोती उनको शुरु हो गयी थी और उसमें लोहे का पाया चल रहा था। दिन-ब-दिन स्वास्थ्य शिथिल हो रहा था। ज्योतिषी के हिसाब से अब ज्यादा समय निकाले वैसा लगता नहीं था। ज्योतिषी ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया था कि ''मृत्यु की संभावना लग रही है, सावधान रहना ! ईश्वर को प्रार्थना करो उनके प्रताप से बच भी जायें।''

गुरुदेव ने सभी मुनि भगवंतों को बालमुनि के स्वास्थ्य के संकल्प से विशेष आराधना करने की प्रेरणा की। श्रृंखलाबद्ध शुद्ध आयंबिल, सामूहिक जाप की आराधना शुरु हो गयी। लेकिन हमारे लिये सबसे बड़ी चिंता की बात यह थी कि - ''बालमुनि को इस २० साल की उम्र में मृत्यु का सामना करने के लिये तैयार कैसे करेंगे ?'' गुरुदेव ने अंत समय नज़दीक जानकर सबसे पहले बालमुनि के पास अतिचारों की आलोचना करवायी।

समय कितना है ? इसका हमें कोई ज्ञान नहीं था, इसलिये तैयारी वेग से करनी पड़े वैसा था। गुरुदेव ने रोज दोपहर में बालमुनि की रुम में बैठकर उनकी मौखिक आलोचना लेनी शुरु की। ४-५ दिनों में ही बालमुनि ने सारी आलोचना गुरुदेव को सुना दी। गुरुदेव ने एक-एक बिंदुओं को याद दिलाकर उनकी आलोचना शुद्धि करवाकर आत्मनिर्मलता करवाई। सही मायने में एक गीतार्थ गुरु की अदा से गुरुदेव ने उनकी आत्मजागृति, समाधि और भावोल्लास बढ़ाने की सभी प्रकार की व्यवस्थाएँ कर दी।

गुरुदेव ने अमुक सहवर्ती महात्माओं को व्यक्तिगत सूचन भी कर दिया था कि - ''अब उनको

समाधिप्रेरक बातें, प्रसंग इत्यादि सुनाओ। समय निकालकर उन्हें आत्मजागृति प्रेरक भावनाएँ करवाओ। उन्हें अच्छा लगे उस प्रकार से हितवचन सुनाओ। स्वास्थ्य की देखभाल तो कर ही रहे हैं, पर अब इसकी विशेष जरुरत है।''

बारी-बारी से महात्माओं ने उनको परमात्म भक्ति, अरिहंत शरणागति, आत्मा की पहचान से अभयदशा वगैरह बातें अलग-अलग तरह से सुनानी शुरु की। उनकी श्रवण रुचि अव्वल कोटि की थी, इसलिए ऐसी परिस्थिति में भी वे सभी भावनाओं को आत्मस्थ कर रहे थे।

''अंतिम समय में समाधि टिकाने के लिये मुझे तैयार कर रहे हैं।'' ऐसा पता चलने पर वे घबरा न जायें, इसलिये हम बहुत ही सोच विचार करके स्पष्ट किये बिना उनसे बात करते थे, लेकिन वे तो सामने से कहते कि - ''कभी भी कुछ भी हो सकता है, मुझे सावधान रहने की तैयारी करनी है।'' इतना ही नहीं, सामने से सहवर्ती महात्माओं से कहते कि - ''अब मुझे भावित होना है, मुझे आप सभी ऐसा सुनाओ जिससे अध्यात्म में विशेष रीति से विकास हो। इन दुन्यवी भावों से अब मुझे ऊपर उठना है।''

हम तो घबरा रहे थे लेकिन उन्होंने तो पहले से ही मृत्यु का आलिंगन करने की तैयारी शुरु कर दी थी।

३५

''मेराए ठिओ धम्मो''

''तन निर्बल और मन सबल,
स्वास्थ्य शिथिल और संयम प्रबल।''

यह भाव बालमुनि के जीवन में हूबहू देखने मिलता था।

स्वास्थ्य की कमजोरी के कारण बालमुनि आराधना कम कर सकते थे, परंतु संयम की मर्यादा तो उन्होंने खुमारी से पाली थी।

दीक्षा के पूर्व से ही बालमुनि से परिचित होने से सा. **श्री महावीररेखाश्रीजी म.सा.** और सा. **श्री गुर्वाज्ञारेखाश्रीजी म.सा.** बालमुनि की साता पूछने अकसर आया करते। एक बार वंदन करने के बाद साता-समाचार पूछते थोड़ा समय पसार हुआ, इतने में एक मुनि भगवंत ने आकर एक Printed Pamphlet बालमुनि के हाथ में दिया और इशारा करके साध्वीजी भगवंत को देने के लिए सूचित किया। उसी समय बालमुनि के हावभाव बदल गये। आँखे लाल और मुखाकृति कुछ प्रतापी हो गयी और ''यह काम मेरा नहीं है'' ऐसा बोलते वह pamphlet एक तरफ कर दिया। बात को स्पष्ट करते बालमुनि बोले - ''गुरुदेव को दे दो वे दे देंगे।...'' वे मुनि भगवंत कुछ बोले बगैर ही निकल गये और साध्वीजी भगवंत अहोभाव से छलक गये। बालमुनि की मर्यादा पालन की खुमारी को उनका मन झुक-झुक कर वंदन कर रहा था।

साध्वीजी भगवंत सद्भाववाले हों और उपकारी बने ऐसा छपा हुआ लेख भी हो, परंतु उसके आदान-प्रदान का अधिकार स्वयं को नहीं है। शुभ आलंबन से भी मर्यादा को नहीं उल्लंघने के लिए बालमुनि कृतनिश्चय थे।

मुंबई आकर एक बार Saifee Hospital में बालमुनि की Colonoscopy करवाई। Colonoscopy होने के बाद भी लंबे समय तक बालमुनि को होश न आया। डॉक्टर ने कहा - ''शरीर निर्बल होने के कारण होश में आने में थोड़ा ज्यादा समय लगेगा।'' पीछे से आए हुए सभी मरीज होश में आकर घर जा रहे थे और २ घंटे होने के बावजूद बालमुनि को होश न आया तो डॉक्टर को आशंका हुई और जाँच करते खयाल आया कि उनका Sugar Level एकदम कम - मात्र २२ है। खाली पेट Colonoscopy करनी पड़ती है, इसलिए नवकारसी वापरे बगैर ही ८.३० बजे भर्ती हो गये थे और अब ११.३० बजे ये हालत थी। शरीर इतना कमजोर हो गया था कि नया खुराक न मिले तो शरीर स्वयं टिकने में असमर्थ था।

आपातस्थिति जानकर डॉक्टर ने तुरंत उपचार शुरु किये। बालमुनि के संसारी माताजी यह सब देख घबरा गये। विकट परिस्थिति होने के कारण डॉक्टर ने हमें पूछे बगैर ही नर्सों को काम पर लगा दिया। Glucose की बोतल चढ़ाई। २० मिनिट के बाद थोड़ा-थोड़ा होश आने लगा। हमें भी थोड़ा आश्वासन मिला। बीच-बीच में नर्सें Oxygen level आदि जांच रही थी। मैं पीछे हट गया। स्नेहवश उनकी संसारी माताजी ने मदद करने के लिये पूछा। परंतु अर्धजाग्रत अवस्था में भी बालमुनि ने संसारी माताजी को छूने से इनकार कर दिया।

अर्धजाग्रत अवस्था में भी वे जानते थे कि नर्स मुझे स्पर्श कर रही है, वह परिस्थितिवश है, जबकि संसारी माताजी को छूने की कोई जरुरत नहीं है। बालमुनि की इस जागृति और समझ को देखकर मन आश्चर्यचकित हो उठा कि **पूरा होश न होते हुए भी वे पूरे होश में थे।**

मर्यादा का पालन सजाग रुप से घूंटा था, इसीलिए पूरा होश न होते हुए भी मर्यादा पालन के संस्कार जागृत थे।

उम्र छोटी थी परंतु सूझबूझ का स्तर काफी ऊँचा था।

''मेराए ठिओ धम्मो'' (मर्यादा में धर्म बसता है।)

इस सूत्र का साया उनके जीवन में देखने मिलता था।

३६

Lock Down में खुल जा सिम-सिम...

कोरोना का प्रकोप बढ़ रहा था और प्रशासन ने रविवार के दिन Curfew लगाकर दूसरे दिन से Lockdown का ऐलान कर दिया। एक उपाश्रय में हम १२ ठाणा + पू.आ. **श्री मलयकीर्तिसूरिजी म.सा.** १२ ठाणा + पू. नेमिसूरिजी समुदाय के पू.आ. **श्री राजहंससूरिजी म.सा.** ६ ठाणा, कुल ३० ठाणा Lock हो गये।

महात्माओं को विचार आया और पू.आ. श्री राजहंससूरिजी म.सा. को वाचना देने की विनति की। पूरे २ महिने अस्खलित रुप से उन्होंने भावचारित्र की सुगंध फैलाई। वाचना में भावचारित्र के एक-एक रहस्य को खोल-खोलकर सभी महात्माओं को आनंदविभोर कर दिया।

बालमुनि तो आफरीन पुकार उठे। वाचना में Diary-Pen लेकर बैठते और मन को स्पर्शनेवाले बिंदुओं को लिख लेते।

- बाह्य साधुता ज्ञान का प्याऊ है, अंतरंग साधुता प्रेम का प्याऊ है।

ज्ञान का फल विरति = विशिष्ट रति = प्रेम = जीव प्रीति वह ज्ञान का फल है।

- स्वार्थ के चार सूक्ष्म स्वरुप :-

(१) मुझे कोई दुःख न दे।
(२) मुझे सभी लोग सुख दें।
(३) मेरे दोष कोई भी बोले - देखे - सुने नहीं।
(४) सभी मेरी प्रशंसा करें, मेरे गुण गायें और मुझे आदर दें।

- आप कितनों को पसंद आते हो यह महत्त्वपूर्ण नहीं है, आपको कितने पसंद हैं यह महत्त्वपूर्ण है।
- देह विलय से पहले दोष विलय होना जरुरी है। दोष विलय के बिना का देहविलय दुष्ट मृत्यु है।
- जो कुछ भी अच्छा हुआ वह सब दूसरों से ही हुआ है, यह विचार अहंकार के बल को तोड़ता है।
- उत्तम रस जगेगा, तो अधम रस डूब जायेगा।

ऐसे विचारणीय बिंदु बालमुनि ने अपनी डायरी में अंकित किये थे और अवसर पर उनका वांचन करते थे। पूज्यश्री रोज वाचना के अलावा सुबह जिनालय से लौटते वक्त पहली मंजिल पर बालमुनि से १५-२० मिनिट मिलते, थोड़ी भावनाएँ करवाकर, उनको प्रसन्न करके ही अपने आसन पर बिराजते थे। बालमुनि के मन पर उनकी वाचनाओं का जादू चल गया था। भाव चारित्र की शुद्धि की विचारणा में वे अनेक बार डूब जाते।

एक बार सम्यग्दर्शन का स्वरुप स्पष्ट रुप से सरल भाषा में पूज्यश्री ने समझाया। उसमें परम को पाने की तड़प, परम रस के सामने सभी तुच्छ रस फीके पड़ जाते हैं, वगैरह बातें थी। वाचना सुनने के बाद रोजाना की तरह बालमुनि के आसन के पास आकर पूज्यश्री बैठे और बालमुनि फूट-फूटकर रोने लगे। ''ऐसा सम्यग्दर्शन मुझे कब मिलेगा ?'' उनकी रुदनभरी प्रार्थना सुनकर पूज्यश्री की आँखें भर आई। प्रेम से उनके माथे पर हाथ फेरते हुए आचार्यश्री ने कहा, ''ऐसी अश्रुपूर्ण प्रार्थना से परमात्मा खुश होते हैं। अवश्य यह आपका सम्यग्दर्शन ही है, जो आपको रुला रहा है, रोने को मजबूर कर रहा है।''

पूज्यश्री की वाचना श्रेणी से बालमुनि ने तीव्र गति से भाव जगत की सैर की। उनकी वाचना बालमुनि के लिए खजाने की तरह साबित हुई ''खुल जा ! सिम-सिम...''

भिन्न समुदाय के आचार्य भगवंत होने के बावजूद कभी-भी उन्होंने भिन्नता का अनुभव नहीं होने दिया। ऐसा आत्मीय व्यवहार उनका था। उनकी दो महीने की वाचना बालमुनि के अध्यात्म विकास के लिये खूब उपयोगी बनी। आहार संज्ञा पर विजय पाने के लिये उनका बताया हुआ उपाय बालमुनि को बहुत पसंद आ गया था।

''बालमुनि ! आप छाछ वापरो तब उस श्वेत वर्ण से मैं अरिहंत की कृपा को मुझमें प्रवेश करवा रहा हूँ, ऐसा संकल्प करना। उसी प्रकार अनार के रस में सिद्ध की कृपा, आम रस में आचार्य की कृपा, सब्जी में उपाध्याय की कृपा और इस च्यवनप्राश या वैद्यों की काली दवाओं में साधुओं की कृपा का ध्यान करना, जिससे आसक्ति और आहार संज्ञा वहाँ से छूमंतर हो जायेगी और बालमुनि भी समय-समय पर उन प्रयोगों को खूब भावपूर्वक करते थे।

पूज्यश्री के शिष्य मुनि **श्री नेमिहंसविजयजी म.सा.** रोजाना शाम में सूर्यास्त के बाद बालमुनि को स्वयं के मधुर कंठ से स्तवन, भजन, पद वगैरह सुनाकर प्रसन्नता और उत्साह से भरपूर रखते थे।

वे आध्यात्मिक पद वगैरह बालमुनि के लिये एक उत्सव रुप बन गये थे।

३७ आर्द्रचित्त...

अब बालमुनि अकेले चल सके ऐसी परिस्थिति नहीं थी, इसलिए मुनि भगवंत हाथ और कमर से पकड़कर उनको चलाते थे। ऐसा बहुत बार होता कि वे चलते-चलते खड़े रह जाते और रोते-रोते कहते ''आप सब मेरी कितनी सेवा करते हो? एक माँ की तरह संभालते हो। सचमुच धन्य है आपको, धन्य है आपकी सेवा को।''

कभी कोई काम सौंप कर रो पड़ते और कभी काम की समाप्ति के बाद। उनकी कृतज्ञता इतनी जोरदार थी कि रोती आँखों से अपनी की हुई सेवा का आभार व्यक्त करते।

प.पू. मुनि मौर्यरत्न वि.म. बालमुनि को परमात्मा भक्ति की भावना करा रहे थे और वे दत्तचित्त हो एकरस से सुन रहे थे।

(१) **प्रभु है** - यहाँ नहीं तो अन्य क्षेत्र में और मोक्ष में तो प्रभु हैं ही।

(२) **वे हमें जानते हैं** - केवलज्ञान से हमारे हर एक क्षण को, हर एक अवस्था को संपूर्ण रीति से जानते हैं।

(३) **करुणावंत है** - हम अपने आपको जितना चाहते हैं, उससे कई ज्यादा वे हमें चाहते हैं।

(४) **सर्व समर्थ है** - दुनिया की हर एक आपत्तियों को हमेशा के लिए दूर करने में समर्थ है।

मुक्ति में विराजित परमात्मा अपने केवलज्ञान में हम सभी को देख रहे हैं।

हम अपना जितना हित करना चाहते हैं, उससे ज्यादा परमात्मा चाहते हैं। बस, आँखें मूंद कर उन्हें याद करो, वे तो हमें देख ही रहे हैं। Connection शुरु हो जायेगा। उनका शरण स्वीकारो बस इतनी ही देर है, फिर देखो क्या चमत्कार होता है? ''प्रभु! मुझे कुछ मांगना नहीं है, आपकी जो इच्छा हो वह देना।'' यह प्रभु के अनुग्रह को आकर्षित करने का सूत्र है।

''अचिंतसत्तिजुत्ता हि ते भगवंतो।''

''सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु।''

''होउ मम तुह पभावओ भयवं'' - ये सूत्र ऐसे ही नहीं रचे गये। प्रभु की नजर सतत हम पर है। बस देर है... हमारी नजर उनकी तरफ कर उनका शरण स्वीकारने की।

श्रीकृष्ण जानते ही थे कि द्रौपदी का चीरहरण हो रहा है। लेकिन द्रौपदी ने दिल से शरण स्वीकारी तो पहुँचकर रक्षण किया। सब कुछ तैयार है, बस जरुरत है एक सच्चे दिल से पुकार की।

इस प्रकार अरिहंत शरण स्वीकार की भावना बालमुनि को करवायी और शरण स्वीकार के बल से हुए चमत्कारों को भी सुनाकर भावना दृढ़ करायी। अत्यंत भावनामग्न बनने के बाद वे रोने लगे और कहा - ''ये सब आपके कहने - समझाने से मैं विचारता हूँ लेकिन मुझे स्वयं ऐसे भाव सहजता से क्यों नहीं जगते? मैं अध्यात्म मार्ग में इतना पराधीन क्यों हूँ? क्यों मुझे आपको सुनने से ही भावना जागृत होती है?''

मुनि श्री मौर्यरत्नविजयजी म.सा. ने उनको कहा - ''देखो, आपको तड़प जगी है तो अब आप में निश्चित रुप से यह सब उतरेगा ही। आँखें बंद कर प्रभु को प्रार्थना करो - ये सारे भाव प्रभु आप मुझे देना। सच्चे दिल से की गई एक पुकार काफी है। फिर अनंत भवों तक यह एक पुकार हमें संभाल लेती है। फिर प्रभु का तंत्र सक्रिय बनकर हमारा रक्षण करेगा। अब आप देखते जाओ, प्रभुकृपा क्या होती है?'' इस प्रकार से उनको ३-४ बार प्रार्थना करवाई और अंत के २१/२ महीने में प्रभु का तंत्र सक्रिय बना और उनके अध्यात्मविकास के लिये सारी व्यवस्थाओं का प्रबंध हो गया, वह इस प्रकार...

३८

एक पाप के उदय के बीच अनेक पुण्य का उदय...

डॉक्टरों और वैद्यों का यह मानना था कि - ''महाराजजी इनका Case Science की मर्यादा के बाहर है, इनकी Reports देखकर लगता है कि यह तो संन्यास का प्रभाव है। इनको कोई शक्ति सहाय में हैं, बाकी इस हालत में सामान्य आदमी टिक नहीं पाता। सामान्य आदमी का Sugar Level अगर ४० हो जाये तो बेहोश या Coma में भी चला जाता है और महाराजजी तो २०-२५ Sugar Level में भी मस्ती से हमसे बातें कर पा रहे हैं।''

हाँ, उनको एक पाप के उदय के बीच अनेक पुण्यों का उदय ऐसा था कि साधना, समाधि की हर एक सामग्री सामने चल कर आ जाती। गोवालिया टैंक उपाश्रय में हम रुके हुए थे और सरस्वतीलब्धप्रसाद प.पू.आ.भ. **श्री रत्नसुंदरसूरीश्वरजी म.सा.** एक शाम विहार कर वहाँ पधारे और रात रुककर सुबह में विहार किया। वहाँ आने का दूसरा कोई प्रयोजन न था। मात्र Accident में घायल हुए प.पू.आ. **श्री मयलकीर्तिसूरिजी म.सा.**, बालमुनि **दानरत्नविजयजी म.** तथा प.पू.आ. **श्री राजहंससूरिजी म.सा.** के शिष्य मुनि **भाग्यहंसविजयजी म.सा.** को साता पूछने वहाँ पधारे थे।

एक रात रुकने के लिए पधारकर दोनों ग्लान को Special १-१ घंटे की २ वाचना, अर्थात् कुल ४ वाचना दी। वाचना श्रवण

જે.સુ.૨૪
સાંતાક્રુઝ

વહાલા
બાળ મુનિરાજ શ્રી
દાનરત્નવિજયજી
યોગ્ય,
સાદર અનુવંદના..

દુઃખને
સહન કરવાનું
જે સામર્થ્ય
નારકો પાસે છે
એના અનંતમા ભાગનું
સામર્થ્ય માનવ
પાસે નથી છતાં

દુઃખમાં
સમાધિ રાખવા દ્વારા
પ્રચંડ કર્મનિર્જરા
કરતા રહેવાનું જે
સામર્થ્ય માનવ પાસે છે
એના અનંતમા ભાગનું
સામર્થ્ય પણ
નારકો પાસે નથી..

જવાબ આપો,
પ્રત્યેક સમયે
૫, ૬૮, ૯૯, ૫૮૪
રોગોના ભોગને
૩૩/૩૩ સાગરોપમ
સુધી
સહન કરી ચૂકેલો
એક પણ નારક

આજ સુધીમાં
મોક્ષે ગયો છે ખરો?
જવાબ છે. ના..

જ્યારે
કેવળ એક જ રોગને
થોડાક વરસો સુધી જ
સમાધિ સાથે
સહન કરી ચૂકેલા
કેટલા માનવો આજસુધીમાં
મોક્ષે પધારી
ગયા છે?
જવાબ છે. અનંતા!

મારા
વહાલા દાનરત્નનો નંબર
આજે એ અનંતામાં
આવી રહ્યો છે.

કબૂલ,
ઔદારિક શરીર કે
ખાડા ખાવાવાળ છે પણ
એની પાસે
સંયમ છે, સ્વસ્થ
સમજ છે, સહવર્તીઓનો
ટેકો છે.
અને એના બળે જ એ આજે
કર્મસત્તાને હંફાવી રહ્યો
છે.

મારા
એ વહાલા પરાક્રમી
દાનરત્નને ખૂબ ખૂબ
વંદન - અભિનંદન!

લિ.
રત્નસુંદરના
અનુવંદના

से दोनों की प्रसन्नता-समाधि आसमान छूने लगे।

पूज्यश्री की जादू भरी वाणी से बालमुनि का उत्साह दुगुना हो गया।

''शक्तिकाल में साधना है, और अशक्तिकाल में समाधि है...

साधना में अपवाद है, समाधि में कोई अपवाद नहीं...''

- एक रोग को लानेवाला पाप का उदय है, जबकि मानवभव, संयमजीवन कृपावंत गुरुदेव, स्नेही सहवर्ती, आराधना का लक्ष्य इत्यादि अनेक प्रकार से पुण्य का उदय चल रहा है तो फिर हमें क्यों नहीं लगता कि हम जीवन जीत गये ?

- दुःख का Power तोड़ने का एक ही उपाय है - स्वीकारभाव। स्वीकारभाव आना अर्थात् दुःख मिटकर मात्र कष्ट रह जाता है। स्वीकारभाव न हो तो राई जितना दुःख पर्वत जितना लगता है और स्वीकारभाव हो तो पर्वत जितना दुःख भी राई जितना लगता है।

- कर्म का उदय खराब नहीं है, किसे है ? वह महत्त्व की बात है। चंडकौशिक को फायदे के लिये हुआ और गोशालक को नुकसान के लिये।

- दुःख तो अपनी पूंजी है, उससे किस तरह कमाई करना वह आना चाहिए। समकिती जीव नरक में भी कमाई करता है।

- सिंह हिरण के पीछे दौड़ता है, तब हिरण भाग निकलता है क्योंकि सिंह खुराक के लिए दौड़ता है और हिरण प्राण के लिये। चाहे कैसी भी मुश्किल आये, हम आत्मा को बचा लेंगे, **क्योंकि आत्मा हमारा प्राण है।**

ऐसे अनेक प्रकार के समाधि प्रेरक वचन सुनकर बालमुनि पूरी तरह Charge हो गये।

थोड़े दिनों बाद बालमुनि ने पू.आ. श्री रत्नसुंदरसूरिजी म.सा. को पत्र लिखा कि - ''आपकी २ वाचना से मैं संपूर्ण Charge हो गया हूँ, मेरी इच्छा है कि आप इस प्रकार की समाधि प्रेरक वाचनाओं की एक पुस्तक लिखकर दिजीये, आपका अनंत उपकार होगा।''

थोड़े दिन बाद पूज्यश्री का समाधिप्रेरक पत्र आया। बालमुनि के मन को खूब पसंद आया। उसके पश्चात् रोजाना सुबह बिना भूले पूज्यश्री बालमुनि को १ पत्र लिखकर समाधि के लिये प्रोत्साहित करते और अंतिम दिन तक निरंतर २½ महीने यह पत्रधारा अस्खलित रुप से बहती रही। जिससे उनकी समाधि के लिए उत्तम पीठबल मिला। वे सारे पत्र ''दानने समाधिदान'' नाम की पूज्यश्री की ३५३वीं पुस्तक में प्रकाशित हुए हैं।

यह बालमुनि की इच्छाशक्ति का प्रभाव था कि उस वक्त भले ही समाधिप्रेरक पुस्तक लिखने की अनुकूलता न हुई, तो भी आखिर पूज्यश्री द्वारा समाधिप्रेरक पुस्तक की रचना हो ही गयी।

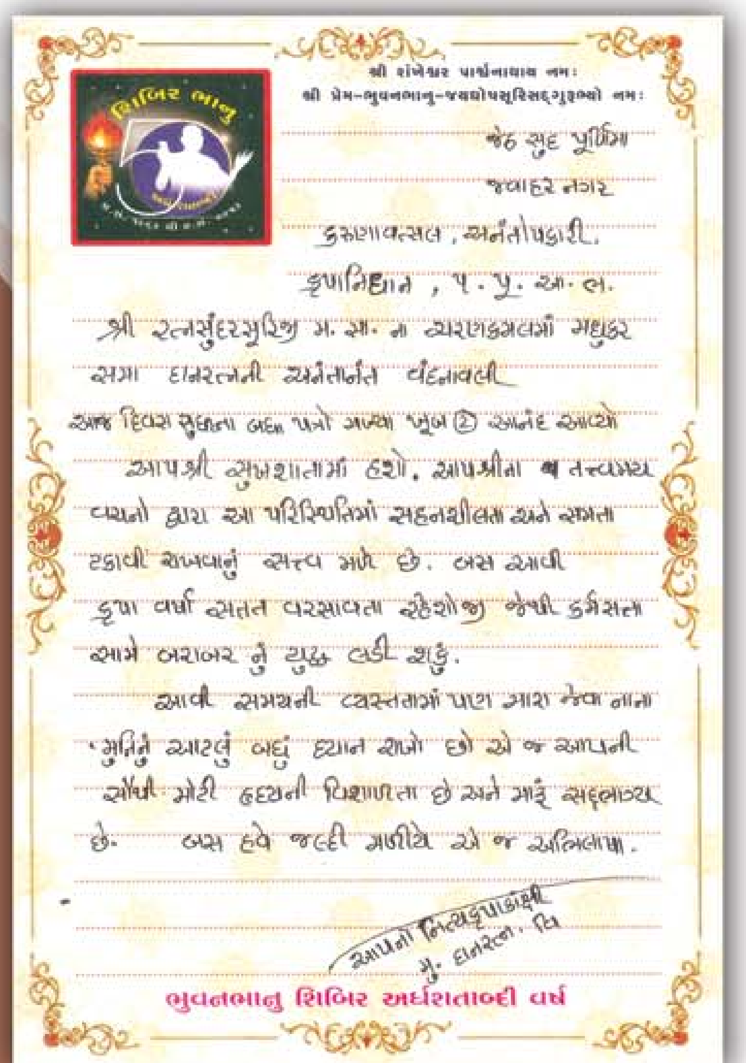
શ્રી શંખેશ્વર પાર્શ્વનાથાય નમઃ
શ્રી પ્રેમ-ભુવનભાનુ-જયઘોષસૂરિસદ્‌ગુરુભ્યો નમઃ

જેઠ સુદ પૂર્ણિમા
જવાહર નગર

કરુણાવત્સલ, અનંતોપકારી,
કૃપાનિધાન, પ.પૂ. આ.ભ.
શ્રી રત્નસુંદરસૂરિજી મ.સા. ના ચરણકમલમાં મધુકર સમા દાનરત્નની અનંતાનંત વંદનાવલી
આજ દિવસ સુધીના બધા પત્રો મળ્યા ખૂબ (2) આનંદ આવ્યો

આપશ્રી સુખશાતામાં હશો. આપશ્રીના તત્ત્વમય વચનો દ્વારા આ પરિસ્થિતિમાં સહનશીલતા અને સમતા ટકાવી રાખવાનું સત્ત્વ મળે છે. બસ આવી કૃપા વર્ષા સતત વરસાવતા રહેશોજી જેથી કર્મસત્તા સામે બરાબર નું યુદ્ધ લડી શકું.

આવી સમયની વ્યસ્તતામાં પણ મારા જેવા નાના મુનિનું આટલું બધું ધ્યાન રાખો છો એ જ આપની સૌથી મોટી હૃદયની વિશાળતા છે અને મારું સદ્‌ભાગ્ય છે. બસ હવે જલ્દી મળીયે એ જ અભિલાષા.

આપનો નિત્યકૃપાકાંક્ષી
મુ. દાનરત્ન. વિ

ભુવનભાનુ શિબિર અર્ધશતાબ્દી વર્ષ

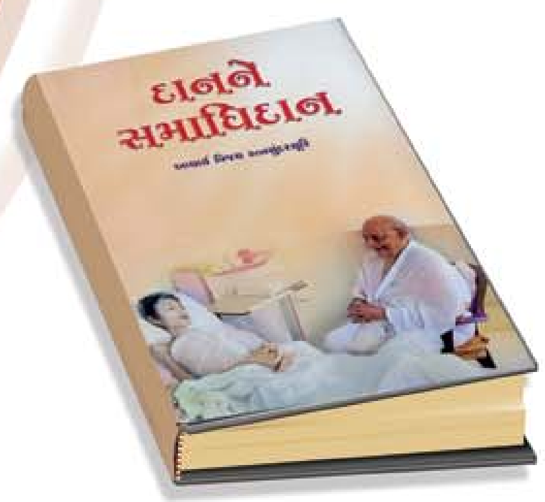

३१ गलती मेरी है...

शाम का समय था... गोवालिया टैंक के उपाश्रय में मैं बालमुनि को हाथ पकड़कर चलाकर Room में ले गया। गुरुदेव से एक दवा के लिए पूछने जाना था। Room में पीछे पाट तो थी पर बैठने के लिए कोई नरम आसन नहीं था और खड़े रहने में कोई तकलीफ नहीं थी। इसलिए बालमुनि को खड़े रहने कहा और मैं गुरुदेव से पूछने गया। मैंने पूछा इतने में तो एक मुनि भगवंत दौड़ते हुए बुलाने आये, ''छोटे म.सा. गिर गये हैं।''

तुरंत हम सभी गुरुदेव सहित दौड़कर पहुँचे। देखा तो दूसरे महात्मा ने उन्हें कुर्सी पर बैठाया था। सिर पर चोट आयी थी और नीचे जमीन पर खून की बूँदे पड़ी थी। ''क्या हुआ ?'' पूछने पर बालमुनि ने कहा, ''मैं खड़ा था और पीछे पाट पड़ी थी। मुझे विचार आया कि बैठ जाऊँ। मैं स्वयं चलकर बैठने गया, उसमें Balance चूक गया और गिर पड़ा।'' सिर से खून बह रहा था, लेकिन मुख पर कोई वेदना या दुःख के निशान नहीं थे। उसी प्रसन्न मुखाकृति से सभी को Smile देकर निश्चिंत होने के लिए कहा।

एक महात्मा ने मजाक में कहा कि 'सारी गलती ये महाराज की है, ध्यान नहीं रखते, इस तरह अकेला छोड़कर जाते हैं ?'तब उन्होंने तुरंत पलटकर जवाब दिया ''**उनकी गलती नहीं हैं, गलती तो मेरी है।** मैं बैठने गया। किसी को बाहर से बुलाया नहीं।

व्यर्थ हिम्मत की तो अब फल तो भुगतना ही पड़ेगा ना ?''

मैंने क्षमा मांगी तो मुझे भी निश्चिंत होकर भूल जाने के लिये कहा। ''आपकी गलती नहीं है, गलती तो मैंने की है।''

गलती तो मेरी ही थी लेकिन उसे भूलकर स्वयं की गलती बनाकर दर्द सहन करने की उनकी बलवान मनःस्थिति को नमस्कार है।

४० समाधि की सुरक्षा...

अकस्मात से तो बच गए लेकिन समय उनके लिए बहुत नाजुक था। ऐसा जानकर दोनों गुरुदेवश्री ने हमें विशेष सावधानी रखने के लिए कहा। बालमुनि के पास बैठकर दिन में २-३ बार देह से भिन्न होने के लिए प्रेरणास्पद उपदेश देकर जिनशासन के आत्मकल्याणरसिक गुरुदेव ने अपना सच्चा फ़र्ज अदा किया और ये सभी शिक्षाएँ बालमुनि को बहुत अच्छी लगती और उसके अनुसार भावित बनकर पुरुषार्थ करते थे। यह बालमुनि के जीव की उत्तमता थी।

गुरुदेव के कहने से अब बालमुनि प्रतिदिन मेरे पास उपमितिभवप्रपंचा ग्रंथ का वांचन और शरीर ज्यादा शिथिल होने पर श्रवण करने लगे। पहला प्रस्ताव पूर्ण रुचि एवं आनंदपूर्वक सुना। सहवर्ती महात्मा उन्हें चलाते समय मनुष्य भव की दुर्लभता के १० दृष्टांत समझाते।

समय-समय पर **मुनि मौर्यरत्नविजयजी** उनके पास बैठकर उन्हें भक्ति योग, भेदज्ञान की भावना कराते थे। इन सभी प्रयत्नों के कारण उनका मन शारीरिक चिंता से दूर होकर आत्मचिंता में जुड़ जाता।

प्रायः उनका एक नित्यक्रम था कि रोज सुबह नवकारसी वापरते समय परमात्मा की स्तुतियों से भावित होना। नेमिनाथ भगवान की स्तुतियों का एक सुंदर संपुट...

- ''इन्द्रियविजयनो चांदलो मुज भाल पर चमकावजो,
  हे नेमिजिन ! मारा हृदयमां शौर्यरस प्रगटावजो।''

और भी अपने मनपसंद स्तवन भक्तिगीतों से पुनः पुनः वे भाव-विभोर होते थे...

- हे ! दीनबंधु, हे ! दीनानाथ, तेरी कृपा से सब है सनाथ,
  अब डोर है तेरे हवाले, तुं चाहे बिगाडे संवारे,
  मैं तेरा हूँ तू ही संभाल,
  तेरी कृपा से सब है सनाथ... हे दीनबंधु...

- हम सब तो कठपुतली हैं, डोर ऊपरवाले के हाथ,
  किनारे पे लगती वो कस्ती नहीं, थी रुक जिसमें तूफान से घेरा नहीं,
  दीया तेरे दिल का जो जलता रहे, तो जहान में कही भी अंधेरा नहीं,
  सिर्फ अपने रोने मत रो, देख औरों के भी हालात डोर ऊपरवाले के हाथ...
- मन उसी की करो प्रार्थना,
  जिसने जीवन दिया, जिसने दी आतमा,
  जो है संसार में सबका परमात्मा, मन उसी की.....
  जग में सबसे बड़ी एक ही शक्ति है,
  उसकी भक्ति से बढ़कर नहीं भक्ति है,
  छल कपट लोभ के सारे संताप से,
  बस उसी की शरण में तेरी मुक्ति है,
  वो हरेगा तेरी यातना... मन उसी की...
- कौन कहता है भगवान आते नहीं,
  मीरा की तरह हम बुलाते नहीं.
- तारा गुणोनी पाट मने आप मारा स्वामी...
- असली है वीर वही जो गिरके खड़ा होता है,
  हस के जो गम सह जाये वो ही बड़ा होता है,
  जितना तपता है सोना उतना खरा होता है... असली है...
- धन धन ते मुनिवरा रे जे जिन आणा पाले,
  राग द्वेष थी मुक्त थईने आतम शुद्धि भाले... धन धन मुनिवरा...
- आत्मा छुं हुं आत्मा छुं,
  हुं देहादिस्वरुप नथी, स्त्री पुत्रादि मारा नथी।
  हुं शुद्ध चैतन्य अविनाशी अेवो आत्मा छुं हुं आत्मा छुं...
  छुटे देहाध्यास तो नहीं करतां तु कर्मनो,
  नहीं भोक्ता तुं तेहनो अेह मर्म छे धर्मनो। आत्मा छुं हुँ...

ये सब मनभावन गीत सुनते-सुनते वे प्रतिकूलताओं का डटकर सामना कर रहे थे। हर एक गीत उनके मन पर दस्तक देकर गहरा असर छोड़ जाता। शक्रस्तव महास्तोत्र का भक्तिपूर्ण गान सुनकर वे भाव विभोर हो जाते।

ये हर एक प्रकार के श्रवण उनके मन के सद्ध्यान के लिए पुष्ट आलंबन बने रहे और उनकी प्रसन्नता निष्कलंक बनी रही।

उन्हें समाधि की इतनी उत्सुकता एवं सजागता थी कि प्रेरणा - हितशिक्षा के लिए अनेक बार अनेक महात्माओं को विनति करते। आखरी एक महीने पहले तबियत ज्यादा खराब हुई तब बालमुनि ने मौर्यरत्नविजयजी म.सा. से खास विनति की, ''मुझे आपकी जरुरत है, आप भी मेरे पास ही रहो।'' विनति करते हुए उनकी आँखें भर आयी।

कोटी वंदन है उन महामुनि को, जिनका प्रतिकूलता में भी सद्ध्यान टिका कर रखने का सतत लक्ष्य रहता और वह सिद्ध हुआ।

४१

सौभाग्य के साथ सद्गुण...

बालमुनि की एक सबसे विशेष आकर्षक बात थी उनका ''सौभाग्य'' । संसारी अवस्था से ही वे जहाँ जाए वहाँ लोग अपने आप उनसे प्रभावित हो जाते थे ।

हमारा चातुर्मास ब्यावर (राजस्थान) था । तब पहली बार हितेशभाई परिवार के साथ पर्युषण की आराधना करने आये थे । संयम की उम्र १० वर्ष की थी । हितेशभाई ने बड़ी मेहनत से उन्हें तैयार किया था । प्रतिक्रमण में पर्युषण की स्तुति, स्तवन, हालरडा, २७ भव का स्तवन, अजितशांति, बड़ी शांति वगैरह सूत्र बोलकर उन्होंने सभा को मंत्रमुग्ध कर दिया । हालरडा और २७ भव के स्तवन के बाद तो प्रतिक्रमण में श्रावक once more once more करने लगे और बहुमान की राशि का तो ढेर कर दिया । एक तो मधुर कंठ और फिर बाल्यवय किसे पसंद न आये ? दूसरे वर्ष तो संघवालों ने हमें विनती की इस वर्ष भी हितेशभाई से कह दीजिये कि दोनों पुत्रों को भेज दें, हमारी आराधना अच्छे से हो जाएगी ।

हमारा चातुर्मास जोधपुर था । वहाँ अध्ययन के लिए संयम साथ ही था । वहाँ के श्रावक राजूभाई श्रीश्रीमाल का हमेशा का एक सवाल मुझे अभी भी याद है -

''संयम ! एक सवाल पूछुं तुझे ?''

''हाँ ! पूछो ।''

''यार ! तू इतना मीठा क्यों है ?''

प्रश्न सुनकर एकदम confuse हुआ संयम, सिर्फ इतना ही जवाब देता - ''यह कैसा सवाल है ?''

संपर्क में आनेवाला हर व्यक्ति उनकी तरफ आकर्षित हो जाए, यह हमारा सामान्य अनुभव था।

मात्र पुण्य नहीं उनका गुण वैभव भी ऐसा ही था कि कोई आकर्षित हुए बिना न रह सके ।

जोधपुर के क्रिया भवन में काम करनेवाले मनोजभाई... प्रतिदिन संयम को नाश्ते में दूध पीने का आग्रह करते-करते थक जाए, लेकिन वह न माने। दूध भाता नहीं था इसलिए दूध पीये बिना ही नाश्ता करता था। बालक होते हुए भी उनका व्यवहार सभी के साथ ऐसा था कि कोई भी व्यक्ति पराया होने पर भी उनके साथ स्वजन की तरह ही व्यवहार करता । फिर भले ही वह नौकर क्यों न हो ?

''तुम छोटे हो संयम ! तुम्हारे शरीर को दूध की जरुरत है, इसलिए पीना पड़ेगा । अच्छा नहीं लगे तो भी पीना पड़ेगा ।''

छोटे भाई की तरह प्रेम से खिलाते और नहीं माने तो आँखे लाल कर डराकर भी खिलाते ।

संयम भी उनकी हितचिंता करके बार-बार उन्हें आग्रह करता - ''आप ये गुटखा कब छोड़नेवाले हो ? मेरे शरीर की चिंता करते हो, आपके शरीर का क्या ?''

लेकिन गुटखा खानेवाला एक बच्चे से तो कहाँ समझनेवाला था ? रोज दूध और गुटखे की नोंक-झोंक चलती । एक दिन आचार्य भगवंत के सामने दोनों का मीठा झगड़ा शुरु हुआ। खूब खींचातानी के बाद संयम अंतिम निर्णय लेकर बोला - '''चलो मैं कल से दूध पीने को तैयार, लेकिन आप अगर गुटखा छोड़ दो, तो कल से मेरा दूध शुरु ।' ऐसे तो गुटखा छोड़ना बहुत कठिन काम था, पर सामने प्रिय व्यक्ति को फायदा होता देखकर व्यसन छोड़ देने तक के लिए यह व्यक्ति तैयार हो गया । मनोज ने भी कह दिया - ''हाँ ! मंजूर लेकिन पहले दूध पी के बता, फिर मैं छोडूंगा ।'' उनका प्रेम का बंधन इतना मजबूत था कि कैसी भी मुश्किल में व्यक्ति खिंचाये बिना नहीं रहे । दोनों पक्षों की संधि हुई।

दूध पीना संयम के लिए भी सरल नहीं था । लेकिन मेरा स्वजन (भले नौकर हो) जो गुटखा छोड़ देता हो तो उसकी व्यसन मुक्ति खातिर रोज़ सजा भुगतने के लिए तैयार हूँ । ये थी उनकी परकल्याण की भावना । ''तकलीफ सहन करके भी किसी का भला होता हो तो मुझे क्या तकलीफ है ?''

उनकी मधुर मुस्कान भी कुछ कम मोहक नहीं थी । पालीताणा चातुर्मास में पू.आ. रश्मिरत्नसूरि म.सा. कई बार संयम से कहते - ''संयम ! तू जब भी मेरे पास आता है मुझे एक ही विचार आता है ।''

''क्या ? साहेब !''

''बस ! कि दीक्षा के बाद तेरा नाम हसमुखरत्न रखना है ।''

बात सुनकर स्वयं संयम हँस पड़ता । सचमुच यह तो उसका सहज स्वभाव ही था कि हृदय कोमल, दिमाग ठंडा और मुख हँसता रखना ।

दीक्षा के बाद विहार करके हम राजस्थान जा रहे थे और गुजरात के कुकरवाड़ा गाँव में हमने दिनभर विश्राम किया । उस गाँव के एक प्रौढ़ श्रावक सुरेशभाई जिनकी राजनीति - प्रशासनिक पहचान अच्छी थी, उपाश्रय में आए । आचार्य भगवंत के पास बैठे और १ घंटे बाद उन्होंने अपनी २ पेन निकालकर विनति की ''साहेबजी ! यह Pen मुझे बालमुनि को वहोरानी है । मैं देख रहा हूँ यह बालमुनि एकाग्रतापूर्वक स्वाध्याय कर रहे हैं, खूब आगे बढ़े, ऐसी भावना है ।''

बालमुनि को Pen की विनति करते कहा - ''महाराज साहेब ! ये Pen ग्रहण करो। आप इससे लिखो। प्रवचन देते हो ? स्वयं को प्रवचन देने की practice करो। विचार-चिंतन किया करो । जिससे आप में योग्यता विकसित होगी । फिर जब आप बड़े होकर सैंकड़ों की सभा में उद्बोधन दोगे तब मुझे और मेरी इस Pen को याद करोगे। अभी गुरुदेव के पास ज्ञानार्जन करो !''

कोई परिचय नहीं - वार्तालाप नहीं, दर्शन मात्र से प्रभावित होकर सभी उनके भक्त बन जाते थे ।

पू. गुरुदेव **श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा.** की निश्रा में हम सांचोर पार्श्वशांति धाम की प्रतिष्ठा के लिए गए और प्रतिष्ठा के बाद सांचोर गाँव में कुछ दिनों की स्थिरता थी। ठंडी के दिनों में हम वहाँ से विहार करके आगे जा रहे थे। उपाश्रय से नीचे उतरे और सांचोर संघ के मुख्य ट्रस्टी नीचे खड़े थे। कोई पहचान न होते हुए उन्होंने गुरुदेव से कहा - ''महाराज साहेब ! एक विनति है, यह छोटे म.सा. की उम्र बहुत कम है, इसलिए बहुत ध्यान रखना, खास विनति है, बहुत ध्यान रखना !'' हमें आश्चर्य हुआ कि पहली बार देखा है और १ मिनिट के दर्शन से ये भाई इतने अनुरागवाले कैसे हो गये। लेकिन यह तो बालमुनि की विशेषता थी कि परिचय बिना ही सभी को परिचित बना देते थे।

उनका कंठ इतना मधुर था कि एक बार जो सुनता वह बार-बार उनकी गायी हुई स्तुति, स्तवन या सज्झाय सुनने के लिए लालायित रहता। श्रावकों को प्रतिक्रमण में आने की प्रेरणा करें तो कई श्रावक शर्त रखा करते कि बालमुनि स्तवन या सज्झाय बोलेंगे तो मैं आऊँगा और बालमुनि भी ध्यान रखते कि ऐसे श्रावक प्रतिक्रमण करने आये हों तो स्तवन / सज्झाय का आदेश मांगना नहीं चूकते।

बालमुनि के मुख से स्तवन सुनने के लिए अकसर साधु-साध्वी भगवंत उनके चैत्यवंदन के समय मंदिर में हाजिर हो जाते। बालमुनि को ख्याल आ जाये कि मुझे सुनने आये हैं तो उन्हें सुनाई दे इस तरह से गाकर उनकी इच्छा पूर्ण करते। श्रोता उनके स्तवन सुनते-सुनते दुनिया भूल जाते।

बालमुनि के साथ जिसने भी एक दिन का सहवास किया हो उनके हृदयपटल पर वे अंकित हो जाते।

पू.पं. **लब्धिवल्लभविजयजी म.सा.**, मुनि **श्री तीर्थबोधिविजयजी म.सा.**, मुनि **श्री यशरत्नविजयजी म.सा**, मुनि **श्री त्रिभुवनरत्नविजयजी म.**, मुनि **श्री त्रिपदीरत्नविजयजी म.**, मुनि **श्री ज्ञानरुचिविजयजी म.**, मुनि **श्री बोधिसत्त्वविजयजी म.सा.** आदि अनेक साधु भगवंतों का उनके साथ आत्मीय संबंध था। हमारा एक विशेष अनुभव रहा है कि उनके साथ निकटता रखनेवाले हर एक महात्मा उत्तम रसवाले ही थे। बालमुनि ने भी कभी विकथा-पंचायत आदि में रस रखकर किसी के साथ संपर्क नहीं रखा, मात्र स्वाध्याय - गुणानुराग - सहायकभाव आदि के कारण ही किसी से भी संपर्क रखा था।

पू. गुरुदेव **श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा.** के अतिरिक्त पू. गच्छाधिपतिश्री **जयघोषसूरिजी म.सा.** भी बालमुनि की अत्यंत संभाल लेते थे। समय-समय पर उनकी तबियत के समाचार लेकर उपचार के लिए सलाह देते थे। मुंबई के डॉक्टर को खास कहकर बालमुनि की जाँच के लिए सूरत भेजा था। उन्होंने बालमुनि के संकल्प से जाप आदि आराधना करके खूब कृपा बरसायी थी।

सरस्वतीलब्धप्रसाद प.पू.आ.भ. **श्री रत्नसुंदरसूरीश्वरजी म.सा.** अभी तो बालमुनि से मिले भी नहीं थे, उससे पहले अन्य महात्माओं के मुख से उनका गुणानुवाद सुनकर मिलने के लिए उत्कंठित हो गए थे और उनकी अस्वस्थता जानकर, मिले न होने पर भी अनेकवार समाधि प्रेरक पत्र लिखकर उपकृत किया था। २ वर्ष के बाद पहली बार जब बलसाणा तीर्थ में बालमुनि

से मिले, उसके बाद उन्हें स्वयं ऐसा अनुभव हुआ कि जैसे भवोभव की प्रीति हो, अपूर्व आत्मीयता का संवेदन हुआ। करोड़ो लोगों को प्रवचन द्वारा मंत्रमुग्ध करनेवाले पूज्यश्री ने स्वयं बालमुनि को पास बिठाकर ३-४ घंटे तक उनकी आत्मकथा मस्ती से सुनकर आनंद लिया और उनके मधुर कंठ से स्तवन-सज्झाय सुनकर तृप्ति का अनुभव किया। उसके बाद पूज्यश्री ने जो कृपा बरसायी, उसका बयान इस पुस्तक ने कर दिया है।

पू.आ.भ. **श्री कुलचंद्रसूरिजी म.सा.** अपना स्नेहभरा हाथ हमेशा उनके माथे पर फेरते थे। उनके समाचार लेते रहना, उनके संकल्प से जाप करके वासक्षेप भेजना, यह उनकी कृपा का नित्यक्रम था।

प्रायश्चित्तदाता पू.आ.भ. **श्री जयसुंदरसूरिजी म.सा.** ने बालमुनि के कंठस्थ सूत्रों के पुनरावर्तन के लिए ७ दिन का Time - Table बनाकर आलोचना में दिया था। इसके लिए वे बार-बार आभार व्यक्त करते थे। बहुत आनंद एवं उत्साह के साथ उसका पालन करके स्वयं का स्वाध्याय - पुष्प महकता रखा। पूज्यश्री की कृपा का यह अनोखा तरीका था।

मुनि **हंसबोधिविजयजी म.सा.** गोवालिया टेंक संघ में ३ माह साथ रहे। उन्हें बालमुनि से इतना लगाव हो गया कि दिन में ३ बार उन्हें गोचरी का लाभ देने की विनति करते थे। बालमुनि को भी उनकी भक्ति अनुकूल लगी, इसलिए रोज उन्हें बुलाकर गोचरी का लाभ देते थे। इतने दीर्घ पर्यायवाले होने पर भी मुनि हंसबोधिविजयजी म.सा. ने उनकी खूब दिल से सेवा की। एक बार तो स्वयं जाप कर रहे थे, इतने में उन्हें समाचार मिले कि बालमुनि गोचरी के लिए याद कर रहे हैं। उसी क्षण आधी नवकारवाली रखकर अधूरा जाप छोड़कर, जाप के वस्त्र बदले और तरपणी आदि लेकर हाजिर हो गए।

''बोलो बालमुनि ! क्या लाभ दोगे ?'' वे ग्लान थे, बात सच है पर उनका गुणमय व्यक्तित्व सभी को ज्यादा आकर्षित करता था।

मुनि **श्री अक्षयकीर्तिविजयजी म.सा.**, मुनि **श्री संवेगकीर्तिविजयजी म.सा.** अच्छी मजेदार कहानियाँ सुनाकर घंटों तक उन्हें प्रसन्न रखते थे।

बालमुनि का पुण्य ही ऐसा था कि, वे जहाँ जाते वहाँ सामने से उन्हें अनुकूलताएँ हो जाती। मैं और बालमुनि बलसाणा गाँव से बाहर विश्वकल्याण तीर्थ में जा रहे थे। तभी घर के बाहर कपड़े धो रही एक बहन दौड़ती हमारे पास आयी और कहा - ''महाराजजी ! इनको कोई भी जरुरत हो तो मुझे कहना, मैं सारी तैयारी कर दूंगी।'' उसी तीर्थ के सामने एक ढाबा था। उस ढाबेवाले ने विनति की, ''महाराजजी ! मेरे यहाँ हर वस्तु बनती है, आप जो चाहो कहना, आपकी तबियत के हिसाब से मैं सब बराबर बनाऊँगा, लेकिन जरुर कृपा करना।''

राजस्थान की भोली-भाली ग्रामीण प्रजा को तो कैसे भूल सकते हैं जो ''टाबर बावसी ! टाबर बावसी !'' बोलते-बोलते बालमुनि को टुकुर-टुकुर देखा करती।

ऐसे तो अनेक प्रसंग बने जहाँ सामने से लोग आकर हर प्रकार की सेवा करने के लिए तत्पर बन जाते थे।

यह बालमुनि का एक विशेष प्रकार का सौभाग्य था कि हर एक व्यक्ति को उनके प्रति लगाव हो जाता था।

४२ मुझे कुछ सुनना है...

''हिरण्य म. ! जल्दी उठो...''

करीब रात के १ बजे स्वयं के नाम की आवाज़ सुनकर मुनि हिरण्यरत्नविजयजी नींद से उठे। उठकर देखा तो हमेशा पाट पर बैठनेवाले बालमुनि नीचे जमीन पर बैठे हैं, मैंने उनका सिर पकड़कर रखा है और मुनि हिरण्यरत्न म. को उठाने के लिए उन्हें पुकार रहा हूँ। तुरंत ही महात्मा ने उठकर बाजू में सोये हुए अरुणभाई और जंबूभाई को जगाया। दृश्य देखकर तो सब हक्के-बक्के रह गए।

बालमुनि के सिर से खून निकल रहा था। मैं उनके घाव को दबाकर खून बंद करने का प्रयत्न कर रहा था। नीचे जमीन पर खून की बूंदे पड़ी थी। गुरुदेव को उठाकर बुलाया गया। गुरुदेव भी शीघ्रता से वहाँ पहुँचे तब First Aid चल रहा था। पूछने पर पता चला कि बालमुनि रात को जागने के बाद मेरे सहारे पाट पर से खड़े होकर रोज़ की तरह थोड़ा आगे चल रहे थे। पर आज पैरों में कमजोरी ज्यादा होगी इसलिये शायद पैर उठा नहीं और एकाएक दोनों घुटने मुड़ गए। उसी समय मेरे हाथ से उनका हाथ छूटा, मैं नीचे झुककर उन्हें पकड़ूं उससे पहले ही बालमुनि अपने शरीर पर काबू रखने में असमर्थ होने से पीछे की तरफ गिर पड़े और सिर जमीन पर टकराया।

यह सब मात्र १ second में हुआ होगा और नारियल फूटने जैसी आवाज के साथ बालमुनि को सिर पर चोट लगी और खून बहने लगा। ऊपर की मंजिल से आ. श्री राजहंससूरिजी म.सा. के शिष्य मुनि श्री मलयगिरिविजयजी म.सा. को Dressing के लिए बुलाया। डॉक्टर ने फोन पर कहा कि ''Dressing करके ठंडा सेक करो, दर्द में राहत होगी। कल सुबह आकर देखूंगा।'' बालमुनि को Dressing के लिए बैठाया, उन्होंने कहा, ''गुरु महाराज! आँखों के आगे अंधेरा छा रहा है, सिर में दर्द हो रहा है, Please जल्दी करो, बैठा नहीं जा रहा।'' झटपट Dressing करके उन्हें सुला दिया। दर्द के कारण उन्हें नींद नहीं आ रही थी। हम दोनों मुनि जमीन की सफाई वगैरह में व्यस्त हो गये। उन्होंने कहा ''मौर्यरत्न म. को बुलाओ, **मुझे कुछ सुनना है।**'' रात के २½ बजे का समय होगा। महात्मा बुलाने गए उससे पहले ही मौर्यरत्नविजयजी म.सा. की अचानक नींद खुली। (Telepathy !!) ऐसा कमजोर शरीर, इतनी गंभीर चोट और आधी रात में बालमुनि को शुभध्यान टिकाने की झंखना थी। इसे कहते हैं ''असमाधि की Allergy।''

मुनिश्री ने भेदज्ञान, लक्ष्य की स्पष्टता और परमात्मा की शरण स्वीकारने की भावना करायी। बालमुनि लगभग आधा घंटा श्रवण करके स्वस्थ हुए। फिर मुझे बुलाकर कहा, ''आप चिंता नहीं करना, आपकी कोई भूल नहीं है यह तो परिस्थिति ही ऐसी थी। आप मन में जरा भी अफसोस मत करना। आप निश्चिंत हो जाइये।'' फिर उन्हें नींद आने लगी, इसलिए सो गये। दूसरे दिन मैंने उन्हें पूछा कि ''आप गिरे, तब क्या विचार आया ?'' उन्होंने कहा, ''उस समय सिर का मुख्य भाग टकराया था, इसलिये मुझे लगा, आज कुछ गड़बड़ न हो जाये।'' अब ऐसा लगता है कि उस समय प्राण उड़ जाने का आभास उन्हें हुआ होगा और समाधि टिकाने के लिए ही आधी रात में भी पू. मौर्यरत्नविजयजी म.सा. को बुलाने के लिए कहा।

आधी रात को भी पीड़ा का अनुभव करते हुए मन को स्वस्थ, स्थिर रखने की जागृति उनकी थी। लक्ष्य तो कितनों का होता है, लेकिन मौके पर लक्ष्य को भेदने की जागृति किसी-किसी की ही होती है।

४३ अभी तो बहुत कुछ बाकी है...

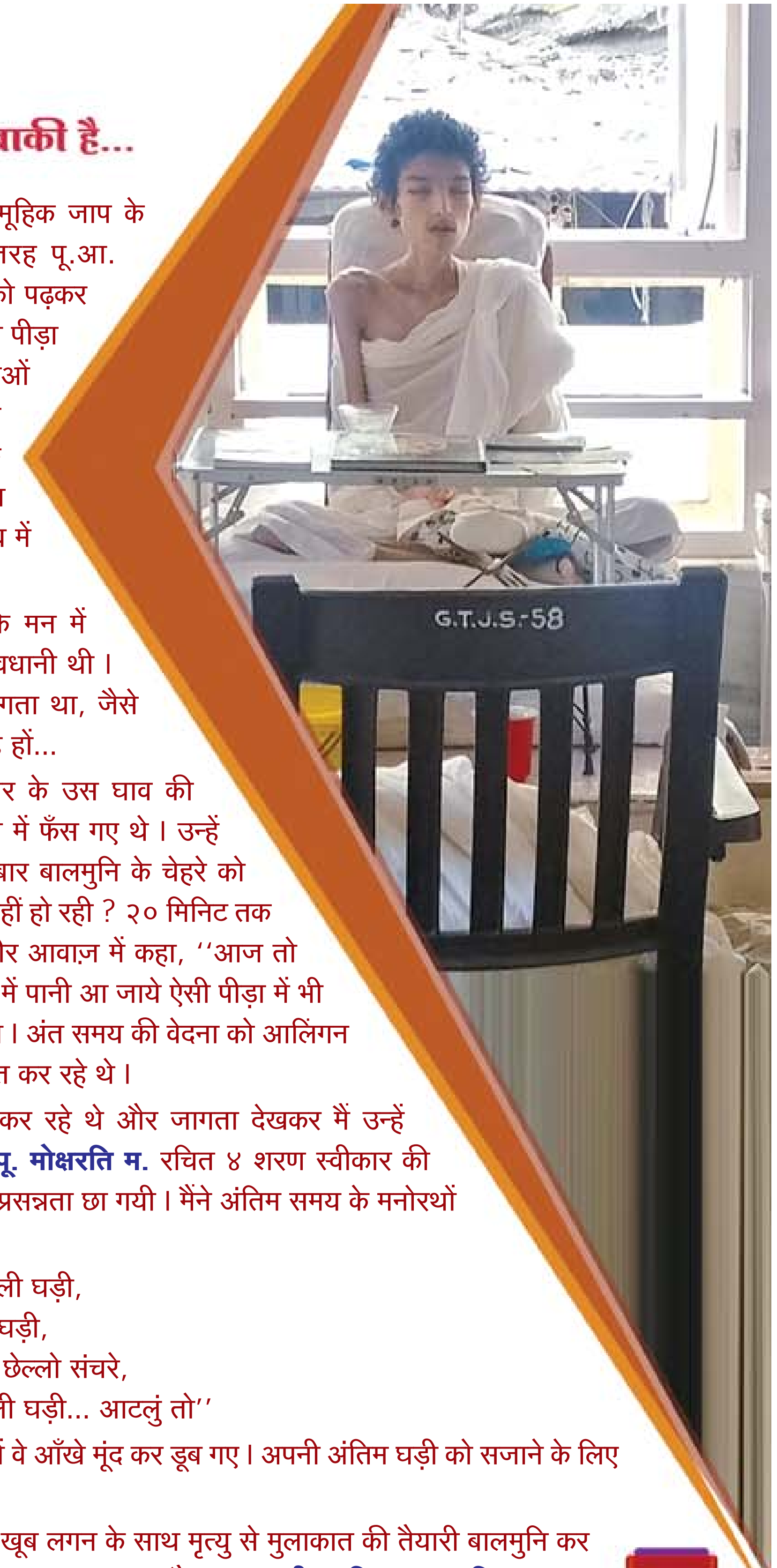

दूसरे दिन सुबह सभी महात्मा सामूहिक जाप के लिए आ गये। जाप के बाद रोज की तरह पू.आ. **श्री रत्नसुंदरसूरि म.सा.** का पत्र बालमुनि को पढ़कर सुनाया। उसके बाद रात को गिर जाने पर भी पीड़ा से समाधिपूर्वक पसार हुए उसकी सभी महात्माओं ने अनुमोदना की। उस वक्त बालमुनि ने जवाब दिया, ''उसमें क्या हुआ, अभी तो बहुत कुछ बाकी है।'' उनके जवाब के पीछे एक दृश्य छुपा हुआ था। एक दृश्य जो स्वयं के अंतिम समय में होनेवाली वेदना को बता रहा था...

पर इस दृश्य को देखते हुए उनके मन में घबराहट नहीं, गंभीरता थी। चिंता नहीं सावधानी थी। उनकी कितनी प्रवृत्तियों को देखकर ऐसा लगता था, जैसे अंतिम समय को लक्ष्य बनाकर जीवन जी रहे हों...

४-५ दिन बाद रोज की तरह सिर के उस घाव की Dressing चल रही थी। सिर के बाल घाव में फँस गए थे। उन्हें निकालने में मुश्किल हो रही थी और बार-बार बालमुनि के चेहरे को notice किया जा रहा था कि उन्हें पीड़ा तो नहीं हो रही ? २० मिनिट तक Dressing चली, फिर पूछने पर उन्होंने गंभीर आवाज़ में कहा, ''आज तो बस आँखें भीग जानी ही बाकी थी।'' आँखों में पानी आ जाये ऐसी पीड़ा में भी मुख पर किसी प्रकार की विकृति नहीं आने दी। अंत समय की वेदना को आलिंगन करने के लिए वे अपनी सहिष्णुता को उत्तेजित कर रहे थे।

दोपहर में वापरने के बाद आराम कर रहे थे और जागता देखकर मैं उन्हें प्रोत्साहक स्तवनादि सुनाने नज़दीक बैठा। **पू. मोक्षरति म.** रचित ४ शरण स्वीकार की गुजराती स्तुतियों को सुनकर उनके मुख पर प्रसन्नता छा गयी। मैंने अंतिम समय के मनोरथों से भरा हुआ गीत सुनाना प्रारंभ किया।

''आटलुं तो आपजे भगवन् मने छेल्ली घड़ी,
ना रहे माया तणा बंधन मने छेल्ली घड़ी,
हाथ पग ज्यारे निर्बल हशे ने श्वास छेल्लो संचरे,
तुं आपजे शांति भरी निद्रा मने छेल्ली घड़ी... आटलुं तो''

शांत एवं धीमे स्वर में चल रहे गीत में वे आँखे मूंद कर डूब गए। अपनी अंतिम घड़ी को सजाने के लिए दिल से प्रार्थना में लग गए।

यह दृश्य देखकर मुझे खुशी हुई कि खूब लगन के साथ मृत्यु से मुलाकात की तैयारी बालमुनि कर रहे हैं। सामान्य दृष्टिवाला मनुष्य तो कमजोर पड़कर टूट जाता है। **पर यह वीर मुनि मृत्यु पर विजय प्राप्त करने के लिए खूब ही समझदारी से शस्त्र सज्ज कर रहे थे।**

४४

अकोउहल्ले जे स भिक्खू

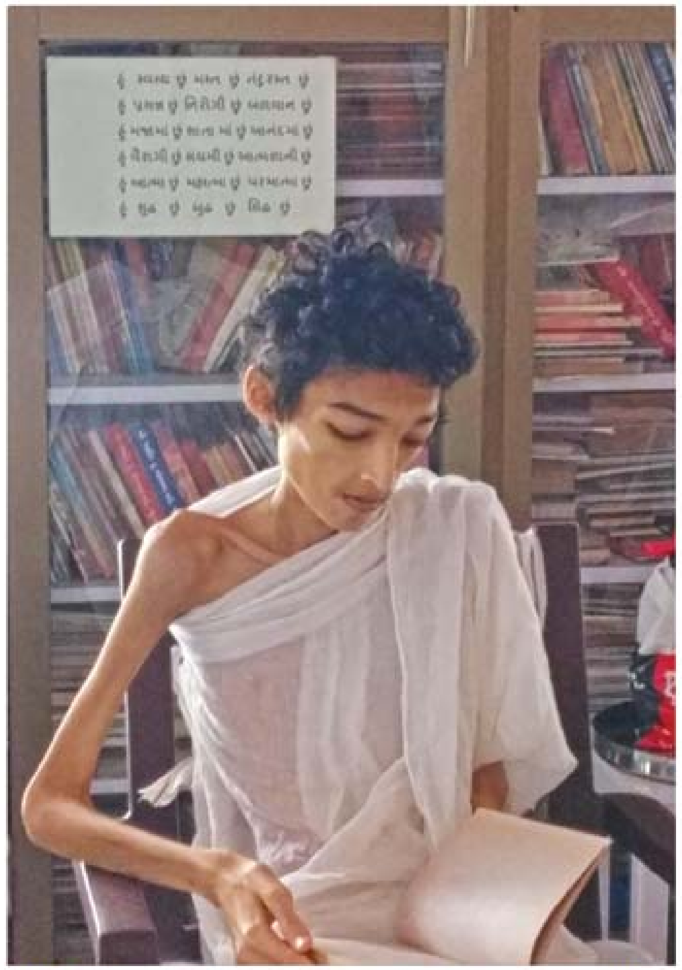

बालमुनि का एक जबर्दस्त गुण था निर्विकल्पता। उनकी सार संभाल के लिए गुरुदेव जो उपचार करे उसके विषय में निर्विकल्पता । अब कौन से डॉक्टर की दवा लेनी है ? कोई फर्क नहीं पड़ रहा तो दूसरे से इलाज कराना है? यह वैद्य पहले से ज्यादा अच्छे हैं । दूसरों को उनसे फायदा हुआ तो मुझे भी उन्हीं की दवा लेनी है। Allopathy लेनी है या आयुर्वेदिक ? इत्यादि अनेक विकल्पों से वे दूर थे । गुरुदेव सिर्फ इतना कहें कि, ''अपने को इनको बताने जाना है'' बस इतने में बात पूरी । फिर कौन डॉक्टर है ? कैसा है ? किसने सलाह दी है ? गुरुदेव जो डॉक्टर, जो दवा, जो इलाज बतायें बस वही करना, फिर उस अनुसंधान में कोई ऊहापोह नहीं । एक दर्दी के लिए इतना निश्चिंत होना बहुत कठिन है ।

इतना ही नहीं Doctor, वैद्य, ज्योतिष या तांत्रिक हो, उनकी जाँच के बाद वे Room से बाहर जाए फिर गुरुदेव उपचारक (उपचार करनेवाले) के साथ बात करे, ''क्या है ? कैसा इलाज करना है ?'' पर मेरी गैरहाजरी में क्या बात हुई, यह जानने का कोई कुतूहल नहीं । गुरुदेव के साथ तो बच्चे की तरह खुले दिलवाले थे पर कभी भी ये नहीं पूछा कि, ''मेरे जाने के बाद क्या बात हुई ? उन्होंने क्या कहा ? मुझे क्या तकलीफ है ? मैं अच्छा तो हो जाऊंगा ना ? बहुत चिंता की बात है ? इस प्रकार के प्रश्न तो कभी किये ही नहीं । ऐसे अनेक प्रकार के कुतूहल से तो वे दूर ही थे । दशवैकालिक सूत्र याद आ रहा है -''

''अकोउहल्ले जे स भिक्खू'' जो कुतूहल से दूर है वह साधु है ।

सूरत में Doctor ने Operation किया उसकी कोई जरुरत ही नहीं थी, ऐसा मुंबई के निष्णात डॉक्टरों का अभिप्राय जानने के बाद, ''उस Doctor ने मेरी आँतों की व्यर्थ ही चीर फाड़ की, मेरा शरीर बिगाड़ दिया, उसी के कारण और ज्यादा बीमार पड़ रहा हूँ।'' ऐसा तो कभी कहा ही नहीं, उसकी निंदा भी नहीं की ।

वे जानते थे कि जो मेरे कर्म विपरीत नहीं होते तो कोई मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकता । यह भी जानते थे कि वह डॉक्टर सच्चा हो या नहीं पर मुझे तो सच्चा साधु बनना है ।

४६

दुष्कृत गर्हा सुकृत अनुमोदना...

कालधर्म के ३ माह पहले की बात है... हम Gowalia Tank रुके हुए थे । बालमुनि के शरीर की शक्ति सतत घटती जा रही थी और खुराक भी कम होते-होते अब इतना कम हो गया था कि एक साथ ३ चम्मच से ज्यादा नहीं वापर सकते थे, पेट भर जाता था। बहुत बार उनका Sugar Level कम हो जाता था, इसलिये वैद्य ने ऐसी परिस्थिति में शरबत वापरने का निर्देश दिया था । बालमुनि को पसंद आये ऐसे शरबत का Powder जयणापूर्वक उत्पादन करनेवाले एक श्रावक के यहाँ से जंबूभाई ने मंगवाकर उन्हें ४ Packet बताये । पसंदीदा शरबत का Powder देखकर पहले तो वे खुश हुए फिर दूसरे ही पल में मुख के हाव भाव बदलकर मुझे कहने लगे ''यह क्या है ? देखो यह क्या आया है ?''

''क्या आया ?'' मैंने पूछा ।

''यह पुद्गल आया है, पुद्गल !'' इतना कहकर हाथ में रहे Packet Table पर फेंक दिये और कहा, ''ये पुद्गल है, फंसानेवाला है, अब १५-२० मिनिट पहले तो हाथ में लेना ही नहीं, चलो थोड़ा Round लगाकर आते हैं ।'' मेरा हाथ थामकर उपाश्रय में चलने लगे । अपने मन में उत्पन्न हुए राग की परख कर रहे थे कि राग हुआ है तो ''मन को थोड़ी राह देखने दो ! २० मिनिट पहले मन को उसकी पसंदीदा चीज नहीं हीं दूंगा ।''

चलते-चलते हम गोचरी मांडली में पहुँचे । वे वहाँ भी कहने लगे, ''गुरु म.सा. यह देखिये ! ४-४ पुद्गल आये हैं फंसाने के लिए । **एक पुद्गल में कितनी ताकत है अपनी आँख में चमक ला देता है ।''**

स्वादिष्ट वस्तु में राग होना सहज घटना है लेकिन उत्पन्न होते राग में नहीं फंसने की जागृति थी उनमें !!! वे ज्यादा वापर नहीं सकते थे, लेकिन वपराते ३-३ चम्मच में भी होते राग के लिए वे जागृत थे और बार-बार दुष्कृत गर्हा मन से और हमारे सामने वचन से भी करते थे ।

उन्हें उनके सुकृतों की अनुमोदना करानी पड़ती थी, क्योंकि वे स्वयं सुकृत करके भूल जाते थे । एक दिन अशक्ति के कारण थोड़े अस्वस्थ थे । मैंने पास जाकर जरा स्वस्थ करने के लिए थोड़ी बातें की, फिर उन्हें याद कराया -

''बालमुनि ! जानते हो ? हम सभी लाखों में एक हैं ।''

''क्यों ?''

''अरे ! लाखों नहीं, करोड़ों में एक हैं ।''

''लेकिन कैसे ?''

''देखो, आपका जन्म हुआ तभी लाखों का जन्म हुआ होगा, लेकिन इस तरह से जैन कुल में संस्कार मिलना, उत्तम गुरुदेवों से मिलाप होना, छोटी उम्र में संयम मिलना, ये सब तो आपके जैसे किसी को ही भाग्य से प्राप्त होता है और मिलने के बाद भी गुरुदेव की आज्ञा का उल्लंघन हो ऐसा तो एक भी कदम उठाया ही नहीं । संपूर्ण जीवन गुरु की आज्ञा की मर्यादा में ही व्यतीत किया है । ऐसा तो करोड़ों में एक को ही मिलता है ना ?'' मुस्कान के साथ मुँह हिलाते हुए मेरी बात स्वीकारी ''हं...'' मैंने आगे कहा ''शुरुआत के ३ वर्ष तक आपने राजस्थान, मेवाड़ के हर स्थान में

गुरुदेव के साथ विचरण किया। ओलीयाँ की और उसमें निर्दोष आयंबिल किये। कल क्या मिलेगा इस चिंता के बिना मस्ती से निर्दोष संयम का आनंद लिया था।'' उन दिनों को याद करते उनके मुख पर चमक आ गई, मुख प्रसन्नता से खिल उठा।

''अब अनुमोदना करो उन दिनों की, उन हुई आराधनाओं की। याद करो प्रारंभ के तीनों चातुर्मास में हम सभी सुबह पाठ में बैठ जाते थे। गुरुदेव को नवकारसी में वापरने के लिए पानी आप वहोरकर लाते थे। करो अनुमोदना...'' मीठी मुस्कान के साथ वे अनुमोदना में मग्न हुए।

''किसी प्रकार के विकल्प के बिना आजीवन एकासना का अभिग्रह लिया था। परिस्थिति बदली, लेकिन आपने तो आजीवन एकासना का लाभ ले लिया। गुरुदेव की इच्छा से ३ उपवास किये... ३ वर्ष तक सुदी ५ के उपवास किए... पिछले वर्ष तक गुरुदेव के सभी लोच किये...''

जब भी गुरुदेव को शाम में वापरना हो तब ज्यादातर आप ही गोचरी ले आते...

रोज दूसरी बार गोचरी लाना हो तो आपने ही ६-७ मंजिल चढ़कर गोचरी लाकर महात्माओं की भी उत्तम भक्ति की है...

३ वर्ष तक मात्र पानी में ही काप निकाला है, साबुन का उपयोग नहीं किया...

गुरुदेव के काप के पीछे ही अपना काप निकला है, स्वयं का Special अलग से काप नहीं निकाला...

गुरुदेव के उतरे हुए कपड़े ही पहने हैं, स्वयं नये कपड़ों का उपयोग नहीं किया।

''हाँ! कितना कुछ किया है, मुझे तो ध्यान ही नहीं, ये तो आपने याद कराया... मजा आ गया...''

''बस तो अब अशक्ति है तो शक्ति काल में की हुई आराधनाओं की अनुमोदना के मजे उड़ाओ।''

''प्रवृत्तिकाल में साधना निवृत्ति काल में समाधि'' सरस्वती लब्धप्रसाद **पू. रत्नसुंदरसूरीश्वरजी म.सा.** के इन वचनों को अमल कर बताया। उनके सुकृत अनुमोदना में भी यह विशेषता थी कि जब अंतिम दिनों में उनके सुकृत उन्हें याद कराकर मैं प्रशंसा करता, तब वे कहते ''वह सब तो ठीक है'' और जब दूसरे महापुरुषों की अनुमोदना करता, तब एकदम प्रसन्नपूर्वक एकचित्त से सुनते। **अर्थात् सुकृत अनुमोदना एवं स्व प्रशंसा इन दोनों में भेदरेखा वे अच्छी तरह से जानते थे।**

आसक्ति और अहंकार को मिटाने और अशुभ अनुबंधों को शिथिल करने के लिए दुष्कृत गर्हा का एक मार्ग... वैसे ही हताशा-निराशा को दूर करके सकारात्मक चेतना की पुष्टि करने तथा शुभ अनुबंध को दृढ़ बनाने का दूसरा मार्ग है सुकृत अनुमोदना...

इन दोनों मार्ग में सम्यक् रीत से चलकर बालमुनि अपनी प्रतिकूलताओं को भूल जाते थे।

''धन धन ते मुनिवरा रे! जे जिन आणा पाले।
राग द्वेष थी मुक्त थईने आतम शुद्धि भाले॥''

४७ बालमुनि ने आखरी बार...

कालधर्म के महीने पहले की बात है...

जवाहर नगर जैन संघ में हम आए, चातुर्मास प्रवेश हुआ। पहले दिन सागरभाई ने बालमुनि के स्वास्थ्य अनुकूल वस्तु वहोराकर लाभ लिया, पर उसके बाद कितने ही दिनों तक उन्हें लाभ नहीं मिला। क्योंकि अब उन्हें उस वस्तु का लाभ देने का संयोग नहीं था। फिर भी वे रोज उपाश्रय आकर आग्रहपूर्ण विनंति करते, पर खप नहीं होने के कारण मना करना पड़ता था। एक दिन तो उन्होंने खूब विनति की और मेरे समझाने पर भी वे माने नहीं। ५-१० मिनीट तक विवाद चला, फिर बालमुनि ने सागरभाई को अपने पास बुलाकर कहा, ''एक मिनीट बैठिए...'' वे बैठे। ''मैं कहता हूँ वह सुनो'' इतना बोलकर बालमुनि स्वयं के मधुर कंठ से मंद स्वर में थोड़ा श्रम करके गाने लगे...

''जीरण शेठजी भावना भावे, महावीर प्रभु घेर आवे...
उभी शेरीए जल छंटकावे, जाई केतकी फूल बिछावे.''
निज घर तोरण बंधावे, मेवा मिठाई थाल भरावे... महावीर प्रभु घेर आवे...

धीरे-धीरे ऐसी २ कडीयाँ गाई। सुनकर सागरभाई तो वहाँ ही संतुष्ट हो गए। उनका मीठा कंठ सुनकर प्रसन्न हो गए।

''देखो सागरभाई! भगवान के ४ महीने के उपवास के पारणे की भावना जीरण सेठ ने भाई थी और पारणा कराए बिना ही भावना से उनका कल्याण हो गया। आपको लाभ भले नहीं मिला, पर रोज आपकी इस भावना से जीरण सेठ की तरह आपका भी आत्मकल्याण हो चुका समझो।'' सागरभाई को संतोष हो गया। गोचरी का लाभ नहीं मिला, पर बालमुनि ने अपनी मीठी वाणी से उन्हें प्रसन्न कर दिया। मना करने से उनके मन में पीड़ा होगी, इसलिए पीड़ा का निवारण कैसे करना इसका सटीक उपाय ढूंढ निकाला।

बालमुनि का कंठ इतना मधुर था कि बड़े-बड़े आचार्य भगवंत भी उन्हें फरमाईश करते कि ''एक स्तवन अथवा सज्झाय सुनाओ...'' । मुझे लगता है यह सागरभाई का सौभाग्य था कि - जिनके लिए बालमुनि ने २ कड़ी गाकर सुनाई क्योंकि **यह आखरी प्रसंग था कि बालमुनि ने गायन किया हो।** इसके बाद गा सके, ऐसी शक्ति ही नहीं रही थी।

४ महिने पहले गोवालिया टैंक में जब हम रुके थे, तब बालमुनि का चलना-फिरना चालू था। वहाँ के श्रावक प्रतीकभाई एवं उनकी श्राविका सीमा बहन के सुपुत्र **मुनि श्री गुणहंसविजयजी म.सा.** के पास दीक्षित है और मजे की बात तो यह है कि उनके बेटे महाराज भी बालमुनि है। इन बालमुनि की दीक्षा तिथि के दिन उनके संसारी माताजी सीमाबहन उपाश्रय में आए। वैसे तो रोज **मुनि दानरत्न म.सा.** को वे Fruit juice वहोराते थे, पर आज बदाम का सीरा लेकर आए थे।

मुनि दानरत्नविजयजी ने कहा ''आपको तो पता ही है मेरा पाचन खूब कमजोर है, मुझे यह बदाम का सीरा नहीं पचेगा। सीमा बहन ने कहा, ''यह आपके लिए नहीं बनाया, निर्दोष है। आज मेरे बेटे महाराज की दीक्षा तिथि है, इसलिये हमारे घर में बदाम का सीरा बनाया है, निर्दोष है, लाभ दीजिए।''

उनकी भावना होने से प्रतिकूल होते हुए भी बालमुनि ने आधा चम्मच सीरा उन्हें संतुष्ट करने के लिए वहोरा और वापरा।

बेटे महाराज की दीक्षा तिथि होने से बालमुनि की भावना उन्हें संतोषकारक लाभ देने की थी पर आधे चम्मच से ज्यादा सीरा वे वापर नहीं सकते थे, इसलिए उतना ही वहोरा। स्वयं बिमार थे, इसलिए उपाश्रय में लाई हुई गोचरी बालमुनि को लेनी पड़ती थी, पर दूसरे महात्माओं के लिए अकल्प्य थी, इसलिए सीमा बहन के जाने के बाद वैयावच्च तत्पर **मुनि श्री हिरण्यरत्नविजयजी म.सा.** से बालमुनि ने कहा, ''चलो हम सीमाबहन के गृहमंदिर में दर्शन कर आते हैं और उनके घर में गोचरी का भी लाभ दे देते हैं। आज भले उनके बेटे महाराज यहाँ नहीं है, चैन्नई हैं पर आज उनके घर जाकर हम लाभ देंगे तो उन्हें बहुत खुशी होगी।''

मु. दानरत्नविजयजी म. का ऐसा भाव था कि यह श्राविका मेरी इतनी सेवा-भक्ति करते हैं तो आज उनके भावोल्लास में वृद्धि करना मेरा फर्ज है। सीढ़ियाँ चढ़ने की शक्ति नहीं थी, पर वैयावच्चनिष्ठ मुनि हिरण्यरत्न वि.म.सा. उन्हें उठाकर दर्शन करवाने ले गए। अचानक बालमुनि के पदार्पण होने से सीमा बहन के आनंद का पार न रहा। बालमुनि ने उनके हाथ से सीरा वहोरा।

यह सीमा बहन का सौभाग्य था, क्योंकि यह अंतिम प्रसंग था कि **दूसरे महात्माओं की भक्ति करने के लिए ही आखरी बार वहोरने गए थे।** हकीकत में तो मैं अपने आपको सौभागी मानता हूँ, क्योंकि बालमुनि मेरी भक्ति करने के लिए ही आखरी बार वहोरने गए थे और उन्होंने वह सीरा मुझे ही वपराया था। उनका यह अंतिम प्रसाद याद रहेगा।

दान संवेदन

प्रशमपयोधि समता सागर, प्यारे हमारे दानमुनिवर !,
दिल तो आपका फुल-सा कोमल, जिसमें प्रेम का सागर हर पल...

कर्ण आपके चाहे पल-पल, हितवचनों का मधुरा झरमर,
चरण आपके दौड़ते आगे, भक्ति में श्रम सभी न लागे...

उपकारी के उपकारों का, हुआ स्मरण तब देखा हर पल,
नयन आपके बहते झरमर, संवेदन घट जाये भर भर...

खुद के दोष पर ऐसे रुठे, पश्चाताप की अग्नि फुटे,
औरों के गुण देखी हरखे, दोष किसी का कभी न परखे...

मुख पर ऋजुता ऐसी झरती, युगलीक जीव की तुलना करती...
कर्म उदय से रोग भी आया, कोई उपचार काम न आया...

शाता पुछने जो भी आवे, मुखमुद्रा देखी आनंद पावे...
कभी कोई फरियाद न करते, सम्यग् प्रज्ञा देवी को वरते...

आये उपसर्ग सामने जब-जब, मंदर के सम अडिग रहे तब...
मैं भी तो हूँ अंश प्रभु का, सर्वस्वीकार है पंथ प्रभु का...

मैं तो आतम शुद्धस्वभावी, प्रभुजी मेरे परम प्रभावी...
भावना ऐसी मन में भाते, कर्म सभी मन में शरमाते...

तन की शक्ति घट घट जावे, आतम घट शक्ति छलकावे,
आखिर आपको हमने खोया, काल भी उस दिन खूब था रोया,

इस घटना की हुई खुदाई, नियती देवी सामने आयी...
देख पराक्रम हर्ष तो होता, लेकिन गम में दिल भी रोता...

सदियाँ चाहे बीत भी जाए, ऐसा करके कौन दिखाए...
जब जब सूरज चाँद रहेगा, **त्रिभुवन** के मन **दान** रहेगा ।

४५ एगोऽहं नत्थि मे कोइ

बालमुनि बाह्य जगत से निडर थे इतना ही नहीं, उन्हें अपने प्रियजनों के वियोग का भी दुःख नहीं था । गोवालिया टैंक उपाश्रय में रोज की तरह गुरुदेव बालमुनि के पास आकर बैठे । उनके साथ थोड़ी बातें की, स्वास्थ्य के समाचार लिये और देह चिंता से परे होने का उपदेश दे रहे थे। एकाएक अधूरे वाक्य में गुरुदेव रुक गए... बोलना बंद हो गया... आँखें छलक गयी... गुरुदेव को रोना आ गया । मुझे समझ आ चुका था गुरुदेव क्यों रो रहे हैं ? अंत समय के लिए बालमुनि को तैयार कर रहे थे लेकिन 'अंतसमय' और 'बालमुनि' यह Combination देखकर गुरुदेव को रोना आ गया । ६ वर्ष तक माँ की तरह संभाला तो स्नेह बंधना स्वाभाविक है । बालमुनि भी समझ गए थे कि गुरुदेव की आँखें अश्रुपूरित क्यों है । वे भी होशियार थे पर शांत चित्त से गुरुदेव को रोते देख रहे थे । एक माँ की तरह उन्होंने गुरुदेव की ऊंगली पकड़ रखी थी । अपना तन-मन उन्हें समर्पित किया था । वे गुरुदेव से कभी अलग नहीं हुए थे, सिर्फ १ बार १ सप्ताह के लिए और मुंबई आते समय १$^1/_2$ महिने के लिए। दोनों बार रोते-रोते गुरुदेव का हाथ छोड़ा था । पर अब किसी प्रकार का खेद उनके मुख पर नजर नहीं आ रहा था । वे जानते थे कि मेरे अंतसमय की कल्पना से गुरुदेव रो रहे हैं और मुझे भी शायद हमेशा के लिए उनसे अलग होना पड़ेगा । अब सब छूटने ही वाला है, यह उन्होंने अपने मन में स्थिर कर लिया था और उसके मोह से परे हो गए थे । यह मैंने मेरी नजरों से देखा है । **उन्हें अपने प्रियजनों के वियोग का थोड़ा भी डर न था, इस हद तक अपनी समाधि टिका कर रखी थी ।**

उपाश्रय में चक्कर लगाते हुए मैंने उन्हें दिल की बात पूछी ।

''तुम क्या सोच रहे हो ?'' आत्मीयता के कारण उन्होंने कहा कि ''अब कभी भी कुछ भी हो सकता है...''

''तो चिंता हो रही है ?''

''हाँ !''

''क्या होगा ? यहाँ से छूटकर कहाँ जाना होगा ? वहाँ कैसी परिस्थिति होगी ? ये सभी छूट जाएंगे । ऐसी कोई चिंता ?''

''ना, ऐसी कोई चिंता नहीं, सिर्फ मुझे हर २-३ घंटे में वापरना पड़ता है । तो विचार आता है कि अब क्या अनुकूल आएगा ? क्या वापरुं ? ऐसे विचार ज्यादा आते हैं और ऐसे विचारों में जो प्राण निकले तो मेरी क्या गति होगी? बस उसी की चिंता है । मुझे अब इससे उत्तम रस उत्पन्न करना है, जो प्राणांत के समय मेरा रक्षण करे ! बस! उसी की चिंता है ।''

उनके इस वार्तालाप से स्पष्ट होता है कि उन्हें अपनी सद्गति की ही चिंता थी, बाकी इहलोक छूटने की कोई चिंता नहीं थी ।

४६

औरों को भी समाधि...

बालमुनि की तबियत ज्यादा नाजुक होती गयी। Lockdown होने से लोगों का आना जाना बंद हो गया था। लगभग २ माह से उन्हें वंदन करने उनके संसारी मातुश्री दक्षाबहन आ न सके। उनकी तबियत के कारण चिंतामग्न रहने लगे। उन्हें बालमुनि की ढलती अवस्था के समाचार मिलते रहते थे। अब तो चलना भी बहुत कम हो गया था, इसलिए वे बहुत चिंतित रहने लगे।

बहुत बार जंबूभाई को फोन करके बालमुनि की साता पूछाकर रोने लगते। एक वक्त उनकी असमाधि देखकर बालमुनि ने जवाब दिया। ''आप इतनी चिंता मत करो, क्योंकि आपके चिंता करने से अथवा रोने से जो मैं स्वस्थ हो जाऊँ तो दुनिया में किसी को दुःख आता ही नहीं। इन्द्र जिनकी सेवा में उपस्थित हो ऐसे प्रभु महावीर को भी जो १२ $^1/_2$ वर्ष उपसर्ग से कोई बचा न सका, तो मेरी यह हालत है उसमें आश्चर्य क्या ?

याद रखना, ये डॉक्टर, वैद्य या आप सब भी मेरा कुछ भला कर सको ऐसा नहीं है। मात्र 'अरिहंत' एक ही शरण है। दूसरा कोई इस दुनिया में शरण नहीं।

अरे ! श्रेणिक महाराजा को उनके पुत्र ने कैद किया, तो श्रेणिक अपनी पत्नी से कह न सके कि तेरे पुत्र को समझा कि मुझे छोड़ दे !

कर्म के शिकंजे में फंसने के बाद किसी का कुछ नहीं चलता। इसलिए मेरे जो कर्म हैं उन्हें मुझे ही भुगतना पड़ेगा। चिंता करना इसका हल नहीं। इसलिए स्वस्थ रहो ! मेरे मन में शांति है, इसका आनंद मनाओ। ऐसी तकलीफ में संयम जीवन, ऐसे गुरुदेव, ऐसी सेवा मिलना, बस ! इन सबके सहारे प्रसन्नता है। यही काफी है।''

ऐसा उपदेश देकर अपनी संसारी माता की असमाधि दूर की। ऐसा एक बार नहीं अनेक बार बना है कि असमाधि करानेवाली परिस्थिति में स्वयं होते हुए भी संसारी माता की असमाधि दूर करते थे। कमाल है !!!

कितनी बार दक्षाबहन चिंताग्रस्त होकर फोन लगाती और रो पड़ती। पर एक दिन जम्बूभाई को उनका फोन आया... ''महाराज साहेब ! आपको धन्यवाद है। **मुझे अत्यंत खुशी है कि आप सिंह की तरह संयम**

लेकर सिंह की तरह पाल रहे हैं। वाकई खूब ही आनंद है।'' खुश होकर बालमुनि ने जवाब दिया, ''आपने जो कहा उससे में बहुत हर्षित हुआ। दक्षाबहन ! घर में घी-शक्कर है ना ? जल्दी से मुँह मीठा करो ! मेरी पसंदगी की बात की। बस ! ऐसी ही बातें करना !!''

एक बार बालमुनि का संसारी छोटा भाई यशकुमार उनकी चिंता कर रहा था। उसके साथ बात करते बालमुनि ने कहा, ''भगवान ही शरण है। मेरी चिंता मत कर, तेरी आराधना कर। अभी भले हम मौज-शौक कर रहे हैं, जीवन में सुख-शांतिपूर्वक जी रहे हैं, शरीर साथ दे रहा है, किसी प्रकार की तकलीफ नहीं है तो अच्छा लग रहा है, इसलिये धर्म का मूल्य समझ नहीं रहे हैं। लेकिन जब शरीर डगमगायेगा, बूढ़ा हो जाएगा तब धर्म याद आयेगा क्योंकि भविष्य अंधकारमय दिखेगा। तब लगेगा कि मैंने जीवन में कुछ किया ही नहीं, मेरी क्या हालत होगी ? उस स्थिति में धर्म करना सूझेगा। पुण्य खत्म होने पर सनत् चक्रवर्ती को भी १६ रोग उत्पन्न हो गए थे।''

यश ने कहा ''लेकिन साहेबजी ! मन में तो लगता है ना...''

''लगने ही वाला है। अनादिकाल से मोह सभी को सता रहा है, पर उसे ही हमें जीतना है। मेरी दीक्षा हुई तब सभी रो रहे थे, पर बाद में तो खुशी हुई ना ? लगाव के कारण याद आती है, मोह हमें सताता है... ये संसार चक्र चलता ही रहनेवाला है। यह पक्षियों का मेला है, सभी को उड़ जाना है।

हमें अपनी आत्मा का विचार करना है। कभी भी कोई भी परिस्थिति आ जाए, **तब Main समाधि रहनी चाहिए।**

समाधि नहीं होगी तो कहाँ फेंक दिये जायेंगे कोई ठिकाना नहीं। नरक, तिर्यंच का भव भी आ जाये। मरण समय की वेदना के लिए स्वस्थता में Training लेनी पड़ेगी। मरण समय १००% परीक्षा है। उसमें Pass होने के लिए अभी Training है, उपवास, एकासना वगैरह...कभी ऐसा रोग आएगा कि सब खाना-पीना बंद हो जाएगा, तब उपवास के संस्कार काम आएंगे। जो मरण समय समाधि रखनी हो, भगवान को याद करना हो तो यही उपाय है। धर्म आराधना कर !

अभी Corona में युवानों की गिल्ली उड़ रही है। हमें कुछ नहीं है, भगवान का आभार मान ! ''भगवान, तू मुझे रोज सुबह दिखाता है। चाय पिलाता है। ३ time खिलाता है। खूब आभार ! Thank you ! God ! Thank you ! मुझे शक्ति दो ! मैं धर्म आराधना करुं। ये तो दिल की बात तुझसे कर रहा हूँ। बस ! आराधना करना। प्रार्थना करना। ''साहेबजी को समाधि मिले !'' तेरी प्रार्थना से मुझे Power मिलेगा, आखिर भाई का संबंध है !''

ऐसा उपदेश देकर चिंतातुर भाई को स्वस्थ किया। लेकिन यह उपदेश उनके मन के विचारों का दर्पण था। उस परिस्थिति में बालमुनि किन भावनाओं में बह रहे थे, मृत्यु के लिए कितने जागृत थे, यह स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

४७

मैं गुरुदेव को पहचान नहीं सका !...

बालमुनि का चलना-फिरना बंद हो चुका था। खड़े भी नहीं रह सकते थे। खड़े करना हो तो पकड़ना पड़ता था। उठना - बैठना, सोना सब कराना पड़ता था। स्वयं कुछ नहीं कर सकते थे। ऐसी परिस्थिति में अंतिम आराधना की तैयारी के रुप में गच्छाधिपतिश्री **आ. राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.** की दी हुई 'समाधि का अमृतकुंभ' वगैरह पुस्तकों में से पर्यंत आराधना प्रकरण में बताए हुए (१) अतिचार आलोचना (२) महाव्रत पुनः उच्चरण (३) सर्व क्षमापना (४) १८ पाप स्थानक त्याग (५) ४ शरण (६) दुष्कृत गर्हा (७) सुकृत अनुमोदना (८) शुभ भावना (९) ४ आहार त्याग (१०) नवकार स्मरण आदि १० द्वारों का भावार्थ समझाकर मुनि **मौर्यरत्नविजयजी** द्वारा आराधना करवायी जाती एवं रोज दोपहर में पू. गुरुदेवश्री भी उनके पास आकर बैठते। थोड़ी बातें करने के बाद उन्हें समाधिशतक वगैरह अर्थ विवेचन करके सुनाते। उन्हें वह सुनना बहुत अच्छा लगता। उन उपदेशों को सुनते-सुनते बालमुनि संवेग भाव में आरुढ़ हो जाते थे।

उनके गुरु बहुमान भाव का ज्वलंत प्रतीक है। कालधर्म के २ माह पूर्व जब कोई डॉक्टर - वैद्य के उपचार लागू नहीं हुए तब किसी की प्रेरणा बिना ही बालमुनि ने दोनों गुरुदेवश्री को मनाकर उनके चरण प्रक्षालन करके वह पानी वापरा।'' अब आपकी कृपा से ही मेरा कल्याण होगा।'' इस भाव के साथ मात्र १ बार नहीं, प्रायः १ माह तक पैर के अंगूठे का प्रक्षालन करके वह जल आँखों और मस्तक पर लगाकर पूर्ण श्रद्धा से वापरते थे। शायद ही कभी दृष्टिगोचर हो ऐसे गुरु बहुमान के मनोरम क्षणों के साक्षी बनकर हम सभी धन्य हो गए।

गुरुदेव सहित हम कुछ महात्मा बालमुनि के Room में थे। हाल में बना हुआ एक प्रसंग, जिसमें गुरुदेव की सूक्ष्म प्रज्ञा एवं संयम सुरक्षा हमारा दिल जीत ले ऐसा एक प्रसंग हमने बालमुनि को बताया। सोते-सोते सुनकर बालमुनि ने कहा, ''अरे ! मैं तो कब से सोच रहा हूँ... गुरुदेव के ये सभी प्रसंग लिखकर रखने चाहिए। हमें ऐसे गुरु महाराज मिले हैं। अब तो कोई लिखो...'' इतना कहकर उन्होंने गुरुदेव का हाथ पकड़ा।

बालमुनि ने गुरुदेव से कुर्सी पर बैठने की विनति की। उनके बैठने के बाद कहा, ''थोड़ा पीछे बैठिये''। हमें आश्चर्य हुआ पर उनके कहे अनुसार गुरुदेवश्री की कुर्सी हमने थोड़ी पीछे खिसकायी। मुझे पास बुलाकर सोते-सोते मेरे कान में कहा, ''गुरुदेव के पैर ऊँचे करो''। मैं उनकी इच्छा समझ गया और तुरंत ही गुरुदेव के पैर ऊंचे करके बालमुनि के सिरहाने रख दिये। बालमुनि सोते-सोते ही गुरुदेव के पैर पकड़कर अपनी आँखों पर लगाकर मस्तक रगड़ने लगे।'' हमें कितने महान गुरु महाराज मिले हैं।'' ऐसा कहकर बहुमान व्यक्त किया।

फूल पर चिपककर भँवरा जिस तरह रस पीता है, उसी तरह बालमुनि ने गुरुदेव के चरणों में लिपटकर भरपूर रसपान किया। शायद वे जान गए थे कि ये गुरुदेव के चरणों का आखरी स्पर्श है।

हम सब ये अविस्मरणीय दृश्य देखते ही रह गये। **यह अंतिम चरण स्पर्श का दृश्य सबके लिए हृदयस्पर्शी बन गया।**

मौका देखकर मैंने एक प्रसंग बालमुनि से कहा, ''बालमुनि ! याद है ? आप नाकोड़ा में न्याय पढ़ रहे थे, तब अंत में परीक्षा ली थी ?''

''हाँ ! याद है।''

''उस परीक्षा के पेपर आपके विद्यागुरु मुनि मौर्यरत्नविजयजी म.सा. ने check किये थे। पेपर check होने के बाद उन्होंने गुरुदेव से कहा कि ''पहला नंबर बालमुनि का आया है, ९६/१०० marks मिले हैं। 2nd और 3rd 85 marks के अंदर है। फिर सभी के marks बताये।'' गुरुदेव ने कहा, ''बालमुनि का Paper Recheck करो और जितने marks कम हो सके उतने करो। गलती हो वहाँ ज्यादा marks कम करो। 1st नंबर बालमुनि का ही रखना। सिर्फ Rank जाहिर करके सब विद्यार्थियों को उनके paper हाथ में दे देना।'' ४ वर्ष तक यह बात किसी को बतायी नहीं थी, पर मेरे सामने घटी यह घटना आज आपको सुना रहा हूँ।

विचार करो, कैसे गुरु महाराज मिले हैं हमें !!

पूरा पूरा रंग जमाते हुए मुनिश्री मौर्यरत्नविजयजी म.सा. ने कहा ''शुरुआत के ग्रंथों में अहंकार आ जाएगा, तो आगे नुकसान होगा, इस विचार से गुरु महाराज ने कृपा की।''

यह सब सुनकर बालमुनि की आँखे चौड़ी हो गयी और वे सिसक सिसक कर रोने लगे। बोलने का प्रयत्न किया पर एक तो शक्ति क्षीण और उसमें रोना आ गया इसलिए बहुत श्रम करके धीमी आवाज में कहना प्रारंभ किया **''मैंने गुरुदेव को पहचाना नहीं, इसका मुझे दुःख है, दूसरा कुछ भी नहीं, मैं गुरुदेव को पहचान नहीं सका... !''** इस प्रकार कहते-कहते रोते गए। छलकती आँखों के साथ गुरुदेव का हाथ पकड़कर किये हुए उपकारों के लिये अपना ऋणीभाव व्यक्त कर रहे थे।

कुछ क्षणों में स्वस्थ होने के बाद उन्हें बैठाया। सामने संसारी पिता हितेशभाई खड़े थे। उन्हें नजदीक बुलाकर उनका हाथ पकड़कर बालमुनि ने कहा, ''आपका खूब-खूब उपकार है, मुझे यहाँ तक लाये, सचमुच बहुत उपकार है, मेरा संस्करण किया... ।''

हितेशभाई ने प्रत्युत्तर दिया, ''सब गुरुमहाराज की कृपा है, मैंने कुछ नहीं किया। संस्करण तो शिल्पी करता है, गुरु महाराज शिल्पी हैं।'' जवाब सुनकर सभी को संबोधित करते हुए बालमुनि ने कहा, ''आप सब शिल्पी ही हैं, मैं तो पत्थर हूँ, बिल्कुल पत्थर... आप सब मिलकर अब ऐसी मूर्ति तैयार करना कि देखते ही मन रोमांचित हो जाये।'' आभार व्यक्त करते-करते उनके मुख पर मुस्कुराहट आ गयी।

आज उनकी आवाज में खनक थी,

एक अलग प्रकार की शक्ति उनकी वाणी में देखने मिली, उनके शब्दों में आर्द्रता का अनुभव हुआ। उनका स्वर रोज से ज्यादा तेजस्वी था।

लेकिन यह सब बुझते दीपक की जगमगाहट थी। यह **उनकी आखरी वाग्धारा थी**। दूसरे दिन से मात्र एकाद शब्द बोलकर इशारों से हमें संकेत दे देते। कृतज्ञता की अभिव्यक्ति के साथ विराम देकर बालमुनि ने अपनी वाणी को कृतार्थ किया। हम भी जानते नहीं थे कि आज के बाद यह मधुर स्वर हमेशा के लिए अगोचर हो जाएगा!

इस वार्तालाप के बाद सभी महात्मा गोचरी वापरने गये। सब उठने की तैयारी में थे इतने में बालमुनि ने कहा, ''मुझे आज गोचरी मांडली में जाना है, सभी के पात्रे में गोचरी रखकर भक्ति करनी है।'' मुनिश्री मौर्यरत्नविजयजी म.सा. ने कहा, ''अभी सबका हो गया होगा, कल समयसर पहुँचकर भक्ति करेंगे।''

''ना, आज उल्लास है, मुझे आज ही भक्ति करनी है।''

दूसरे ही क्षण मुनि श्री मौर्यरत्नविजयजी म.सा. ने गोचरी मांडली में आकर कहा, ''सभी बैठे रहना, उठना नहीं। मैं गोचरी वहोरकर आता हूँ। बालमुनि की भावना है अपने हाथ से सबकी भक्ति करनी है।''

थोड़ी देर में बालमुनि को Wheelchair में बैठाकर ले आए और हर एक महात्मा की दिल से भक्ति करके खूब आनंदित हुए। महात्माओं को भी खूब आनंद हुआ कि उनकी प्रसन्नता के खातिर वापरना पूरा होने पर भी बैठे रहे। लेकिन किसे पता था कि यह **अंतिम बार बालमुनि गोचरी मांडली में आए हैं।** उसके बाद उनकी शक्ति ही नहीं रही कि उन्हें संथारे में से नीचे उतार सकें। दूसरे ही दिन से बालमुनि का संथारे से उतरना तो दूर बैठना भी बंद हो गया था। Total Bed Rest में वे रहे।

बालमुनि ने यह आखरी बार अपनी इच्छा व्यक्त की थी। कितने आनंद की बात है, **''अंतिम इच्छा - साधु भक्ति की''** और वह भी पूर्ण की।

४८ पहेली निर्यामणा...

शरीर बहुत कमजोर हो जाने के कारण, वे बहुत देर तक एक मुद्रा में सो नहीं सकते थे। हड्डीयों में दर्द होने लगता था। स्वयं करवट बदल सके इतनी तो शक्ति ही नहीं थी, इसलिए रात्रि में भी हर घंटे हम उनकी करवट बदल दिया करते थे।

करवट बदलना तो दूर... वे तन पर बैठे मच्छर को भी उड़ाने में असमर्थ थे... मच्छर भी हम ही उड़ाया करते थे।

बोलने की भी शक्ति नहीं होने से मात्र इशारा करके अथवा एकाध शब्द बोलकर हमें सूचित करते थे। लेकिन इस परिस्थिति में भी वे खूब चौकन्ने थे। मैं उन्हें दवा पिलाऊँ तो मुझे रोककर तुरंत इशारा करते ''Shake well before use...''

उन्हें Glucose की Bottle चढ़ाने जाऊँ तो याद कराते ''हाथ sanitize किये ?''

थोड़ा नजदीक आकर बात करूं तो इशारे से सावधान करते ''ध्यान से... हाथ में सुई और नली लगी हुई है...''

प्रतिक्रमण पढ़ाते कभी अनुपयोग से भूल करूं तो Spot पर रुकाकर सुधार करते ''यह सूत्र बोलना है...'' यह सब देखकर कभी-कभी तो मुझे विचार आता कि ''मैं उनका ध्यान रखता हूँ या वे मेरा?''

जेठ वदी १०, दि. १६.६.२०२० के दिन नवकारसी का समय हुआ होगा। बालमुनि चैत्यवंदन करने के बाद मस्त थे। गुरुदेवश्री साता पूछने आये। हँसते-हँसते मिले, वंदन किये, मुस्कान के साथ गुरुदेव को Room से बिदाई दी। मैंने उन्हें पूछा, ''ताकत का अनुभव हो रहा है ना?'' Sugar Level में कोई गड़बड़ तो नहीं लग रही ना?'' उन्होंने स्वस्थता का इशारा किया। मैं Room से बाहर जा ही रहा था कि तभी बालमुनि के मुख के हाव-भाव बदल गये। मुझे समझ आ गया कि उनका Sugar Level अत्यंत low हो गया है। शायद १०-१५ होगा और अब बेहोश होने की तैयारी है। जो बेहोशी में से जल्दी बाहर नहीं लाए गए तो coma में चले जाएंगे और आयुष्य भी पूर्ण होने की संभावना है।

तुरंत उपचार चालू करने पर भी कोई फर्क न पड़ा। बालमुनि बेहोश हो गए थे। पूर्व में डॉक्टर ने सूचित किया था कि यह sugar level की problem बढ़ती ही जाएगी और अंतिम दिन नजदीक आते जाएँगे। इस बात का ध्यान रखकर हम सभी नवकार सुनाने लगे।

बड़े गुरुदेव ने ४ शरण - नवकार सुनाया, आ.भ. **श्री कुलबोधिसूरिजी म.सा.**, सा. **श्री राजरत्नाश्रीजी म.सा.**, सा. **श्री अमितरेखाश्रीजी म.सा.**, सा. **श्री निर्मोहरेखाश्रीजी म.सा.** आदि सभी साधु-साध्वीजी भगवंत निर्यामणा करवाने हाजिर हो गए थे। एक तरफ उपचार चल रहे थे, एक तरफ नवकार धून। बालमुनि के संसारी माताजी भी हाजिर थे। दृश्य देखकर उन्हें धक्का लगा। रोने लगे पर हिम्मत जुटाकर वे भी जोर से नवकार उच्चारण करने लगे।

थोड़ी ही देर में डॉक्टर आये। एक तो समय की कमी, ऊपर से बालमुनि की एकदम कृश हो चुकी नसें। Bottle चढ़ाना हो तो अत्यंत अनुभवी व्यक्ति को भी खूब सावधानीपूर्वक कार्य करना पड़ता था। Dr. Vaibhavbhai ने भी नवकार स्मरण करके प्रयत्न किया; चमत्कार हुआ। २० मिनिट तक ढूंढने पर भी दूसरे डॉक्टरों को बालमुनि की नस मिलती नहीं थी, वह आज एक क्षण में ही मिल गयी। तुरंत सुई डालकर, Bottle चढ़ाई और fast speed में Bottle चालू की, आधी Bottle हुई और ५ मिनिट में ही बालमुनि को होश आ गया। मजा तो अब आएगा...

बालमुनि आँखे खोलकर देख रहे हैं कि सब मेरे आस-पास इकट्ठे होकर गंभीर मुखाकृति के साथ नवकार सुना रहे हैं। पहले तो आश्चर्यचकित हुए। यह क्या चल रहा है ? फिर बात समझ आते ही मुस्कुराने लगे। सब Tension में थे और ये महाशयजी तो हँसने लगे। उनका हँसता चेहरा देखकर सभी स्वस्थ हुए। दिये हुए धन्यवाद को डॉक्टर वैभव ने नवकार मंत्र के नाम जाने दिया ''आप सभी नवकार गिन रहे थे इसलिये जल्दी नस मिल गयी। प्रभाव है ना नवकार मंत्र का ?''

उसी दिन दोपहर में मुनि ज्ञानरुचि म.सा. अपने आत्मीय मित्र बालमुनि को समाधि प्रेरक स्तवन, भक्ति गीत अपने मधुर कंठ से सुना रहे थे। लगभग १/२ घंटे तक एक लय से भक्ति संवेदन उन्होंने करवाया। वे जानते थे कि शायद मेरे मित्र के साथ यह मेरी आखिरी मुलाकात होगी। इसलिए समाधि अर्पण का तोहफा देकर मुलाकात को यादगार बनाया। मुनिश्री के हृदय की आर्द्रता आँखों से छलकती जा रही थी। पर बालमुनि अपने भावों में स्थिर थे। मित्र के अश्रुओं का उनकी समाधि पर कोई असर न हुआ।

दूसरे दिन मैंने बालमुनि से पूछा, ''आपको होश आया तब सब आपके सामने खड़े नवकार सुना रहे थे, उस समय क्या विचार आया ?''

बोलने की शक्ति न होने से उन्होंने मौनपूर्वक आँखे ऊपर करके भौंहें ऊंची करते हुए, थोड़ा सिर तिरछा करके हँसते हँसते इशारा किया, 'बस सीधा ऊपर' और हम दोनों हँसने लगे।

हमें संतोष हुआ कि उन्हें मृत्यु के विचार से कोई भय नहीं था। **यह थी उनकी पहली निर्यामणा, जब जाते - जाते बच गये।**

जेठ वदी १२, वि.सं. २०७६, दि. १८/६/२०२० डॉ. वैभव शाह ने एक Blood Report निकलवाने को कहा। Report आते ही डॉक्टर ने दोनों गुरुदेव के पास बैठकर गुप्त वार्तालाप - विचारणा की। दृश्य देखकर ख्याल आ गया कि स्थिति गंभीर होनी चाहिए। उन्होंने बताया कि - ''Haemoglobin बहुत ही कम है। इतने कम होने के बावजूद बालमुनि जीवित हैं यह चमत्कार ही है। लेकिन स्थिति गंभीर है। निर्णय आपको लेना है। बालमुनि को Hospital ले जाना है या उपाश्रय में ही इलाज करवाना है ? आप जैसा कहेंगे वैसा करेंगे, मेरा कोई आग्रह नहीं है। मैं मात्र शरीर को जानता हूँ, आप आत्मा को जानते हो, ऐसी परिस्थिति में ज्यादा समय निकल सके ऐसा नहीं है।''

''Hospital में उपचार करने से सुधार होने की संभावना है ?'' बड़े गुरुदेवश्री के प्रश्न का जवाब डॉक्टर के लिए मुश्किल था। उन्होंने कहा - ''ये सारे प्रश्न होनेवाले ही हैं, इसीलिए अंतिम निर्णय आपका रहेगा। ऐसी परिस्थिति में कोई भी डॉक्टर भर्ती होने का ही कहेगा। इनको Hospital में जो treatment दी जायेगी वह २४ घंटे डॉक्टर की देखरेख में होगी, इलाज लागू पड़ेगा या नहीं यह निश्चित नहीं, प्रयत्न ही होंगे। शरीर या आत्मा, किसको ज्यादा preference देनी ? यह आप जानो।''

एक तरफ corona का वातावरण और उसमें बालमुनि को हॉस्पीटल ले जाना याने शेर के मुँह में हाथ डालने जैसा था। Hospital जाने के बाद corona की परिस्थिति के अनुसार साथ में सेवा के लिये एक व्यक्ति को ही अंदर रहने की अनुमति मिलती है, जबकि यहाँ तो ३ साधु भगवंत मिलकर सेवा करते थे, तब सब कुछ व्यवस्थित होता था। २ महीने पहले गोवालिया टैंक में Sugar level Low हो जाने पर बेहोश हो जाने से Hospital ले जाना जरुरी था। नजदीक के Hospital में Corona के भय से प्रवेश पर प्रतिबंध था, तब ३ कि.मी. दूर ले गये और वहाँ पर भी मात्र एक ही व्यक्ति को साथ में प्रवेश मिला। बाकी सभी को बाहर ही रुकना पड़ा। Hospital में भी Infection का भय अत्यंत था। इस अनुभव के कारण हमने निश्चय कर लिया था कि कोई भी उपचार उपाश्रय में ही करवाना और उसके लिये उपाश्रय में व्यवस्था खड़ी कर देनी, लेकिन Hospital तो नहीं ले जाना।

ऐसी परिस्थिति में अगर Hospital ले जायें और स्वास्थ्य अधिक बिगड़ जाने पर निर्यामणा करानी पड़े तो वहाँ आचार्यभगवंत आदि आकर आराधना करा सकें, ऐसा तो शक्य ही न था। बड़े डॉक्टर को पूछने पर सलाह मिली कि खून चढ़ाना भी किसी काम का नहीं। चढ़ाया हुआ खून थोड़े दिनों में पूरा हो जायेगा फिर क्या ? मूल जिसका इलाज करना है, वह वस्तु तो पकड़ में आई ही नहीं। खून चढ़ाकर भी Reaction, Infection आदि Risk तो है ही।

ये सारी बातें विचारकर, अगर स्वास्थ्य सुधरने की कोई आशा न हो और समाधि को पूरी तरह से खतरा हो तो समाधि के रक्षण का निर्णय बड़े गुरुदेवश्री ने लिया। डॉ. वैभव ने निर्णय सुनकर गुरुदेव को आश्वासन दिया - ''साहेबजी ! आप चिंता मत करो, यहाँ पर जो कुछ व्यवस्था - सेवा की जरुरत पड़ेगी उसका मैं पूरा-पूरा ध्यान रखूंगा। आपने जो निर्णय लिया है वह शत-प्रतिशत श्रेष्ठ है।''

अंतिम प्रायश्चित्त ५०

३-४ दिन बाद बालमुनि को श्वास लेने में थोड़ी तकलीफ होने से Oxygen की नली लगाई गई। बहुत सारे Bottle चढ़ने से अब हाथ में सूजन आ गयी थी। बहुत दर्द हो रहा था। सोते रहने के कारण बार-बार करवट बदलने के बावजूद कमर के नीचे रीढ़ की हड्डी के किनारे एक छोटा जख्म हो गया था और वहाँ पर भी दर्द बढ़ने लगा था।

सुबह के प्रायः ११.३० बजे होंगे। Glucose की बोतल चढ़ रही होने के बावजूद Sugar Level घट गया था और थोड़ी ही देर में होश गवां देंगे ऐसा लगा। हम सारे महात्मा इकट्ठे होकर पास में बैठे। मैंने नवकारमंत्र, ४ शरण स्वीकार सुनाया इतने में दोनों गुरुदेवश्री हाजिर हुए। शासन के मर्म और छेद ग्रंथों के रहस्य को पाये हुए बड़े गुरुदेवश्री ने नवकार सुनाया, ४ शरण स्वीकार करवाए और गीतार्थता के आधार पर बालमुनि से कहा - ''देखो बालमुनि! हमने स्वास्थ्य के लिये बहुत अपवादों का सेवन किया, बहुत विराधना भी हुई, बहुत अतिचार भी लगे। इन सबकी आलोचना शुद्धि हेतु आपको प्रायश्चित्त दे रहा हूँ...'' हम सभी को आश्चर्य हुआ कि ऐसी हालत में क्या प्रायश्चित्त कर सकते हैं? क्या प्रायश्चित्त देंगे? यह जानने के लिए मन उत्सुक हुआ और बड़े गुरुदेवश्री ने उनको तत्कालीन परिस्थिति के अनुरुप प्रायश्चित्त दिया।

गजब है जिनशासन की सर्वज्ञ प्रस्थापित व्यवस्था! मृत्युशय्या पर रहे हुए व्यक्ति को भी जीवन के पापों से मुक्त करने के लिए यथाशक्ति होनेवाली आराधना से शुद्धि दी जाती है। जिससे परलोक प्रयाण के समय में जीव स्वयं निःशल्य, पापमुक्त और भारमुक्त होने का अनुभव कर सके। इस प्रकार चित्त समाधि को प्राप्त कर सकें।

सही मोके पर बड़े गुरुदेवश्री ने अपनी गीतार्थता का चमकारा बताया। इस चमकारे के पीछे **स्व. गच्छाधिपति श्री जयघोषसूरीश्वरजी म.सा.** का हाथ था, जिन्होंने छेद ग्रंथों का अध्ययन स्वयं करवाकर यह सूझ अर्पण की थी। पूज्यश्री की गैरहाजरी में भी उनके उपकार आज भी हमारा रक्षण कर रहे हैं, उसका हमें अनुभव हुआ।

बड़े गुरुदेवश्री ने नवकार सुनाना शुरु किया। मात्र तीन पद बोलकर अटक गये। उनका दिल भर आया, आँखे छलकने लगी। सभी को आश्चर्य हुआ, बड़े गुरुदेवश्री इतने वैरागी हैं कि कभी भी उन्हें लगाव के बहाव में बहते देखा नहीं, परंतु आज की तो घटना ही ऐसी थी। एकदम छोटी उम्र के अपने दिल में बसे हुए लाडले बालमुनि को निर्यामणा करवानी अर्थात् छप्पन की छाती चाहिए। जिस पर सैंकड़ों आशाएँ बंधी हुई हो...

इसे मेरे ज्ञान की विरासत दूँगा...

जिनशासन का प्रभावक सितारा बनेगा...

मुझे अंतिम समय में निर्यामणा करायेगा, नवकार सुनायेगा...

आज उसी को निर्यामणा - नवकार सुनाना, मतलब ?... आखिर तो गुरु है, सारा जीवन वात्सल्यवृष्टि की है, अब आँखें भर आए, तो इसमें क्या आश्चर्य ? ३ सेकंड का विराम लेकर बड़े गुरुदेवश्री ने 'नमो उवज्झायाणं' से नवकार पूरा किया। लेकिन बालमुनि की आँखें बंद ही थी। आँखें मूंदकर अभी तक भावपूर्वक नवकार का स्मरण कर रहे थे। अंतिम १ महीने का हमारा अनुभव रहा कि सामूहिक जाप के अंत में १२ नवकार गिनने में बालमुनि ऐसे तन्मय होकर स्मरण करते कि सबसे अंत में आँखें उनकी ही खुलती और सबसे ज्यादा शांति भी उन्हीं के चेहरे पर देखने मिलती। इसी अभ्यासवश वे आज भी लीन बनकर नवकार स्मरण कर रहे थे।

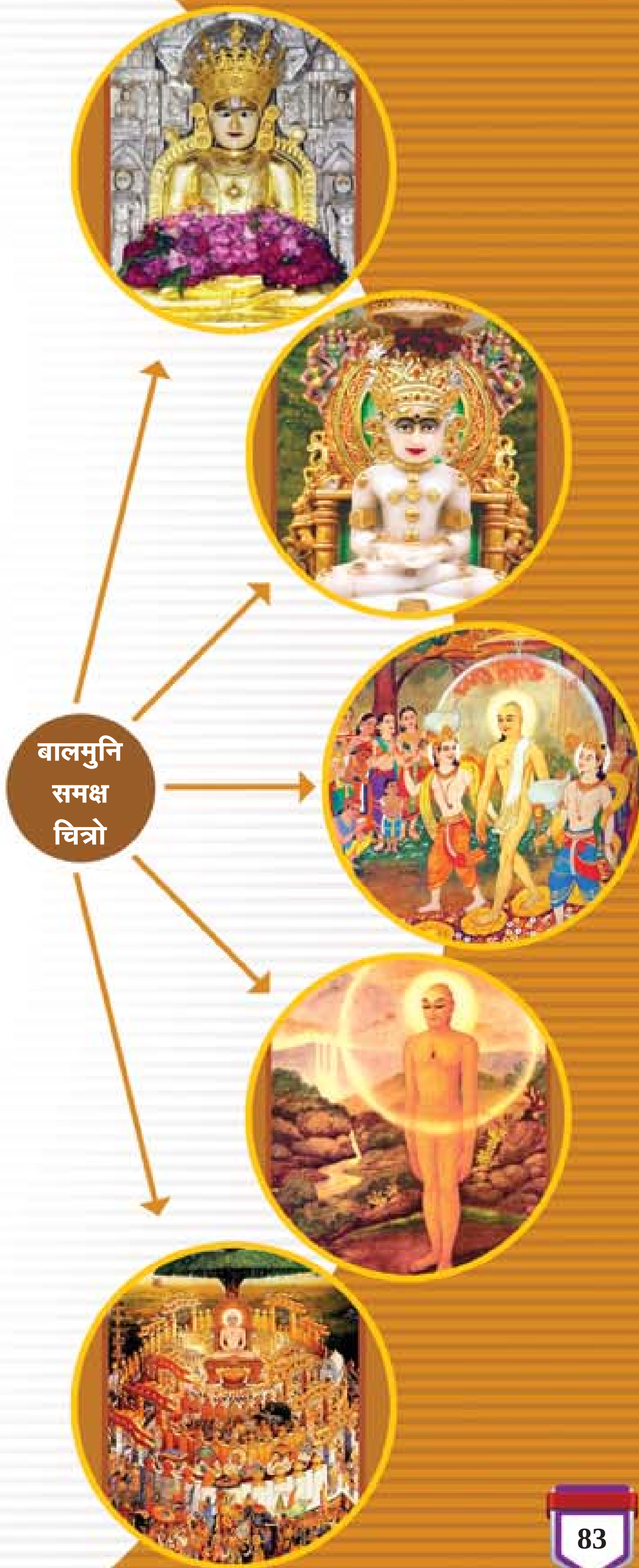

हमने नवकार की धून शुरु की। बालमुनि सामने की दीवार पर लगे श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु, जवाहर नगर मंडन श्री धर्मनाथ प्रभु, श्री प्रेम-भुवनभानु-जयघोष-जितेन्द्र-गुणरत्नसूरिजी गुरुदेवों के चित्रों के दर्शन करते - करते प्रसन्नचित्त से नवकार धून का श्रवण कर रहे थे। धीरे-धीरे होश कम हो रहा था। अब मात्र 'नमो अरिहंताणं' की धून हमने जारी रखी।

लगभग १२.३० बजे थोड़ा वापरने के लिये पूछा। वापरना शुरु किया। धीरे-धीरे नवकार धून सुनते - सुनते वे वापर रहे थे। ५ मिनिट में एकाएक चेतना - स्फूर्ति आने लगी। हमें आश्चर्य हुआ, Glucose की बोतल चढ़ रही है, फिर भी Sugar Level control नहीं हो रहा और मुँह से वापरने पर स्वस्थता आ रही है, गजब है!

हम सब प्रसन्न होकर नवकार धून चलाते रहे और बालमुनि ने भावपूर्वक श्रवण करते-करते गोचरी वापरी, **इस प्रकार दूसरी वार निर्यामणा करवायी और पुण्योदय से बच गये।**

अब स्थिति गंभीर जानकर पू. गच्छाधिपति **श्री राजेन्द्रसूरिजी म.सा.**, पू. गुरुदेव **श्री गुणरत्नसूरिजी म.सा.**, पू.आ. **रत्नसुंदरसूरिजी म.सा.** आदि आचार्य भगवंतों को बालमुनि के समाचार भेजे।

सभी के आशीर्वाद, हितोपदेश प्राप्त हुए। बालमुनि ने प्रसन्नमुख से सभी का आभार व्यक्त किया।

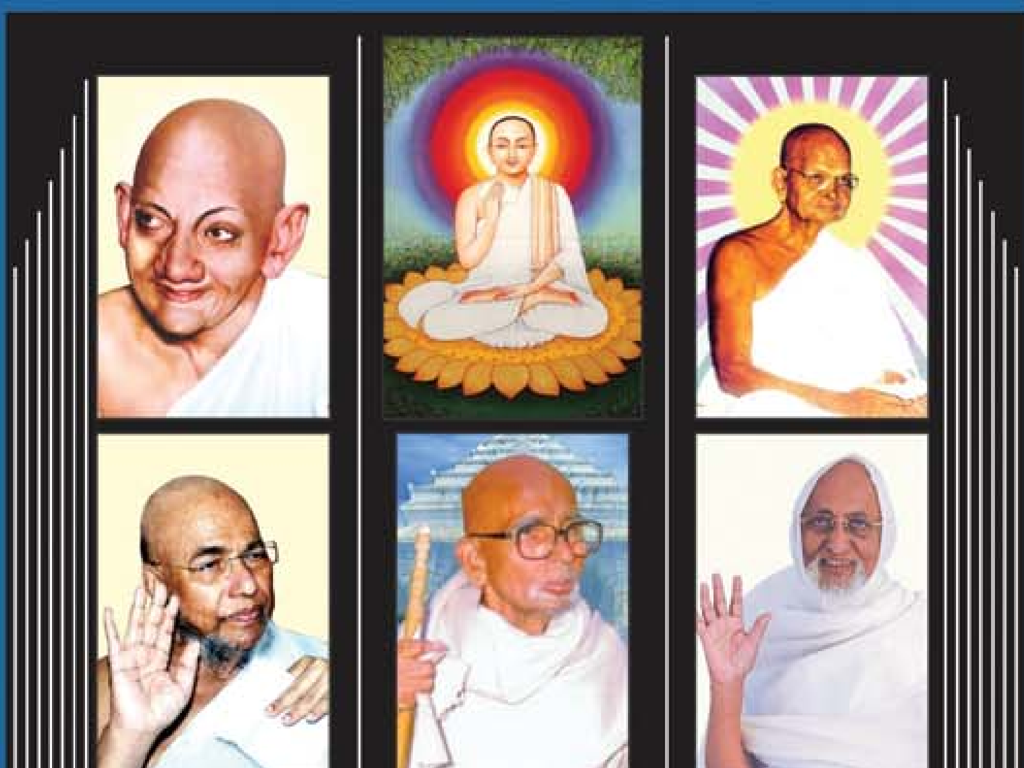

वंदना... वंदना... वंदना...

पूज्य गुरुदेव **श्री गुणरत्नसूरिजी म.सा.** बालमुनि के गंभीर समाचार जानकर तुरंत उनके स्वास्थ्य के संकल्प से जाप में बैठ गये। यह बात जानकर बालमुनि को खूब आनंद हुआ और पूज्यश्री की हितशिक्षा प्राप्त कर धन्यता का अनुभव किया।

पू. गुरुदेव श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा. का हितशिक्षा पत्र

जेठ वदी ६,
दि. १८.६.२०२०

विनयादिगुणोपेत **मुनिराज श्री दानरत्नविजयजी**,
अनुवंदना - सुखशाता पृच्छा!

देहमां व्याधि पण मनमां अपूर्व समाधि!
आ तमारी ओलख छे!
नानी वयमां तमे साचा वीर बन्या छो!
कर्मना उदये आवी पडेल अशाताने
हसता मोढे सही रह्या छो!
ज्ञानसारनो विवेक अष्टक पूज्य दादा गुरुदेवश्री
प्रेमसूरिजी ने प्रिय हतुं.
एमां लख्युं छे -
''देहात्माद्यविवेकोऽयं सर्वदा सुलभो भवे।
भवकोट्याऽपि तद्भेदविवेकस्त्वतिदुर्लभः ॥२॥''
देह जुदो छे, आत्मा जुदो छे.
देह पूरण गलन स्वभाववालो छे. आत्मा अजर अमर छे.
देह विनाशी छे, मारो आत्मा अविनाशी छे.
हुं आत्मा छुं - अजर अमर अविनाशी पूर्ण आनंदघन छुं.
हुं शुद्धस्वरुपी छुं, सहजानंदी छुं - ''रोग शरीरने छे.''
हुं निरोगी छुं, रोगो मारुं कशुं बगाडी शकता नथी.
मारा कर्म निर्जरामां निमित्त छे ''एनुं सतत चिंतन करजो.''
आत्मध्यानमां लीन बनी मोक्ष पामो...

ગુણરત્નસૂ. ની અનુવંદના
[illegible]

राधावेध साधना है ? ५१

लगभग दि. २३.०६.२०२० की सुबह बड़े गुरुदेवश्री ने बालमुनि को उपदेश देना शुरु किया । बालमुनि चातक नजर से देख रहे थे । संपूर्ण वाचना कान से होकर दिल में उतर रही थी । ''बालमुनि ! अब राधावेध साधना है ? राधावेध ख्याल है ना ? पानी के अंदर तराजू होता है, उसमें दोनों पैर रखने होते हैं और तराजू में खड़े रहकर मुँह नीचे कर, पानी में प्रतिबिंब देखकर, ऊपर चक्र घूमते हो और उन चक्रों के फिरते हुए आरों के बीच में से दिखती पुतली की आँख पर निशाना लगाना । पहले तो तराजू को स्थिर करना पड़े और पानी स्थिर होने के बाद पानी में पड़ते प्रतिबिंब में ऊपर घूमते हुए चक्र दिखें और उन चक्रों के आराओं के बीच से अवकाश में पीछे रही हुई घुमती हुई पुतली देखना और पुतली की आँख पर निशाना लगाना, मतलब कितनी सावधानी चाहिए ? मन कितना स्थिर चाहिए ? सर्वत्र फंसे हुए मन को निकालकर, निशाने पर स्थिर करना पड़े । उसी तरह अंत समय में शरीर-स्वजन-स्वास्थ्य सब कुछ भूल जाना (गंभीर स्वर में आगे बोले) **हमें भी भूल जाना... ।**

मात्र एक आत्मा और दूसरे परमात्मा इन दो के अलावा दूसरा सब कुछ भूल जाना । क्या हुआ ? क्या न हुआ ? कैसा हुआ ? कुछ भी नहीं । मात्र मेरी आत्मा और अरिहंत । यह है **राधावेध !** यह राधावेध साध लिया तो जीवन जीत गये... सब कुछ जीत लिया समझो... और निशाना चूक गये तो समझो सब हार गये । अनंत की जीत प्राप्त करनी हो तो सावधान बनकर, बाकी सब भूल कर, मात्र आत्मा और अरिहंत को याद रखना । अनंतकाल में जो कार्य नहीं किया है वह अब करना है । वह नहीं हुआ इसीलिए तो हम भटक रहे हैं । यह अवसर वापस नहीं आयेगा, संयम मिला, सेवा मिली, समझ मिली और समझानेवाले भी मिले तो अब यह सब सफल करना है । हिम्मत रखो !

''बोलो, राधावेध साधना है ना ?''

बालमुनि ने खूब ही प्रसन्नता से मस्तक हिलाकर बड़े गुरुदेवश्री को हाँ कहकर राधावेध साधने की तैयारी बताई । होंठ हिलाकर बिना आवाज़ के अभिवादन भी किया ''आभार !... आभार !... '' मजे की बात तो अब आपको बताऊँ की मुनि मौर्यरत्नविजयजी म. ने २-३ दिन पहले ही ये पदार्थ ''चंदाविज्जयं'' पयन्ना के आधार से समझाए थे और ऐसे ही रसपूर्वक और इतने ही उत्साह के साथ उस वक्त भी आनंद की अनुभूति की थी और दूसरी बार सुनते समय भी उत्साह में कोई कमी नहीं थी । ऐसा नहीं था कि उन्हें याद कम रहता था, लेकिन आत्मा के लिये उपयोगी ऐसे उपदेश फिर से सुनने मिले तो उसी उत्साह से ग्रहण करने की ताकत उनकी तत्त्व शुश्रुषा में थी ।

उनका जीवन अर्थात् योगदृष्टि की तीसरी दृष्टि का ज्वलंत उदाहरण था । तीसरी दृष्टि के शुश्रुषा गुण को उन्होंने सही मायने में जीवंत कर दिखलाया । ''परा च तत्त्वशुश्रुषा ॥यो.दृ. ४९/द्वा. द्वा. २२/१०.'' अर्थात् जिज्ञासा के कारण जानने की तीव्र इच्छा ।

५२ रात्रि जागरण

आषाढ़ सुदी ३, वि.सं. २०६७, दि. २४.६.२०२०. आज बालमुनि को श्वास लेने में तकलीफ हो रही थी । बालमुनि को छाती में भार लग रहा था । खाँस सके इतनी भी ताकत नहीं थी । डॉक्टर वैभव शाह ने बालमुनि की छाती का X-ray करवाया और उसकी Report स्वयं ही लेकर आये और दोनों गुरुदेवों के साथ बैठकर विचारणा की ।

''महाराज साहेब ! X-ray report खराब आया है । फेफड़ों में पानी भर गया है । Infection हुआ है । १५ घंटों से बालमुनि को Urine pass नहीं हुआ, इसलिए किडनी की कार्यशक्ति भी बहुत कमजोर हो गई है ऐसा लगता है, और उसी कारण शरीर में पानी भर रहा है । कमरे में बाहर के किसी भी व्यक्ति को प्रवेश नहीं देना । महात्माओं को भी compulsory मास्क पहनाएं, जरा गंभीरता से नजदीक आकर कहा - ''ज्यादा से ज्यादा ७२ घंटे हाथ में है, ऐसा लगता है ।''

सावधान होकर दोनों गुरुदेवों ने महात्माओं को सावधान किया । रोजाना की तरह सामूहिक जाप करके पू.आ. **श्री रत्नसुंदरसूरिजी म.सा.** का पत्र बालमुनि को पढ़कर सुनाया । वे खूब आनंदित हुए । सारे दिन कोई न कोई महात्मा उनके पास रहकर उनको कुछ सुनाते अथवा कोई अच्छी बातें करते रहते । दोपहर के बाद तो पानी पीने में भी तकलीफ हो रही थी । चम्मच से थोड़ा-थोड़ा पानी मुश्किल से उतर रहा था । इसी कारण शाम को वापरने के लिये भी उन्होंने मना कर दिया । बालमुनि स्वयं के शरीर की बिगड़ती अवस्था को जानते थे, लेकिन मन में किसी भी प्रकार की ग्लानि नहीं थी । प्रसन्न चित्त से सारी भावनाएँ कर रहे थे । पूज्य गुरुदेव**श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा.**, **मुनि त्रिभुवनरत्नविजयजी म.सा.** आदि पूज्यों के पत्र पढ़कर उनको सुना रहे थे, कोई विशेष उपदेश हो, तो स्वस्थ रीति से आँखें खोलकर मस्तक को थोड़ा हिलाकर स्वयं की खुशी उत्साह व्यक्त करते थे ।

उनका शुभ भाव खंडित न हो इसलिए मैंने स्तवन सुनाना शुरु किया - ''ऋषभ जिनराज मुज आज दिन अति भलो... दुःख टल्या सुख मल्या स्वामी तुझ निरखता...''

बालमुनि प्रसन्नतापूर्वक सब कुछ सुन रहे थे । सिर हिलाकर भावलीन बन रहे थे । उनका पसंदीदा स्तवन 'सुखदाई दादो पासजी सुखदाई' संपूर्ण गाकर सुनाया और वे आनंदपूर्वक सजाग होकर सुनते रहे । गच्छाधिपति ने सूचन किया था कि बालमुनि को आस-पास दिखे इस प्रकार से साधु भगवंतों को सतत खड़ा रखना और उसी प्रकार से कोई न कोई साधु भगवंत सतत खड़े होकर बालमुनि को प्रवृत्ति में व्यस्त रखते थे ।

रात्रि में हाथ के दर्द के कारण उन्हें नींद नहीं आ रही थी । प्रायः रात में ३.०० बजे होंगे । मुनि मौर्यरत्नविजयजी म.सा. उनकी सेवा कर रहे थे । पीड़ा असह्य होने लगी तब उन्होंने बालमुनि को समाधि देने के लिए ''बालमुनि ! जब बार-बार पीड़ा में मन जाता हो, तब उपयोग Divert करना पड़ता है ।'' ऐसा कहकर बात शुरु की । उस रात अवंति सुकुमाल आदि विविध महापुरुषों की रोमांचक कथाएँ उनको सुनाई और बीच-बीच में भेदज्ञान की समझ भी देते रहे । 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' की समझ देकर उपयोग केन्द्रित समाधि का बोध दिया । ''जो दिखे वह सब सत्य हो यह जरुरी नहीं । पंखे के तीन पंख होते हैं फिर भी घूमते समय चक्र की भांति दिखता है, वह भ्रम है । उसी प्रकार हर एक अनुभव सच्चा होना जरुरी नहीं । इस शरीर में अपनेपन का अनुभव भी वैसा ही है । आत्मा का अनुभव न हो तो कम-से-कम इतना तो पकड़कर रखो कि जो अनुभव हो रहा है, वह मैं नहीं, यह शरीर मैं नहीं, वेदना मैं नहीं, मेरी नहीं । इसके आधार पर अपना सम्यक्त्व का बीज टिका रहेगा और समाधि सुलभ बनेगी ।''

''मैं आत्मा मात्र हूँ, दूसरे सारे अनुभव झूठे हैं, पर है ।'', ''ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या...'' आदि धर्मकथा रात्रि ४.३० बजे तक चली ।

बालमुनि के जीवन की यह पहली रात ऐसी थी जिसमें नींद के बदले इतना समय धर्मकथा चली हो, परंतु यह रात उनके जीवन की श्रेष्ठ रात थी, जिसमें स्वयं को जागृत करना सीख गये । **पीड़ा में नींद उड़ जाए, यह तो सामान्य बात है, लेकिन आत्मजागृति के क्षणों में पीड़ा उड़ जाए, यह सबसे असामान्य बात थी ।** यह कमाल था उनकी शुश्रुषा का जिसके बल पर जब सारी दुनिया सो रही थी तब बालमुनि जाग रहे थे...

भाव निद्रा को उड़ाकर... मोह निद्रा को उड़ाकर...

यह मोहनिद्रा ऐसी होती है कि जीता-जागता इंसान भी इसके कब्जे में होता है । अनंतकाल लग जाता है, परंतु किसी विरले की ही यह नींद उड़ती है । आज बालमुनि की यह अनंतकाल की नींद सच्चे अर्थ में उड़ गयी हो, ऐसा लगा...

सही अर्थ में वे मुनि बने थे...

सुत्ता अमुणी.... मुणिणो सया जागरन्ति... (आचारांग सूत्र १/३/१/सू. १०६)

(मोह की नींद में सोनेवाले मुनि नहीं... मुनि हमेशा जागते रहते हैं ।)

५३ आत्मा दिखती है...क्या ?

आषाढ़ सुदी ४, वि.सं. २०७६, दि. २५.०६.२०२० आज तो शाम का प्रतिक्रमण होते ही बालमुनि को नींद आ गई । रात ९.३० बजे डॉक्टर देखने आये, उस समय नींद उड़ गई थी । कंधे के ऊपरी भाग में Drip शुरु होने के कारण दर्द काफी बढ़ रहा था । अब दर्द के कारण नींद नहीं आ रही थी । दूसरी कोई नस पकड़ में आये तो Drip वहाँ से दे सके, ऐसा सोचकर नस ढूंढने लगे, परंतु दूसरी नस न मिली । गुरुदेवश्री भी पधारकर वहाँ बैठे । बालमुनि को थोड़ा प्रसन्न रखने हेतु पास में बैठे रहे ।

शाम से ही हम देख रहे थे कि रोजाना घंटे-घंटे बालमुनि की करवट बदलनी पड़ती थी, लेकिन आज तो निरंतर ३-४ घंटे से यूँ के यूँ ही सोए हैं, पीछे हड्डी में भी किसी प्रकार के दर्द की शिकायत नहीं कर रहे, हमें भी यह आश्चर्य लगा । पूछने पर डॉक्टर ने कहा - इनके शरीर में पानी भर रहा है, जिस कारण दूसरे अवयवों में संवेदन कम होने से दर्द नहीं हो रहा । बालमुनि को भी पूछा कि - ''पीड़ा हो रही है ? करवट बदलनी है क्या ? तो उन्होंने मना किया। हमें लगा अच्छा हुआ, पीड़ा का संवेदन कम है, तो समाधि अच्छी तरह टिक पायेगी ।''

मांडली की सेवा में व्यस्त होने के कारण मुनि श्री कुंथुरत्नविजयजी म.सा. ज्यादा समय निकाल नहीं पाते थे । लेकिन उन्होंने संकल्प किया कि आज तो बालमुनि की सेवा करनी ही है और रात में १.०० बजे वे रुम में आकर बालमुनि के पास बैठे और बालमुनि को जागता देख, उनके पैर दबाने लगे और सुबह ४.०० बजे तक वहाँ से हटे नहीं । बालमुनि के संसारी पिताश्री हितेशभाई भी जाग ही रहे थे ।

रात १.३० बजे की बात है - शरीर में पीड़ा का संवेदन काफी कम हो गया है, यह ध्यान में रखकर डॉक्टर ने जाते-जाते बालमुनि को एक बात कही - ''महाराज साहेब ! अब आप इस शरीर में नहीं हो, मात्र आत्मा में ही हो । उसका ध्यान करो ! आत्मा दिखती है ? ज्योति जैसी कुछ ?'' ऐसी अवस्था में भी उनका उपयोग इतना तीक्ष्ण था कि प्रश्न पूर्ण होते ही बालमुनि ने होंठ हिलाकर Silent जवाब दिया - ''अनुभूति होती है !''

ध्यान करनेवाले व्यक्ति, योगी भी ज्योति वगैरह के दर्शन में भ्रमित होकर आत्मदर्शन करने का मिथ्या संतोष मान लेते हैं । जबकि बालमुनि का तत्त्वज्ञान ऐसी वेदना में भी स्पष्ट था कि आत्मा दिखती नहीं परंतु वह अरूपी है, ज्ञानस्वरुप है, अनुभवगम्य है । यह उनकी अंतिम रात्रि थी । सामान्य से वेदना, अशक्ति और जीवन के अंत समय जब मात्र शरीर की चिंता सताती है, तत्त्वज्ञान सब उड़ जाता है । तब इन बालमुनि ने मन को सतत तत्त्वज्ञान से भावित करके अंतिम क्षण तक जागृति टिका रखी थी । परमात्मा के तत्त्वज्ञान से मिली हुई जागृति ने ही उनको अंतिम समाधि की विजयपताका प्राप्त करने में सफलता दिलाई थी ।

५४ जब प्राण तन से निकले....

आषाढ़ सुदी ५, वि.सं. २०७६, (दि. २६/०६/२०२०) : आज सुबह प्रतिक्रमण, चैत्यवंदन आदि करके बालमुनि तैयार हुए। गुरुदेव बालमुनि को साता पूछने आए, प्रसन्न होकर बालमुनि ने वंदन किये। साध्वीजी भगवंत भी वंदन करने आये थे। बालमुनि की प्रसन्नता देखकर सभी खुश हो गये, मिलने आनेवाले सभी व्यक्तियों को बालमुनि मधुर मुस्कान की भेंट दिया करते थे, इसलिए मैंने बालमुनि के गाल पर अंगुली टपकाते हुए कहा, ''बालमुनि ! Smile देकर साध्वीजी भगवंत को साता पूछो !'' और तुरंत ही मुख पर मुस्कान लाकर सभी को खुश कर दिया।

आज सुबह से ही बालमुनि को श्वास लेने में तकलीफ हो रही थी, डॉक्टर ने जाँच की, थोड़े Injections आदि उपचार किये। बाहर आकर डॉक्टर ने दोनों गुरुदेव को ''अंत समय नजदीक है'' ऐसी सूचना देकर सावधान किया। डॉक्टर ने कहा ''साहेबजी ! अब आप सभी इनके आस-पास पडिलेहण वगैरह क्रियाएँ कीजिये। उनकी नजर में आये उस तरह से, अब ज्यादा से ज्यादा संयम में उपयोग रहे, ऐसे प्रयत्न कीजिये। श्रावकों को भी दूर कर दो, बस साधुभगवंत, साधुक्रिया और संयम के उपकरण में ध्यान स्थिर करवाओ।''

यह सुनकर हमें आनंद + आश्चर्य हुआ। यह वैभवजी मात्र डॉक्टर नहीं, एक गीतार्थ श्रावक भी हैं, मात्र दर्दी के इलाज के लिए नहीं किंतु एक साधु की समाधि के लिए वे आये हुए थे। **मुनि मौर्यरत्नविजयजी म.सा.** ने पात्रा पोरिसी पढ़ाने की विधि करवाते समय मुहपत्ति के ५० बोल बोलकर बालमुनि को उसमें उपयोग दिलवाया। हर स्थल पर वे जागृतिपूर्वक बोल से भावित हो रहे थे ''क्रोध-मान परिहरुं... माया-लोभ परिहरुं'' उपयोगपूर्वक मस्तक हिलाते हुए कषाय परिहरने का भाव बालमुनि कर रहे थे।

उनका शुभ ध्यान स्थिर रहे इस लक्ष्य से हम सभी बालमुनि को कुछ ना कुछ सुना रहे थे। **मुनि हिरण्यरत्नविजयजी म.सा.** ने बालमुनि को स्तवन सुनाए

करुणासागर जीवजीवन...
ऋषभ जिनराज मुज आज...
''ऐसी दशा हो भगवन...
जब प्राण तन से निकले...''

फिर आत्मजागृति प्रेरक पसंद के गीत सुनाए ''आत्मा छुं हुं आत्मा छुं... हुं देहादिस्वरुप नथी...'' फिर गद्गद स्वर से उपदेश दिया ''ध्यान रखो! मैं आत्मा हूँ यह पतला शरीर में नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ, अविनाशी हूँ।'' बालमुनि सब सुनकर भावित हो रहे थे। खुराक तो गले से उतर नहीं पा रहा था, इसलिए केवल चम्मच भर मूंग का पानी धीरे-धीरे गले से उतार रहे थे।

पास में खड़े बालमुनि के संसारी माताजी दक्षाबहन रो रहे थे, लेकिन बालमुनि के मुख की रेखाएं नहीं बदली, वे स्वस्थ - शांत - प्रशांत थे। बालमुनि ने उँगली से इशारा कर सामने दीवार पर प्रभु महावीर का उपसर्गों का चित्र बताया। संगम ने किये हुए २० घोर उपसर्ग। अग्नि, जंगली पशु, राक्षस आदि के भयानक उपसर्गों के बीच समतालीन ध्यानस्थ प्रभु। बोल नहीं पा रहे थे लेकिन इशारा करके बालमुनि ने माता को उपदेश दिया ''जो अगर प्रभु महावीर

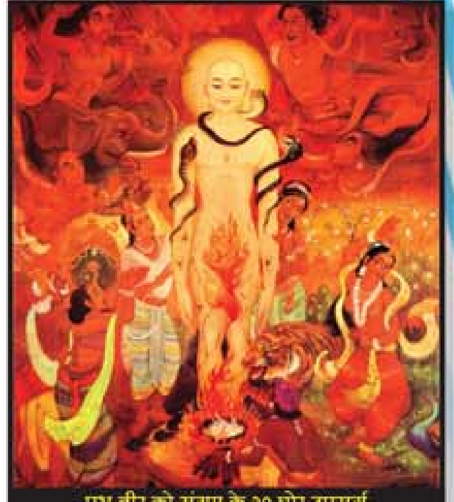
प्रभु वीर को संगम के २० घोर उपसर्ग

को उपसर्गों से कोई बचा न सका तो मेरी इस स्थिति पर खेद क्या करना ?'' यह देखकर हम सभी को आनंद हुआ कि अंतिम क्षणों में भी बालमुनि की समझ सलामत है। संसारी अवस्था में जिस माँ को रोती देखकर बालमुनि रो पड़ते थे, आज उसी माँ की भीगी आँखें और रुदन बालमुनि को किसी भी प्रकार के स्नेह परिणाम में खींच ले जाने के लिए असमर्थ थे, यकीनन ! बालमुनिने अपने स्वभाव का, परिणामों का परिवर्तन कर संयम जीवन को सार्थक कर बताया। आज भले ही हम सब हमारी भीगी आँखें छुपा रहे थे लेकिन यह देखने के बावजूद बालमुनि अपने परिणाम में स्थिर थे। यह उनका सच्चा वैराग्य था। शीघ्र ही प्राण पखेरु उड़ जायेंगे यह अनुमान होते हुए भी बालमुनि किसी लगाव में बहे नहीं। उनकी इस जागृति को धन्य है !

कल रात ''प्रिय परमात्मा कौन ?'' यह प्रश्न पूछने पर बालमुनि ने **'श्री महावीरस्वामी'** का जवाब दिया था। यह बात याद आने पर **मुनि श्री मौर्यरत्नविजयजी** ने बालमुनि के संसारी चाचा राजेशजी से पूछा ''आपके नवसारी के चौमुखजी जिनालय के श्री महावीरस्वामी प्रभु का Photo आपके पास है ?'' राजेशजी ने तुरंत Photo उपलब्ध करके बालमुनि को दर्शन करवाये। ''यह अपने नागतलावडी जिनालय के महावीरस्वामी'' संसारी अवस्था में जिस परमात्मा की भक्ति की हुई थी, उस संप्रतिकालीन भव्य प्रभुजी के दर्शन करके आनंद के साथ बालमुनि की आँखे पलक झपकना भूल गई, मुख पर स्मित और चमक उभर आई। भाविकों ने तुरंत बाहर जाकर Printing Press में इस Photo का बड़ी Size का wallpaper तैयार करने का urgent order दिया।

रोज की तरह आज सामूहिक जाप किया। गुरुदेव ने बालमुनि को सभी के साथ क्षमापना करने को कहा। एक के बाद एक सभी महात्माओं को बुलाकर बालमुनि से क्षमापना करवाई। संसारी माता-पिता से भी क्षमापना करवाई, सकल जीवराशि - क्षमापना करवाकर बड़े गुरुदेव ने पंचमहाव्रत आरोपण का श्रवण कराना शुरु किया। करेमि भंते - प्रथम महाव्रत... बालमुनि ध्यान से भावपूर्वक श्रवण कर रहे थे। मुनि मौर्यरत्नविजयजी बीच-बीच में हर एक आलापक का अर्थ समझा रहे थे। पंच महाव्रत उच्चारण के बाद १८ पापस्थानक वोसिराते हुए बड़े गुरुदेवश्री ने कहा ''बोलो वोसिरामि'' तब बोलने की शक्ति न होने से उँगली हिलाते हुए जागृतिपूर्वक ''वोसिरामि'' का इशारा किया। बड़े गुरुदेव ने आहार - शरीर और उपधि तीनों को वोसिराने का उपदेश दिया।

अब श्वास की तकलीफ बढ़ रही थी, उसे भूलाने के लिए मैंने उनके पसंद का गीत गाना शुरु किया ''संयम मारो श्वास, संयम प्रभुनो एहसास... परथी थया पराया अमे स्वना...'' इतने में ही मेरी आवाज़ थम गई, ज्यादा गाने में कहीं रोना न आ जाये इसलिए मैं चुप हो गया। बालमुनि को सुनना पसंद आ रहा था, इसलिए दक्षाबहन ने मुझे आगे गाने के लिए आग्रह किया, लेकिन सच बताने में माहोल बिगड़ न जाये इसलिए मैंने गला खराब होने का बहाना बनाया।

मुनि मौर्यरत्नविजयजी म.सा. ने बालमुनि को चार शरण, नवकार, संथारा-पोरिसी अर्थसहित सुनाई। भाविकों ने आकर विनति की ''साहेबजी ! बालमुनि को दर्शन कराने के लिए नीचे से शांतिनाथ भगवान

ले आए ?'' बड़े गुरुदेवश्री की अनुमति लेकर शांतिनाथ परमात्मा बालमुनि के रुम में विराजित किये। बालमुनि ने आनंदित होकर दर्शन किये। मैंने स्तुतियाँ गानी गुरु की, बालमुनि भक्ति का आनंद ले रहे थे।

''सागर दयाना छो तमे करुणातणा भंडार छो,
अम पतितोने तारनारा विश्वना आधार छो...
तारा भरोसे जीवन नैया आज में तरती मुकी,
शत कोटी-कोटी करुं वंदन नाथ तुज चरणे झुकी।

संकट भले घेराय ने वेराय कंटक पंथमां,
श्रद्धा रहो मारी सदा जिनराज आगम ग्रंथमां...
प्रत्येक पल प्रत्येक क्षण हैये रहो तुज हाजरी,
प्रभु आटलुं तो **आज पले** देजे मने करुणा करी।''

लेकिन अब ज्यादा बोल सकूं ऐसी मेरी परिस्थिति नहीं थी, मैं मेरे लगाव को रोक न सका। बालमुनि की प्रसन्नता को आँच न आये इसलिए मैं स्तुतियाँ छोड़कर रुम से बाहर निकला। एकांत में जाकर उभर आए मन को खाली किया। आज का दिन वापस नहीं आयेगा और अब बालमुनि को भक्ति करवानी अत्यंत जरूरी है, इसलिए मैं जरा हिम्मत जुटाकर वापस रुम में आया। **मुनि मौर्यरत्नविजयजी** और **मुनि हिरण्यरत्नविजयजी** स्तुतियाँ बोल रहे थे। ईरियावहिया करके **मुनि श्री कुंथुरत्नविजयजी म.सा.** को चैत्यवंदन बोलने का इशारा किया। लेकिन उन्होंने इशारा करके मुझे ही चैत्यवंदन बोलने के लिये कहा। उनका मुख देखकर मैं उनकी परिस्थिति समझ गया। कुछ बोल सकें ऐसी उनकी परिस्थिति नहीं थी।

मैंने सूत्र बोलकर स्तवन गाना शुरु किया।

''हम मगन भये प्रभु ध्यान में,
बिसर गई दुविधा तन-मन की अचिरासुत गुणगान में।''

बोलने में मुश्किल हो रही थी, कहीं रोना न आ जाये लेकिन हिम्मत रखकर स्तवन पूरा किया। स्तवन सुननेवाले सभी मेरी परिस्थिति समझ गये, लेकिन सभी की परिस्थिति समान ही थी। जयवीयराय सूत्र बोलने से पहले मुनि मौर्यरत्नविजयजी म.सा. ने बालमुनि को हृदय से प्रार्थना करने की सलाह दी। ''भवनिव्वेओ, सुहगुरु जोगो, समाहिमरणं च बोहिलाभो अ'' इन प्रार्थनाओं में प्राणांकुर फूट निकले, इस तरह भावनाएँ करवाई। उपयोगपूर्वक भावित होकर बालमुनि ने अंतिम पाथेय बांधा।

आज सुबह ही सत्येनजी ने पू. गच्छाधिपतिश्री **जयघोषसूरिजी म.सा.** का रजोहरण हमें दिया। उसका दर्शन-स्पर्शन कर बालमुनि खूब आनंदित हुए। उस रजोहरण को बालमुनि के मस्तक के पास में रखा। भाविका बहन ने पू.आ.भ. **श्री मुक्तिदर्शनसूरिजी म.सा.** का अंतिम आसन हमें दिया, वह भी मस्तक के दूसरी ओर रखा। इन दोनों आध्यात्मिक विभूतिओं के परमाणु उनकी समाधि के पोषक बन रहे थे।

डॉक्टर ने चतुर्विध संघ को दर्शन की अनुमति देने की सलाह दी, ''बालमुनि serious हैं'' ऐसे समाचार मिलते ही संघ के श्रावक - श्राविकाएँ एक-एक कर Room के बाहर से दर्शन करने लगे। मुनि मौर्यरत्नविजयजी म.सा. ने बालमुनि से पूछा, ''बालमुनि ! ये सब लोग दर्शन करने आ रहे हैं, आपको पता है ना क्या हो रहा है ?''

स्वस्थचित्त से बालमुनि ने सिर हिलाकर ''हाँ'' कहा। बालमुनि को खयाल था कि मेरे शुभ भाव टिकाने के लिए मुझे भक्ति करवा रहे हैं और मेरी समाधि के दर्शन करने के लिए लोग आ रहे हैं। लेकिन मृत्यु की दस्तक सुनने पर भी बालमुनि घबराये नहीं। विशेष सावधान हो गये थे।

मुनि श्री मौर्यरत्नविजयजी म.सा. ने सामने शत्रुंजय के बड़े चित्र की ओर बालमुनि का ध्यान खींचते हुए कहा ''देखो बालमुनि सामने गिरिराज हैं, गिरिराज की छाया है...''

दोनों गुरुदेव भी पास में हैं...

आपका मन भी सरल है, कोई माया नहीं...

कैसा सुनहरा संयोग है, लोग तो याचना करते हैं, लेकिन आपको मिल गया, ऐसी दशा हो भगवन्... जब प्राण तन से निकले...''

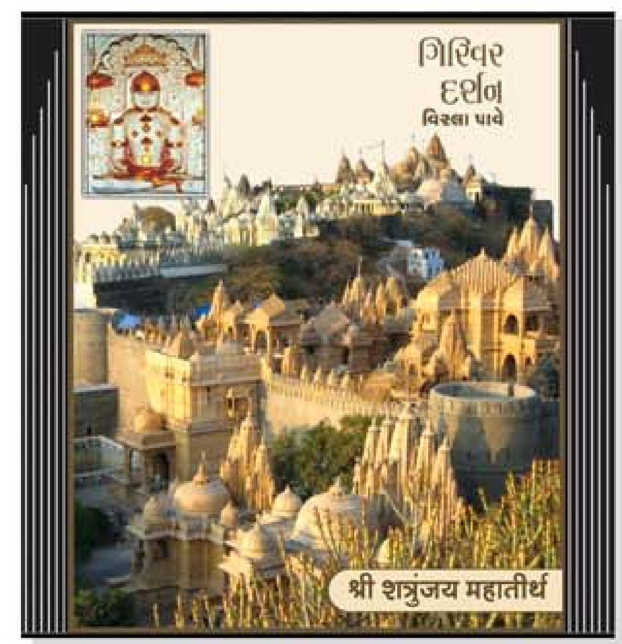

मैंने यह स्तवन सुनाना शुरु किया। मंद स्वर और मंद गति से गाया हुआ स्तवन बालमुनि शांति से सुन रहे थे, थोड़ा मुँह हिलाते हुए उसमें लीन बन गये, स्तवन पूरा हुआ... बालमुनि का उपयोग स्थिर रखने हेतु दूसरा गीत शुरु किया।

''तुं मने भगवान एक वरदान आपी दे, ज्यां वसे छे तुं मने त्यां स्थान आपी दे...''

मैंने बालमुनि के कान के पास जाकर पूछा ''बालमुनि ! कोई इच्छा है ? कुछ कहना हो... कुछ कराना हो... तो कहो, जो कहोगे वह हो जायेगा।''

दुबारा पूछने पर भी मुँह हिलाते हुए उन्होंने मना किया, दक्षाबहन ने भी आग्रह करके पूछा लेकिन जवाब वही था।

दोनों गुरुदेव बैठे थे। मुनि मौर्यरत्नविजयजी ने दोनों गुरुदेव के हाथ बालमुनि के हाथ पर रखते हुए कहा ''बालमुनि ! गुरुदेव ने आपके पास वचन मांगा था ना ? कि देव बनो तो मिलने आना... तो अब गुरुदेव से भी हाथ पकड़कर वचन मांगो... गुरुदेव ! इस भव में मेरी नैया के खेवैया बने हो, तो भवोभव आपका सुनहरा सांनिध्य देते रहना।'' बात सुनते ही बालमुनि का मुख मलक उठा और सिर हिलाते हुए वे वचन मांग रहे थे। इस दुर्लभ दृश्य को देखकर आँखें भर आई। वाकई में क्या नसीब पाया है ! मृत्युशय्या पर ऐसी घटना... ऐसा संयोग... ह्रदय पुकार उठता है - ''ते धन्ना जेहिं दिट्ठो सि !''

(उस समय आपको निहारनेवाले धन्य हो गये।)

महावीर स्वामी प्रभु का wallpaper तैयार होकर आ गया था। बराबर आँख के सामने विशालकाय चित्र दीवार पर लगाया। दर्शन करके बालमुनि हर्षान्वित हो गये, जिस प्रभु की बरसों तक भक्ति की थी, आज वह प्रभुजी अंतिम समाधि देने सच में पधार चुके थे।

बड़े गुरुदेव ने बालमुनि को फिर से करेमि भंते का उच्चारण करवाया, महाव्रत स्मरण करवाया, राधावेध साधने का उपदेश फिर से संक्षेप में दिया और कहा ''आप झांझरिया ऋषि की सज्झाय बोलते थे ना ? आपको पसंद थी वह सुनाता हूँ।'' बालमुनि की 'हाँ' सुनकर बड़े गुरुदेव ने अंतिम ढाल सुनानी शुरु की।

''अणसण खामणा करे मुनि तिहां कने समता सायरमां झीले,
चोराशी लाख जीवायोनि खमावे पाप करम ने पीले रे,
मुनिवर तु मोरे मन वसियो.
उदय आव्या निज कर्म आलोवी, ध्यान जिणेसर ध्यावे रे,
खडगे हणता केवल पामी, अविचल ठामे जावे रे, मुनिवर तु मोरे मन वसियो.''

श्वास की तकलीफ बढ़ने लगी और ढाल अधूरी रखकर नवकार धून शुरु की। थोड़ी-थोड़ी देर में दोनों गुरुदेव बालमुनि को सावधान कर रहे थे ''सुन रहे हो ?... सावधान हो ?... हिम्मत रखो...'' बालमुनि सभी बात का प्रतिभाव दे रहे थे।

अचानक बालमुनि कहने लगे ''गुरु महाराज !... गुरु महाराज !...'' गुरुदेवने कान के पास जाकर पूछा ''बालमुनि ! क्या हो रहा है ?''

''गुरुमहाराज ! श्वास में तकलीफ हो रही है।''

अब तक कोई भी शिकायत हो तो गुरुदेवश्री सांत्वना देते थे, लेकिन अब परिस्थिति जान लेने से **गुरुदेव ने गंभीरता से कहा ''देखो बालमुनि ! अब यह तकलीफ तो बढ़ेगी... अब इसे भूल जाओ ! इसे सोचना बंद कर दो ! अब मात्र अरिहंत - अरिहंत का रटन करो, मात्र अरिहंत एक शरण है,** दूसरा सब भूल जाओ, बस अरिहंत - अरिहंत।''

थोड़ी ही देर में बालमुनि ने कहा ''गुरु महाराज ! कान बंद हो रहे हैं।'' ''कोई हर्ज नहीं, सुन सको उतना सुनो'' गुरुदेव ने जवाब दिया।

गुरुदेव ने हिम्मत रखने को कहा और बालमुनि भी गजब के थे, उसी क्षण स्वीकार लिया। **अब तकलीफ बढ़ने पर 'प्रभु... प्रभु...' का रटन करने लगे।** यह प्रभु - प्रभु का रटन सुनकर हम सभी को आनंद हुआ। बालमुनि के मुख पर कोई ग्लानि, खेद या चिंता की निशानी दिखती नहीं थी। वेदना केन्द्रित मन हो तो व्यक्ति डॉक्टर को याद करता है और समाधि केन्द्रित मन हो तो व्यक्ति गुरुदेव को याद करता है। अब तक तकलीफ थी लेकिन बालमुनि डॉक्टर को नहीं, गुरुदेव को याद कर रहे थे।

गुरुदेव की वाणी सुनकर बालमुनि सावधान हो गये थे, यह कमाल है इतने साल के गुरुसमर्पण भाव का। तकलीफ भले ही बढ़ी लेकिन गुरुसमर्पण भाव के कारण अंतिम हितशिक्षा का भी बालमुनि ने स्वीकार और आचरण कर बताया, आखिर उन्होंने सच्चा शिष्यत्व साध बताया।

याद आते हैं समतासागर प.पू.पं. **पद्मविजयजी म.सा.**, अंतिम क्षणों में जब पीड़ा बढ़ने लगी तब पू. गुरुदेव **श्री भुवनभानुसूरिजी म.सा.** ने अपनी कुशल निर्यामणा के बल से हितसिक्षा देकर जागृत किया और पू.पं. पद्मविजयजी म.सा. ने cancer की असह्य पीड़ा में भी समाधि को सिद्ध कर बताई। बालमुनि को cancer का रोग नहीं था, लेकिन इस बाल्य वय में ऐसी अवस्था का भोगी बनना cancer से कम नहीं कह सकते। इस स्थिति में भी समर्पणभाव के बल पर उन्होंने हितशिक्षा को आत्मसात् कर बताई। मुनि **श्री मौर्यरत्नविजयजी म.सा.** ने अरिहंत धून चलाई, सभी साथ में गा रहे थे।

''एक ज आधार अरिहंत - अरिहंत,
संसारमां सार अरिहंत - अरिहंत,
अरिहंत - अरिहंत - अरिहंत - अरिहंत.''

तकलीफ बढ़ने लगी, इसलिए मैंने बालमुनि का बाया हाथ पकड़ लिया, उन्होंने भी मेरा हाथ कसकर पकड़ा, मुनि मौर्यरत्नविजयजी म.सा. ने उनके दाये हाथ में ओघा पकड़ाकर रखा। दोनों गुरुदेवश्री उनके पास बैठकर सिर पर एवं छाती पर हाथ फेरते रहे। धर्मपिताश्री हितेशजी भी पास रहकर सिर पर हाथ घुमाते रहे। थोड़ी बेचैनी होने लगी और कुछ देर में वे बेहोश हुए, आँखें बंद हुई मुँह से मुश्किल से सांस ले रहे थे। सामने गुरुदेव **श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा.** के दर्शन करवाये और बालमुनि ने आँखें खोली, यह उनकी अंतिम चेष्टा थी। डॉक्टर ने जाँच करके हमारी नवकार - धून को रोकते हुए कहा कि उनका परलोक प्रयाण हो चुका है। प्रायः दोपहर के २.३० बजे का समय होगा।

आज आषाढ सुदी ५, प्रभु महावीर का च्यवनकल्याणक (६ का क्षय होने से) रवियोग और सिद्धियोग का सुमेल, इस त्रिवेणी संगम

बालमुनि ने प्रयाण किया।

डॉक्टर की घोषणा सुनते ही राजेशजी (संसारी चाचा) बालमुनि के चरणों में गिर पड़े।

दक्षाबहन अपना रोना रोक नहीं सके, फिर भी वीर माता बनकर उन्होंने ऊँची आवाज में सबसे अनुरोध किया ''कोई भी रोना मत, मेरे पुत्र ने पराक्रम करके वीरगति प्राप्त की है, कोई भी रोना मत...''

पार्थिव देह के पास जाकर माँ ने आशीर्वाद दिये ''जल्दी से मुक्ति सुख को पाना...''

समाधि मृत्यु के दर्शन करके सभी अवाक् रह गये, बालमुनि के पराक्रम के सामने सभी नतमस्तक हो गये। हवा की तरह चारों दिशा में समाधिमरण के समाचार फैलने लगे।

छोटे से जीवन में भी बहुत कुछ पा लिया...

दीर्घ संयम, शास्त्रों का गहन अभ्यास, बड़ी तपश्चर्या, शासन प्रभावना, प्रभावक प्रवचन... यह सब करने के बाद भी जिसकी अभिलाषा रहती है वह वस्तु यह सब किये बिना ही उन्हें प्राप्त हो गई। कईयों के मन में यही अनुभव था कि ''हम संयम के ६० साल में जो न पा सके वह सिर्फ ६ साल के संयम पर्याय में उन्होंने पा लिया, हमें चिंता है कि ऐसा समाधिमरण हमें मिलेगा या नहीं ?''

दूसरों को ईर्ष्या हो ऐसा जीवन जीनेवाले तो बहुत देखे, लेकिन ईर्ष्या हो ऐसी मृत्यु पानेवाले तो यह बालमुनिराज श्री दानरत्नविजयजी म.सा. जैसे विरले ही होते हैं।

''एक उपकार मुझ पर प्रभुजी !
आप ऐसा कीजिये..
जीवन जैसा चाहे देना
मौत ऐसी दीजिये !''

५५ एक सच बात कहूं ?....

बालमुनि का कालधर्म होने के दूसरे ही क्षण में चारों दिशा में समाचार वायु वेग से फैलने लगा। 'बालमुनि' और 'कालधर्म' इस युति का लोग विश्वास नहीं कर पा रहे थे। आश्चर्य, आघात, शोक, आक्रंद ऐसे अनेक अनुभवों ने लोगों को घेर लिया। कई लोग समाचार सुनते ही भीगी आँखें और रोते हृदय से श्रद्धांजली अर्पण करने लगे। कल्पना भी नहीं थी लेकिन जो घटना घटी उससे सभी के हृदय द्रवित हो उठे, कईयों को ऐसा अनुभव भी हुआ कि शाम को भोजन करने बैठे और निवाला गले से उतर ही नहीं रहा था।

अनेक आचार्य भगवंत साधु-साध्वीजी भगवंतों के पत्र हमें प्राप्त हुए। बालमुनि के इस पराक्रम को सभी ने भावभरा नमन किया। सुरत के एक युवान श्रावक का पत्र हमारी नजरों में चढ़ जाये ऐसा था। उसने बताया कि ''मैंने बालमुनि के स्वास्थ्य के लिए कई संकल्प किये थे, उनमें से एक संकल्प था **ब्रह्मचर्य व्रत**।''

बालमुनि की स्वस्थता के सपने तो उसने बहुत देखे थे और अप्रत्याशित समाचार मिलते ही तीव्र आघात लगा। एक श्रावक के लिए युवा अवस्था में इतना त्याग करना वाकई काबिले तारीफ है। बालमुनि स्वस्थ होकर अपनी आराधना में पुनः जुड़ जाये, इस भावना को कितने तीव्र अहोभाव से उन्होंने भावित की होगी, यह इस पत्र से हमें ज्ञात हुआ।

प्रतिक्रमण के बाद रात में हितेशजी और उनके एक स्नेही व्यक्ति गुरुदेव के पास बैठे... बात - बात में उस व्यक्ति ने गुरुदेव से कहा ''साहेबजी ! एक सच बात कहूँ ?''

''बोलो !'' गुरुदेव ने अनुज्ञा दी।

''साहेबजी ! मैं लंबे अरसे से हितेशजी को आग्रह करता रहा कि बालमुनि की तबियत में कुछ सुधार नहीं हो रहा तो बालमुनि को अब वापस घर... और बाद में इलाज करके देखते हैं, शायद कामयाबी मिल जाये। लेकिन हितेशजी ने मेरी एक न सुनी। जब स्वास्थ्य ज्यादा शिथिल हुआ, तब मैंने अत्यंत आग्रह किया, लेकिन आप तो इनको जानते ही हैं, ऐसी कमजोर बातें इनके गले नहीं उतरती।

मैं ऐसा सब सोचता था, लेकिन साहेबजी ! यहाँ आकर मैंने जो देखा... ऐसी सेवा घर में कोई श्रावक नहीं कर सकते। यह अंत का माहोल जो देखा मैं... मेरा मन पुकार उठा **५ साल जल्दी मरना मंजूर है लेकिन मृत्यु तो ऐसी मिले !** ऐसा दृश्य जिंदगी में कभी देखने नहीं मिला, किसी नसीबदार को ही ऐसी मृत्यु मिलती है,'' बड़ी सरलता से भाविकने अपना अपराध स्वीकार लिया। **सचमुच बालमुनि ने बिना किसी उपदेश के मात्र अपने जीवन से सभी को बोध दे दिया।**

बालमुनि के स्वास्थ्य के संकल्प से
पू. मुनि **श्री जिनेन्द्ररत्नविजयजी म.सा.**,
पू. मुनि **श्री त्रिभुवनरत्नविजयजी म.सा.** तथा
पू. मुनि **श्री गणधररत्नविजयजी म.सा.**

आदि साधु भगवंतों ने अनेक आराधनाएँ, तप-त्याग आदि किये।

जब बालमुनि की तबियत ज्यादा खराब हुई, तब हमारे गुरुदेव **श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा.** के आज्ञानुवर्ती प्रवर्तिनी सा. **श्री पुण्यरेखाश्रीजी म.सा.** ने बालमुनि के संकल्प से आयंबिल किये थे।

अमलनेर चातुर्मासार्थ स्थित सा. **श्री ललितांगरेखाश्रीजी म.सा.** तथा सा. **श्री दीपेशरेखाश्रीजी म.सा.** आदिठाणा १८ ने बालमुनि के संकल्प से १०८ अट्ठम, १०८ शुद्ध आयंबिल, १००८ आयंबिल, सवा लाख नवकार मंत्र जाप, ९ लाख 'नमो जिणाणं जिअभयाणं' जाप, ९ लाख घंटे स्वाध्याय, ९ हजार घंटे मौन इतनी आराधना करने का संकल्प बालमुनि को बताया, जिसे सुनकर बालमुनि ने अत्यंत खुश होकर उनके प्रति उपकार भाव व्यक्त किया।

पहले भी २०१९ साल में चातुर्मास में इन साध्वीजी भगवंतों ने बालमुनि के स्वास्थ्य के संकल्प से ४ महिने तक लगातार अट्ठम किये थे और अलग-अलग प्रायः ५० अट्ठम किये थे।

५ महिने तक लगातार शुद्ध आयंबिल, सूर्योदय से दूसरे दिन सूर्योदय तक अखंड जाप, १ बार ३ दिन का, २ बार २ दिन का, १ बार १ दिन का किया था। ये सभी आराधनाएँ सुनकर बालमुनि आनंदित होते और नतमस्तक होकर साध्वीजी भगवंतों की भावना को वंदन करते थे।

सबसे विशेष इन १८ साध्वीजी भगवंत के ज्येष्ठ सा. **ललितांगरेखाश्रीजी म.सा.** स्वयं ४ महिने तक रोज १२५ माला 'नमो जिणाणं जिअभयाणं' बालमुनि के संकल्प से गिनते थे।

- आ. कलापूर्णसूरि समुदाय के सा. **श्री जयदर्शनाश्रीजी म.सा.** ने बलसाणा तीर्थ में अट्ठम तप युक्त जाप आदि करके बालमुनि के स्वास्थ्य के लिए दिल से प्रार्थना की थी।
- सा. **श्री अमितरेखाश्रीजी म.सा.** आदिठाणा ६, जिनका चातुर्मास (२०२०) जवाहर नगर हमारे साथ ही था, उन्होंने भी बालमुनि के संकल्प से सवा लाख 'ॐ ह्रीँ अर्हं नमः' का जाप किया था।
- सा. **श्री ऋजुरेखाश्रीजी म.सा.** ने ६ महीने से ज्यादा बलसाणा मंडन श्री विमलनाथस्वामी का जाप किया था।
- सा. **श्री अर्पणरेखाश्रीजी**, सा. **श्री हिमांशुरेखाश्रीजी**, सा. **श्री तत्त्वांशुरेखाश्रीजी**, सा. **श्री धर्मांशुरेखाश्रीजी** ने जाप सहित अनेक शुद्ध आयंबिल किये थे। सवा लाख 'नमो जिणाणं जिअभयाणं', विमलनाथ स्वामी आदि का जाप तथा १ लाख नवकार मंत्र का जाप भी किया था।

इन सभी की भावना बालमुनि की समाधि के लिए सहायक बनी थी।

५६ नहीं महाराज साहेब ! आपकी बात गलत है....

बालमुनि के कालधर्म के बाद Dr. Vaibhav Shah ने बालमुनि की परिचायक जानकारी ली और मृत्यु के ३-४ कारण लिखकर Death Certificate पर दस्तखत किये। दस्तखत पूर्ण होते ही Pen को हवा में उड़ती छोड़ दी। Pen नीचे गिरे उससे पहले ही अपना रोष व्यक्त करते हुए कहा, ''इसके भी signature करने पड़ते हैं !''

दूसरे दिन डॉक्टर के पिताजी उपाश्रय में आये, उन्होंने बड़े गुरुदेव से कहा ''साहेबजी ! कल वैभव बहुत रोया, कभी रोता नहीं, लेकिन कल खूब रोया, बहुत से मरीजों की देखभाल करता है, लेकिन कल द्रवित हो गया,'' हमें भी आश्चर्य हुआ कि यहाँ तो स्वस्थ लग रहे थे, हमें भी आश्वासन दे रहे थे फिर घर जाकर क्या हुआ ?

कुछ दिन बाद डॉक्टर स्वयं उपाश्रय में आये, बड़े गुरुदेव ने उन्हें पूछा, ''क्यों ? आप घर जाकर बहुत रोये, हमने सुना ?''

''आपसे किसने कहा ?''

''आपके पिताजी आये थे।''

''साहेबजी ! इतने दिन आना-जाना रहा तो थोड़ा Attachment हो गया था, उनके संसारी पिताजी ने भी अग्निसंस्कार के लिए बहुत आग्रह किया था, लेकिन मैं पालखी में हाजिर होते हुए भी नहीं गया। मेरा दिल बहुत कोमल है। साहेब ! मैंने ढेर सारे certificate दे दिये हैं, लेकिन स्मशान में जाकर अग्नि देना वह मुझसे नहीं होता, मैं देख नहीं सकता, लेकिन आप सभी तो स्वस्थ हो ना ?''

''हाँ ! अब सभी स्वस्थ हो गये हैं। आपने खूब सेवा की, आप थे इसलिए आपके भरोसे हमनें Hospital न ले जाकर यहीं रखने का निर्णय लिया। आपका सेवा भाव बहुत उत्तम है। आप थे इसलिए उनकी सारी व्यवस्था हो गई...''

बात पूरी होने से पहले ही बीच में डॉक्टर ने कहा **''नहीं, महाराज साहेब ! आपकी बात गलत है,** यह सब उनके पुण्य से हुआ है, अपने कर्म सिद्धांत को याद रखिये। मैं तो सिर्फ निमित्त हूँ, मैं कुछ नहीं कर सकता, उनके पुण्य ने मुझसे करवाया। उनके पुण्य ने आपको, मुझे, हम सबको काम पर लगा दिया।'' यह सुनकर आश्चर्य के साथ आनंद भी हुआ। गजब के शासनप्रेमी डॉक्टर हैं।

बात आगे चलाते हुए उन्होंने कहा, ''साहेबजी ! बालमुनि इतने गजब के थे कि उनके आगे में कुछ भी नहीं। मैं उनको सुई लगाऊँ Injection दूं तो भी कोई प्रतिभाव नहीं देते थे। हँसते और प्रसन्न ही रहते थे, अंत तक कितने प्रसन्न रहे। बाकी साहेब ! ९० साल के बूढ़े भी हम डॉक्टरों के पास भीख माँगते हैं। कुछ भी करके, मुझे जिंदा रखो ! मृत्यु तो बहुत देखी, लेकिन ऐसा उत्तम समाधिमरण कहाँ देखने मिलता है ? मुझे एक ही दुःख है कि आज वो बच जाते तो आपके पास रहे इन शास्त्रों का अध्ययन करते, ऐसे तो बहुत Brilliant थे ना ? कितनों को उपदेश देते... कितनों का कल्याण करते... लेकिन यह सब करने के बाद भी जो मिलना चाहिए वह सब उन्हें मिल गया, उसका आनंद है। सब सुना... चतुर्विध संघ के दर्शन किये, दोनों गुरुदेव और साधुभगवंतों के मुख से नवकार सुनते हुए एक महोत्सवपूर्वक गये हैं। Hospital में कहाँ ऐसा माहोल होता ? साहेब ! आपने सबसे श्रेष्ठ निर्णय लिया।

साहेबजी ! मैं मेरे मन से पूछुं कि बालमुनि ! आप कहाँ हो ? साता में हो ? तो उनका हँसता चेहरा मुझे कहता है देवलोक में हूँ ! साता में हूँ।

साहेबजी ! मेरा मन तो ऐसा ही कहता है।''

यह जिनशासन के सेवाभावी डॉक्टर हैं जो बिना बुलाए भी बालमुनि को देखने आ जाते और कहते कि ''आप बुलाओ और मैं आऊँ वह तो डॉक्टर होने का मेरा कर्तव्य है, लेकिन बिना बुलाए मैं आऊँ तो मुझे सच्ची सेवा का लाभ मिलेगा।''

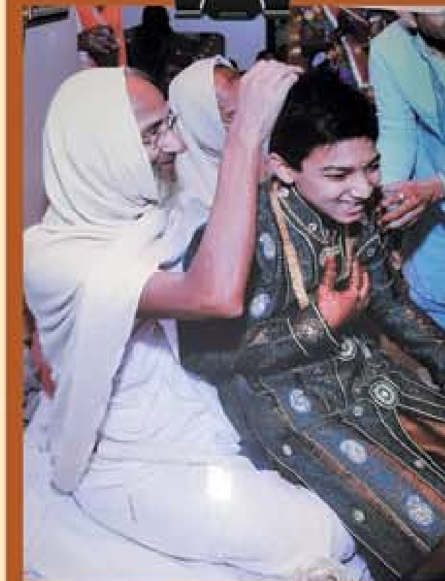

५७

समाधि के आधार स्तंभ....

बालमुनि की समाधि का सबसे महत्त्वपूर्ण कारण हो तो वह है उनका समाधि जीवन... जीवन दरमियान बालमुनि ने कभी भी -

(१) किसी की भी निंदा नहीं की...

(२) किसी के प्रति दुर्भाव संग्रह नहीं किया...

(३) किसी को दुर्भाव हो ऐसा व्यवहार नहीं किया...

(४) गुरुदेव से कुछ नहीं छुपाया...

(५) भूल बताने में आयी तब उसका गलत बचाव न करते हुए सहज स्वीकार किया...

बालमुनि ने दोनों गुरुदेवों के ह्रदय में वास किया था, यह उनके जीवन की सर्वश्रेष्ठ सिद्धि थी और इस गुरुकृपा के प्रभाव से अंत समय तक उनकी समाधि अखंड रही।

जीवन के कष्टों के सामने उन्होंने कभी हार नहीं मानी। सभी इलाज नाकामयाब होने पर भी कभी भी जीवन की बाजी समेट लेने के नकारात्मक विचार नहीं किये और मृत्यु सामने तांडव करने लगी तब जीवन के लिए शोक नहीं किया। जो भी परिस्थिति आयी उसका स्वीकार किया। इस सात्त्विक मनोवृत्ति की नींव में थे हमारे दोनों गुरुदेवश्री।

दोनों गुरुदेवश्री ने शुरुआत से ही उनकी परवरिश इस भांति की थी कि जीवन के हर क्षण में लक्ष्य की विस्मृति न हो। अस्वस्थता आने पर उन्हें इतनी ही समझ दी की अस्वस्थता शरीर की है, तुम तो अब भी स्वस्थ रह सकते हो। उपचार करने हैं तो भी समझ दी कि आराधना अच्छी तरह से हो पाये, इसलिए इलाज करवाना है। अपार वात्सल्य देकर उन्हें तृप्त किया था। इसीलिए तो बालमुनि कहते थे कि ''मेरी यह दशा हो गई तो भी मात्र मेरी समाधि ही नहीं मैं भी जीवंत हूँ तो इन गुरुदेवों की कृपा से'' अंत समय तक समाधि के पूरे प्रयास करके सफलता प्राप्त की। एक आदर्श गुरु के सभी कर्तव्यों को निभाकर, जिस भाव से दीक्षा दी थी, वह भाव सफल हुआ है।

वंदनार्थ आनेवाले सा. **श्री ऋजुरेखाश्रीजी म.सा.** के समक्ष बालमुनि के ये शब्द थे ''गुरुदेव सतत मेरी चिंता में होते हैं... तन्मय हो जाते हैं...''

''४ मम्मी के बराबर १ मम्मी है।''

''गुरु महाराज मेरे साथ रहेंगे तो मुझे समाधि रहेगी ही।''

इस कृतज्ञता की अभिव्यक्ति के जवाब में गुरुदेवश्री यही कहते थे ''ये सभी सेवा कर रहे हैं, बाकी मैं अकेला क्या कर सकता हूँ ?'' और बालमुनि पूरे विश्वास के साथ बोल उठते **''गुरु महाराज ! आप अकेले क्या नहीं कर सकते ? यह प्रश्न है !''**

मुनि **श्री हिरण्यरत्नविजयजी म.सा.** ने ४ वर्ष तक मात्र सेवा नहीं लेकिन पूर्ण संवेदना के साथ सेवा की है। शायद बालमुनि को ठोकर लगी हो तो वेदना उनको हुई होगी। अखंड रीति से नित्य जाप के साथ उनकी सेवा की है। सेवा के साथ ३-३ आयंबिल तथा अट्ठमतपयुक्त जापादि बालमुनि के संकल्प से उन्होंने अनेक बार किये थे।

बालमुनि कहते थे कि -

''मेरी ऐसी सेवा करते हैं कि मुझे झुकना भी नहीं पड़ता। माँ भी न कर सके ऐसी सेवा मेरी कर रहे हैं।''

मुनि श्री मौर्यरत्नविजयजी म.सा. ने अंतिम महीने में उत्तम सेवा की, अल्पकाल के लिए ही लेकिन सबसे महत्त्व की सेवा की। समाधि और भावनाएँ करवाने की, उपदेश सुनाने की, कथाएँ सुनाने की वगैरह सेवा के साथ अंतकाल में निर्यामणा के समय में बीच-बीच में मार्मिक समझ देकर, सूचन करके एवं संवेदनाएँ करवाकर बालमुनि की प्रसन्नता सुदृढ़ की थी।

पू.पं. **श्री धर्मरत्नविजयजी म.सा.**, मुनि **श्री त्यागीरत्नविजयजी म.सा.**, मुनि **श्री कुंथुरत्नविजयजी म.सा.**, मुनि **श्री निरंजनरत्नविजयजी म.सा.**, मुनि **श्री बोधिरत्नविजयजी म.सा.**, मुनि **श्री लाभेशरत्नविजयजी म.सा.** इन सभी महात्माओं ने प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रीति से बालमुनि के सेवायज्ञ में स्व-स्वस्थानानुसार आहुति दी है। जिसके कारण अंतसमय की समाधि की चुनौती को हम जीतने में सफल हुए।

५८ २ श्रावकों की श्रेष्ठ वैयावच्च...

जनवरी महीने में मुंबई आने के बाद पू.आ.भ. **श्री जगवल्लभसूरीश्वरजी म.सा.** ने Dr. Shyam को मुंबई बुलाकर बालमुनि की जाँच करने के लिए कहा। जाँच करके Dr. Shyam ने बालमुनि को कुछ आयुर्वेदिक उपचार बताये। उस समय भिवंडी से **अरुणजी** हमें वंदन करने हेतु आये हुए थे। इन उपचारों की बात सुनकर मुझे उन्होंने विनति की ''महाराज साहेब ! ये सभी उपचार करने हैं इसलिए अब मैं आपके साथ ही रह जाता हूँ,'' और उस दिन से लगातार ५ महीने तक बालमुनि की सेवा में वे हमारे साथ ही रहे, मात्र दो बार तकरीबन ३ सप्ताह के लिए वे अपने घर गये, बाकी के सभी दिन घर-परिवार को पिताजी और श्राविका के भरोसे रखकर अखंड रीति से बालमुनि की सेवा का भरपूर लाभ लिया। २४ घंटों की पूर्ण वैयावच्च करके उन्होंने बालमुनि के अंतर के आशीर्वाद पाये। बालमुनि अरुणजी से कहते ''अरुणजी ! आप मेरी जबरदस्त सेवा कर रहे हैं, उसके लिए खूब-खूब आभार !'' और अरुणजी भी बालमुनि को हँसाते हुए व्यंग करते ''क्या ? बालमुनि ! आप भी हमेशा सिर्फ आभार और धन्यवाद ही दिया करते हैं, कुछ माल तो दिया करो ! ४ महीने हो गए अब तक पगार नहीं मिला !''

वास्तव में धन्यवाद के पात्र हैं यह सुश्रावक जो अपने संसार के रस को छोड़कर साधु भगवंत की वैयावच्च में दिल से जुड़ गये। विशेष धन्यवाद का पात्र तो उनका परिवार है, उनके पिताश्री सुरेशजी और उनकी श्राविका सिंपल बहन जिन्होंने हमेशा उन्हें अनुकूलता दी। घर में बुजुर्ग अरुणजी की दादीजी कई बार अरुणजी को मिलने - देखने के लिए तरसती थी, लेकिन मात्र फोन द्वारा उन्हें संतोष दिलाकर घर आने का आग्रह न किया। घर में कोई बीमारी हो तो भी अरुणजी की वैयावच्च में जरा भी विक्षेप नहीं आने दिया, ऐसे सच्चे वैयावच्चप्रेमी परिवार को धन्य है !

उनके सुपुत्र वंशकुमार ने भी अभ्यास के लिए साथ रहकर २ वर्ष तक बालमुनि की अवसरोचित सेवा करके बालमुनि के अंतर के आशीर्वाद प्राप्त किये, बालमुनि की wheelchair चलानी हो, गोचरी की व्यवस्था करनी हो, या फिर दवा की व्यवस्था करनी हो... हर समय उत्साह और प्रेम से उनके उपचारों में सहायक बनकर अनूठा लाभ लिया है।

दूसरे वैयावच्ची भायंदर के **श्री जंबूभाई** को धन्यवाद है, गुरुदेवश्री के संसारी भाई होने के साथ पिछले ४ महीनों से हमारे साथ रहकर बालमुनि की अखंड सेवा का अपूर्व लाभ लिया। मालिश करना... पथ्य आहार... औषध आदि अनेक तरह की सेवा से बालमुनि की समाधि में सहायक बने और बालमुनि के हृदयाशिष प्राप्त किये।

इन दोनों वैयावच्चप्रेमी ने अखंड रीति से सुदीर्घ समय तक २४ घंटे सेवा का लाभ लिया।

पू.पं. **श्री मोक्षांगरत्नविजयजी म.सा.** के संसारी भ्राता **श्री योगेशजी** ने १½ महीने तक रोज बालमुनि की सेवा का दिल से लाभ लिया। सुबह-शाम-रात के मिलाकर ३-४ घंटों तक उपाश्रय में रहकर बालमुनि की नाभिबस्ति के उपचार की उल्लासपूर्वक सेवा आज उनके जीवन के अविस्मरणीय क्षण बन गये हैं।

- पू.आ.भ. **श्री कुलचंद्रसूरिजी म.सा.** के संसारी पुत्र कुमारपालभाई ने बालमुनि के स्वास्थ्य के लिए अलग-अलग डॉक्टरो से Appointment लेना, Hospital में सुविधाएँ प्राप्त कराना वगैरह के लिए लगावपूर्वक सक्रियता रखकर अनन्य लाभ लिया।

- सुखधाम तीर्थ (पोसालिया) के निर्माता श्री बाबुलालजी के सुपुत्र श्री धीरजभाई ने किसी प्रकार की प्रेरणा के बगैर ही बालमुनि के उपचारों की व्यवस्था संभालकर उत्तम लाभ लिया।

- **Dr. Vaibhav Shah (Goregaon)**
- **Dr. Saurabh Jain (Reliance Hosp.)**
- **Dr. Roshan Bhandari (Nandurbar)**
- **Dr. Shyam (Ahmedabad)**
- **Dr. Patrawala (Walkeshwar)**
- **Dr. M. M. Bhattacharya (Songadh)**
- **Dr. Neha Jaiswal**
- **वैद्य श्री देवचंदभाई गाला (माटुंगा)**
- **वैद्य श्री मनोजभाई (सुरत)**
- **वैद्य श्री आदित्यभाई (सुरत)**
- **वैद्य श्री नीतिनभाई (सुरत)**
- **Dr. M. M. Begani (Bombay Hospital)**
- **Dr. Dhiren Shah (Gowalia Tank)**
- **Dr. Shilpa Bhandari (Nandurbar)**
- **Dr. Farouque Master (Gowalia Tank)**
- **Dr. Bharat Bhai (Bardoli)**
- **Dr. Neeta Jain**
- **Dr. Sanjay Shah (Surat)**
- **वैद्य श्री भरतभाई (B.C.) (नवसारी)**
- **वैद्य श्री भूषणभाई आगीवाल (नंदुरबार)**
- **वैद्य श्री गौतमभाई (सुरत)**
- **वैद्य श्री तुषारभाई (अहमदाबाद)**

इन सभी भाविकों ने उत्तम सेवा का लाभ लिया है।

- **जवाहर नगर जैन संघ** के ट्रस्टीगण तथा सक्रिय युवानों ने दिन-रात सेवा में तत्पर रहे। विशेष से निलेशभाई, परेशभाई, रींकुभाई, धीरजभाई, कल्पेशभाई, राकेशभाई, भावेशभाई, सागरभाई, केवीनभाई, मोक्षितभाई, ईशानभाई, देवांगभाई, धर्मेशभाई, सत्येनभाई, भाविका बहन आदि भाविकों ने वैयावच्च का सुंदर लाभ लिया था।
- **श्री सम्यग् उपासना जैन संघ** (कालाचौकी-लालबाग) की समझदारी को खूब-खूब धन्यवाद है। जिन्होंने दोनों आचार्यभगवंत का चौमासा अपने संघ में निश्चित होने के बावजूद जब बालमुनि के उपचार तथा समाधि हेतु गुरुभगवंतों ने अन्यत्र चौमासा करने का प्रस्ताव रखा, तब समझदारीपूर्वक वह बात स्वीकारी। २ आचार्य भगवंतों का चौमासा २ साधु भगवंत के चौमासे में बदल गया। आचार्य भगवंत के चौमासे के लिए संघ में

अत्यंत उल्लास और आग्रहभरी पुनः विनंति होने के बावजूद आचार्य भगवंत की इच्छा को स्वीकारकर ट्रस्टीगण ने जिनशासन में एक उत्तम समर्पित संघ का आदर्श स्थापित किया है।

- **व्यारा जैन संघ** :- प्रकाशभाई
- **श्री नंदुरबार जैन संघ** :- पोखरचंदजी श्रीश्रीमाल, नेमाभाई, प्रकाशभाई, विरलभाई, निलेशभाई, भरतभाई, विमलभाई, मनोजभाई, सुभाषभाई, संजयभाई, वैभवकुमार, मोंटुकुमार, समकितकुमार, जैनम, प्रीतिबहन, निता बहन, नीतू बहन, पेरीन बहन, सुरेखा कवाड़, सारिकाबहन कवाड़।
- **श्री धुलिया जैन संघ** :- निलेशभाई, रोहितभाई, मयूरीबहन, श्वेताबहन
- शासनरत्न सुश्रावक श्री कुमारपालभाई वी. शाह
- **गोवालिया टैंक जैन संघ** के गिरीशभाई (महाजन), समीरभाई हेक्कड, रीतेशभाई, रमणभाई, अशोकभाई, श्रेयकभाई, किरणबहन, दर्शनाबहन, नृपलबहन, सीमाबहन, रींकुबहन, भूमिबहन, धारिणीबहन, रतनबहन, जयश्रीबहन आदि।
- **शेष मुंबई** :- महेशभाई (रोहिडावाला), पंकजभाई (पिंडवाडावाला), नरेशभाई (महात्मा), चंद्रकांतभाई (दादर), श्रीपालभाई (दादर), दिलीपभाई (कालाचौकी), भावेशभाई (कालाचौकी), प्रकाशभाई, मदनभाई, प्रदीपभाई, प्रफुलभाई, सागरभाई आदि घंटावाला परिवार, जीतुभाई (दादर), अमरीशभाई, प्रकाशभाई (गुंदेचा गार्डन)
- **सुरत उमरा जैन संघ** :- दिलीपभाई, परेशभाई दाढ़ी, भद्रेशभाई, आशिषभाई, सुनिलभाई, राजेशभाई, हीनाबहन, वर्षाबहन, भाविताबहन, कविताबहन, स्मिताबहन, भारतीबहन, रेखाबहन आदि।
- **भटार रोड जैन संघ** :- गिरीशभाई, विलियमभाई, चंदुभाई
- **कैलाशनगर जैन संघ** :- विनोदभाई, अनिलभाई, राजुभाई, मोंटुभाई
- **अठवागेट जैन संघ** :- अनिलभाई और जीतुभाई वैयावच्ची
- **अडाजन पाटीया** :- जिगरभाई

- सुनीलजी बालड़ (भीलवाड़ा)
- जनकभाई (मातर)
- भरतभाई गोलेच्छा (पाली)
- अक्षयभाई (विजयवाड़ा)
- मयूरभाई दोशी (दिल्ली)
- सचिनभाई (रंगत स्टुडियो)

आदि भाविकों ने दिल से बालमुनि की सेवा-भक्ति की थी।

जवाहरनगर (गोरेगांव) के **नगरसेवक (Corporator)** **श्री हर्षभाई पटेल** के सहयोग से lockdown के समय में पालखीयात्रा में श्रद्धालुओं की भीड़ होने के बावजूद प्रशासन की तरफ से किसी भी प्रकार की प्रतिकूलता न हुई।

हृदयोद्‌गार....

प्रशांतमूर्ति, सुविशाल गच्छाधिपतिश्री प.पू.आ.भ. श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

दर्द के बीच मन को जरा भी कलुषित या आर्तध्यानवाला होने नहीं दिया, यह उनकी समझपूर्ण आत्म परिणति थी।

प.पू. अंचलगच्छाधिपतिश्री प.पू.आ.भ. श्री कलाप्रभसागरसूरीश्वरजी म.सा.

बालमुनिराज का समाधिमय कालधर्म, अद्‌भुत रत्नत्रय आत्मजागृति की अनुमोदना।

वैराग्यदेशनादक्ष प.पू.आ.भ. श्री हेमचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.

बालमुनिराज की आराधना और आंतरिक परिणति पढ़कर मस्तक अहोभाव से झूक गया, सच में उन्होंने मृत्यु पर विजय प्राप्त की। उनके जैसी मृत्यु हमें भी प्राप्त होगी या नहीं यह चिंता है।

प.पू.आ.भ. श्री जगच्चंद्रसूरीश्वरजी म.सा.

इतनी छोटी उम्र में इतना महान गुणवैभव, दिल को आनंद और आश्चर्य में डूबने मजबूर कर देता है और साथ ही कुदरत का विचित्र खेल दिल को आघातमय बना देता है।

दीक्षादानेश्वरी गुरुदेव प.पू.आ.भ. श्री गुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा.

छोटी उम्र में भी बेजोड़ समाधि रखते हुए देखे। कभी कोई फरियाद नहीं, हमेशा हसते रहते, अंतिम समय भी बहुत वेदना होने के बावजूद मुँह की रेखा भी बदली नहीं। कमाल - कमाल की समाधि।

धर्मचक्रतपप्रभावक प.पू.आ.भ. श्री जगवल्लभसूरीश्वरजी म.सा.

छोटी उम्र में जालिम रोग के सामने सहजता से सहनशीलता रखी, अल्प संयम पर्याय में समत्व का शिखर हस्तगत किया।

सरस्वतीलब्धप्रसाद प.पू.आ.भ. श्री रत्नसुंदरसूरीश्वरजी म.सा.

अशाता के तीव्र उदय के बीच भी चेहरे पर स्मित अंत तक संभाले रखने में सफल बने इस मुनिवर के भव्यतम समाधि के पराक्रम को बिरदाने के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है।

प.पू.आ.भ. श्री जयसुंदरसूरिजी म.सा.

शासन को एक बाल संयममूर्ति, समतामूर्ति, प्रसन्नतामूर्ति आराधक की हानि हुई। सत्येनजी ने उनकी साधना का बयान किया कि, 'वे शरीर को आत्मा से अलग करके सांस ले रहे थे' इससे उनकी साधना की गहराई की अनुभूति हुई।

प.पू.आ.भ. श्री अभयशेखरसूरीश्वरजी म.सा.

धन्य माता जिनकी कुक्षि से जन्म लिया...
धन्य पिता जिनके कुल में अवतरण हुआ...
धन्य गुरु जिन्होंने दीक्षा दी...
स्वभाव सुंदर... साधना सुंदर... समर्पण सुंदर... स्वाध्याय सुंदर... सहनशीलता सुंदर... समता सुंदर... समाधि सुंदर.... मान लो कुछ असुंदर था ही नहीं।

प.पू.आ.भ. श्री पद्मसुंदरसूरीश्वरजी म.सा.

२० साल की उम्र में भी ४० साल जैसे परिपक्व लगते थे। गुरुसमर्पण भाव, साधु भगवंत की सेवा... वाकई, मनुष्य भव का सार प्राप्त कर गये....

प.पू.आ.भ. श्री राजहंससूरीश्वरजी म.सा.

अंत तक समाधि में रहें, यह उनके जीवन का सार है।

प.पू.आ.भ. श्री विमलप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

सैकड़ों साधु में एक होंगे।

प.पू.आ.भ. श्री मुक्तिवल्लभसूरीश्वरजी म.सा.

मुनिश्री का जीवन एक प्रेरणाग्रंथ जैसा था।

प.पू.आ.भ. श्री निपुणरत्नसूरीश्वरजी म.सा.

गंभीरता, सरलता, विद्वत्ता आदि गुण संयम जीवन में होने से छोटी उम्र में भी ३ साल से कष्टों के सामने लोहा लेते रहे।

प.पू.आ.भ. श्री अभयचंद्रसूरीश्वरजी म.सा.

महाविदेह में सीमंधरस्वामी के पास चारित्र स्वीकार करके केवलज्ञान पा सके ऐसा जीव हमें आदर्श जीवन बता गया।

प.पू.आ.भ. श्री योगतिलकसूरीश्वरजी म.सा. (आ. शांतिचंद्रसूरि समुदाय)

छोटी उम्र में संयम स्वीकार... तप-स्वाध्यादि द्वारा तीव्र बीमारी में भी स्वस्थ रहे... जाते-जाते हम सभी को सावधान करते गये।

प.पू.आ.भ. श्री नयभद्रसूरीश्वरजी म.सा. (आ. रामचंद्रसूरि समुदाय)

शरीर की अस्वस्थता और सामने मृत्यु होते हुए भी उत्तम समाधि पायी, जीवन छोटा हो या बड़ा, परंतु समाधि रहे वही महत्त्वपूर्ण है।

प.पू.आ.भ. श्री तीर्थभद्रसूरीश्वरजी म.सा. (आ. कलापूर्णसूरि समुदाय)

पूर्व भव के उदय से व्याधि आयी, लेकिन समताभाव से सहन कर समाधि मृत्यु पाये वह महत्त्वपूर्ण है।

प.पू.आ.भ. श्री उदयप्रभसूरीश्वरजी म.सा. (आ. हेमप्रभसूरि समुदाय)

खूब ही आत्मविशुद्धि और गुणनिष्ठापूर्वक बालमनकवत् समाधि शणगार के साथ दिव्यगति प्रयाण जानकर खेद / आनंद का अनुभव हुआ।

प.पू.आ.भ. श्री रविरत्नसूरीश्वरजी म.सा.

छोटी उम्र में तबियत अस्वस्थ होते हुए भी वांचन लेखन करते थे, स्वाध्यायरुचि उत्तम थी। उन्हें पुनः छोटी उम्र में संयम की आराधना मिले।

प.पू.आ.भ. श्री जिनसुंदरसूरीश्वरजी म.सा.

छोटी उम्र में दीक्षा और छोटी उम्र में मरणांत उपसर्ग का अनुभव समभाव से मुनिवर ने सहन किया। ६ साल के संयम पर्याय में प्रसन्नता का मजा उड़ा गये।

प.पू.आ.भ. श्री यशोविजयसूरीश्वरजी म.सा.

एक उगते सूर्य का अकाल अस्त हुआ, तेजस्वी युवान साधुस्वरुप तारा अचानक आसमान से टूट पड़ा। उनकी शक्ति + शुद्धि का समन्वय देखकर हृदय आर्द्र हो गया।

पू.पं. श्री वीररत्नविजयजी म.सा.

बाह्य शरीर खोखला था, आंतरिक वैभव जीवंत था। सहिष्णुता क्या होती है ? बालमुनि से सीख सकते हैं। ६० साल की संयम साधना के बाद हम जो नहीं पा सके, वह इस बालमुनि ने सिर्फ ६ साल की साधना से पा लिया है।

पू.पं. श्री नंदीभूषणविजयजी म.सा.

छोटी उम्र में विदाई दिल को करंट लगा गई।

पू.पं. श्री लब्धिवल्लभविजयजी म.सा.

बालमुनि का पंडित मरण जिन्होंने देखा, जिन्होंने सुना उन सभी को एक अशब्द शिक्षण प्राप्त हुआ।

पू. मुनि श्री न्यायरत्नविजयजी म.सा.

ऐसी ही Short & Sweet 'साधना' अगर २-४ बार भी मिल जाये तो मोहराजा की हालत भी २-४ साल में ही उनके शरीर जैसी नाम शेष रह जायेगी।

मुनि श्री प्रीतदर्शनविजयजी म.सा.

उनकी दीक्षा के बाद जब मिलना हुआ, तब उनकी नम्रता, सरलता, समर्पणता और संयमैकलक्षता वाकई आकर्षित कर गई।

पू. मुनि श्री त्रिभुवनरत्नविजयजी म.सा.

उनकी समाधि देखकर मन लालायित हो उठता है, जो ऐसी समाधि मिलती हो तो मैं आज मरने को तैयार हूँ।

पू. मुनि श्री तत्त्वरत्नविजयजी म.सा.

सारा संयम जीवन व्यतीत करने के बाद भी जो Result हाथ नहीं आता, वह दानरत्न म. ने थोड़े ही समय में प्राप्त किया।

पू. मुनि श्री त्रिपदीरत्नविजयजी म.सा.

उन्होंने २० वर्ष में जो साध लिया वह साधने में मुझे २० जनम लग जायेंगे।

प्रवर्तिनी सा. श्री पुण्यरेखाश्रीजी म.सा.

उनकी अंतिम समाधि सुनते - सुनते आँखों से आँसू बहने लगे। बालमुनिश्री की समता साधना को खूब - खूब धन्यवाद।

सा. श्री मनीषरेखाश्रीजी म.सा.

''जीवन कितना जीया वह नहीं, लेकिन कैसा जीया वह महत्त्व का है'' इस पंक्ति को बालमुनि ने यथार्थ कर दी।

सा. श्री महावीररेखाश्रीजी म.सा.

इतनी छोटी उम्र में - छोटे पर्याय में अत्यंत नादुरस्त अवस्था में इतनी अव्वल कोटी की समाधि न देखी... न सुनी... मेरे अनुभूति का तो सवाल ही नहीं।

सा. श्री धर्मांशुरेखाश्रीजी म.सा.

'बालमुनि' इतना ही सुनते सभी की आँखे भर आई। सभी को प्रिय बने ऐसा उनका व्यक्तित्व था। छोटे पर्याय में स्व-पर समुदाय के सभी के हृदय में उच्च कोटि का स्थान प्राप्त किया। नादुरुस्त स्वास्थ्य होने पर भी कभी मुख पर ग्लानि न थी। प्रभु वीर ने बहुत उपसर्ग सहन किये, लेकिन बालमुनि ने जो सहन किया, वह प्रभु से कम भी नहीं था। उन्हें देखकर धन्ना अणगार याद आ जाते हैं।

सा. श्री. वर्धमानरेखाश्रीजी म.सा., सा. श्री हितैषीरेखाश्रीजी म.सा.

पू. मुनिराज दानरत्नविजयजी म.सा. का जीवन चरित्र पढ़ते आज भी हृदय अहोभाव से और आँखें अश्रु से छलक उठती है। साहेब ! उन्हें प्रभु पूरी तरह मिल गये थे।

सुश्रावक समीरजी हेक्कड़

पूर्व के समता साधक महापुरुषों को तो देखा नहीं, लेकिन इस काल में तो इन महापुरुष को देखा है।

सुश्राविका नृपलबहन

छोटी उम्र में समझ, सहज स्वीकार भाव और साधक दशा बहुत अनुमोदनीय है। वे शुक्र के तारे की तरह जिनशासन के गगन में सिर्फ थोड़े समय के लिए आये और अपने गुणों की आभा प्रसराते गये।

सुश्राविका रींकुबहन (गोवालिया टेंक)

इस संघ के अणु-परमाणु में उनका वास अब तक है, उनके मुख की सौम्यता पूर्णिमा के चंद्र जैसी निर्मल थी।

सुश्राविका सीमाबहन

उनका हसता चहरा उनके प्रसन्नताभरे संयम जीवन की गवाही देता था। उनका शरीर हाडपिंजर जैसा हो चुका था, लेकिन प्रसन्नता सुदृढ़ थी।

सुश्रावक श्री G.R. Bhandari

पूर्व जन्म की अपूर्ण आराधना व साधना पूर्ण हो जाने के बाद संसार को अलविदा और अगली मुसाफिरी करने प्रस्थान कर गये।

सुश्राविका भाविकाबहन

हमारे Time waver Aura machine में बालमुनि के Aura का निरीक्षण करते किसी भी (Healer) की अहो ! अहो ! हो जाय। उनकी शारीरिक परिस्थिति कमजोर थी, लेकिन मानसिक स्तर पर उनके भाव मेरु की तरह अडग थे। उनका willpower भी प्राय ७५% था, जो काफी High rate है। उनकी सेवा का लाभ मिला, उसके लिए आभारी हूँ।

सुश्राविका हीनाबहन

पू. बालमुनि एक मनमोहक अस्तित्व !...

सदा मुख पर निर्दोषता बसे, दीर्घ बीमारी... जिसमें से निकलने की आशा की एक किरण न थी, फिर भी मुख पर कही भी विषाद, दीनता का एक अंश मात्र न था।

सुश्रावक श्री जंबूभाई

जो उनके जीवन के सर्वस्व थे, ऐसे उनके दोनों गुरुदेवों ने कैसे संस्कारों से उनकी परवरीश की होगी की बड़े-बड़े आचार्य भगवंतों को भी शंका होती है कि हमें भी एसी समाधि मिलेगी या नहीं ?

मेरे हृदय सरोवर में विराजित सुंदर श्वेतकमल...

हे प्रिय ! बालमुनिराज **श्री दानरत्नविजयजी म.सा.**
आपको कोटि-कोटि वंदन...

आप मेरे हृदयमंदिर में एक सुंदर प्रतिमा हो,
जिसके दर्शन मात्र से मैं आनंदित-आनंदित हो जाता हूँ।
आप मेरे जीवन रुपी **मरुधर** में एक सुंदर **कल्पवृक्ष** हो,
जिसके दर्शन मात्र से मेरा मन प्रसन्न-प्रसन्न हो जाता है।
समता का आदर्श बताकर जग को **जीत** लिया,
संयम का **हर पल** है सुंदर **जीवन साध** लिया (राग : चरणों में तेरे रहकर भगवन)

आपके जीवनरूपी मानसरोवर में अनेक **गुणहंस** सुशोभित थे। आपके एक-एक गुण को एकदम नजदीक से अनुभव करने का व आनंद लेने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ ! जिससे मैं और मेरा जीवन भी धन्यातिधन्य बन गया।

इन ६ वर्षों की संयम साधना के दौरान आपकी **आत्मा की निर्मलता, जीवन की पवित्रता** और **सद्गुणों की विशालता** तीनों के दर्शन हुए। आपकी यह आंतरिक समृद्धि देखकर मेरी आत्मा आपके प्रति नतमस्तक हो गई... सच में आप एक विरल विभूति थे। इन ६ वर्षों में आपने ऐसी साधना की है कि आपके गुणों की स्मृति जीवनभर मेरे दिल में धड़कती रहेगी। ये ६ साल मेरे संयम जीवन के सबसे सुनहरे और पवित्र क्षण थे, जो मेरा परम सौभाग्य है, लेकिन अब आपके जैसा गुणवान कल्याणमित्र का आजीवन साथ खो दिया, यह मेरा परम दुर्भाग्य है।

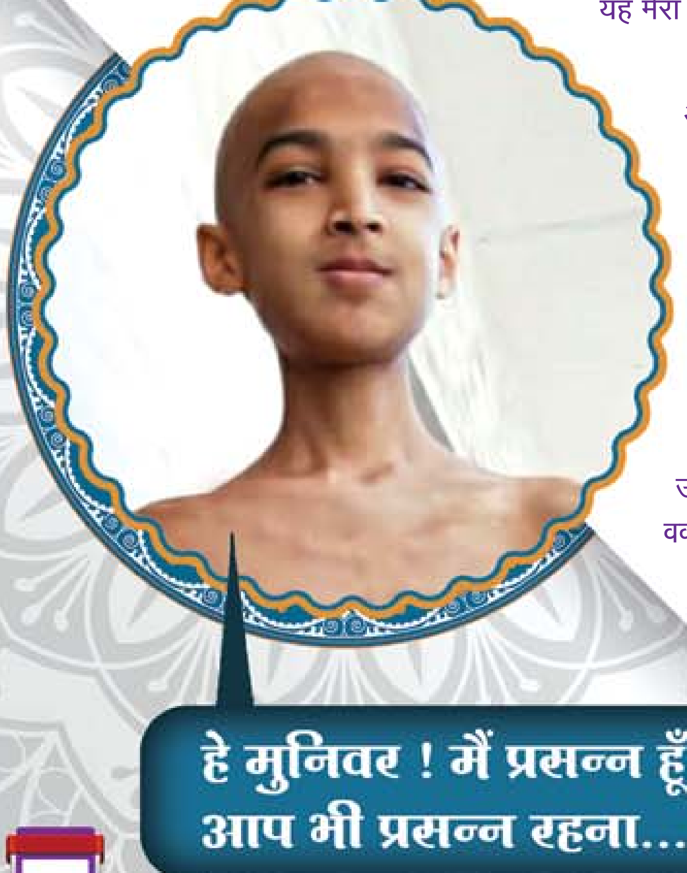

अंतरमन का दर्पण **मुख** है, आपके अंतरमन में जो आनंद और प्रसन्नता थी वह आपके **चेहरे की खुशी** देखकर जानी जाती थी। किसी भी परिस्थिति में आपकी मुखाकृति हमेशा खुश-खुश ही रहती थी। चाहे दुःख आवें कि सुख... चाहे पीड़ा हो या साता... आप आत्मा की साधना में सदैव **आनंदित** और **मस्त** रहते थे।

हे बालमुनि ! आपके साथ बिताया हुआ हर पल यादगार और दिल को छू लेनेवाला था। अध्ययन करते समय आप की **विनम्रता** हो या गुरुदेव के प्रति उच्च कोटि का **समर्पण**, शांतसुधारस का पाठ करते वक्त आपकी **तन्मयता** हो या योगी की तरह नवकार जाप में आपकी **ध्यानलीन** अवस्था, महात्माओं की सेवा-भक्ति करने की सदैव **उच्च भावना** हो या उचित अवसर पर सहवर्ती मुनियों को दिया हुआ **प्रेम** और **सांत्वना...** देह की अस्वस्थता होने के बावजूद भी मन में सदा **समता-प्रसन्नता का अनुभव करना** हो या मृत्यु समय भयभीत हुए

बिना **श्रेष्ठ समाधि** की मस्ती।

आपका हर गुण और पवित्र जीवन मेरे लिए आजीवन **आदर्शभूत** रहेगा। आपने पिछले कई वर्षों से देह की प्रतिकूलता को महसूस की, लेकिन संसार की असारता - अनित्यता को भलीभांति जानकर और पूर्वभव में किए गए कर्मों के फल आज उदय में आए हैं, ऐसी तत्त्वविचारणा कर नश्वर शरीर के प्रति ममत्वभाव को दिन-प्रतिदिन कम किया करते थे और मुझे भी कर्मशत्रु के साथ लड़ने की शिक्षा देकर महान उपकार किया।

संयमजीवन का सार पाये हैं ये अणगार,
आनंद समाधि - मृत्यु - उपशम दया गुणसार
ये मुनिवर तो सभी के प्यारे हैं, शासन के सितारे हैं।
(राग : चंदा कब दूर गगन से)

आपके महान व्यक्तित्व को देखकर सभी लोग आकर्षित होते थे, परंतु आपने कभी भी अभिमान या घमंड नहीं किया था। आपके उत्कृष्ट गुणों की खुशबू के कारण मेरा भी मन भ्रमर बन गया था। आपके गुणों का वर्णन शब्दों में करना मुश्किल हैं, क्योंकि आपके आध्यात्मिक गुण शब्दों से परे हैं।

गुरु के प्रति **उत्कृष्ट समर्पणभाव**, गुरुभक्तिसेवा, सहज शांतस्वभाव, संयम क्रिया में रुचि, **सुंदर व्यवहार,** मधुर वाणी, **विनम्रता**, सहिष्णुता, गुणी और गुणों के प्रति अनुराग भाव, तत्त्व सुनने की उत्कंठा, **सत्त्व,** धैर्य, गांभीर्य, दाक्षिण्य - किसी की भी योग्य इच्छा का अनादर नहीं करना, प्रसन्नता, समता, आत्म-जागृति, समाधि-मृत्यु से **भय** नहीं, जीवन में **खेद** नहीं और सबसे विशेष गुण - कोई भी प्रसंग हो (सुखद-दुःखद) उसे **समभाव** से सहन करना।

मज्झत्थो निज्जरापेही समाहिमणुपालए ॥ (आचारांग सूत्र - ८/८/५)

अर्थ : रागद्वेष में **समभाववाले** मुनि **निर्जरा** की अपेक्षा रखकर **समाधि** का पालन करते हैं।

भले ही **शाता** या **अशाता** वेदनीय का उदय हो परंतु **मोहनीयकर्म** के **क्षयोपशम** से ही **समाधि** मिलती है। आपने पूरे **साधनाकाल** में **मोहनीय** का जोरदार **क्षयोपशम** किया था... वह शस्त्र था - **'आदरपूर्वक गुर्वाज्ञापालन'**। आपका यह एक गुण मेरे जीवन में आ जाए तो मेरा **मोक्ष** नजदीक आ जायेगा।

हे गुणवान मुनि ! एक छोटी-सी तकलीफ या बीमारी हो जिसमें मैं बेचैन और चिंताग्रस्त हो जाता हूँ लेकिन आपने तो बड़ी बीमारी से पीड़ित होने के बावजूद शिकायत नहीं की एवं तनाव - चिंता और विकल्पों से परे थे। आपका साहचर्य और हितकर वचन हमेशा के लिए यादगार रहेगा। मैं आपके उपकारों को कदापि भूल न पाऊँगा।

प्रायः कर्मवश सभी के जीवन में दुःखद-सुखद घटना क्रमशः घटित होती है, लेकिन एक ही साथ, एक ही समय पर दोनों का होना मेरे जीवन में हुआ - दुःखद - **शासन के भावि आचार्य** योग्य - **विशिष्ट गुणसंपन्न** महात्मा की चिरकालीन विदाई - सुखद - **शासन के रहस्य** स्वरुप तत्त्वज्ञान, **उपशम समता** को पाकर **आपने अशाता के उदय** से लेकर जीवन के अंतकाल तक समाधि रखकर पंडित-मरण प्राप्त किया व **निकट मोक्ष गामी** बने, इसलिए आनंद ही आनंद है। **सम्यग्दर्शन** के बिना इस घोर व्याधि में **सहिष्णुता** रखनी असंभव है।

हे बालमुनि ! विजयनगर प्रथम चातुर्मास में ही आपने मेरी एक महीने तक कमाल की सेवा की और ठोस **संस्कृत** अध्ययन किया। गढ़सिवाना में बड़े गुरुदेव के अट्ठम के पारणे में तथा मुनिओं की गोचरी भक्ति का लाभ लेकर **अपूर्व निर्जरा** की एवं उल्लासपूर्वक स्वयं गुरुदेव की नित्य सेवा की। नाकोड़ा में आ. श्री जितेन्द्रसूरिजी म.सा. के गुणानुवाद सभा में आपका प्रथम ५ मिनिट का **आकर्षक प्रवचन**, **न्याय ग्रंथों** का ठोस अभ्यास। सुरत में पेट के ऑपरेशन दौरान आपकी अजब-गजब की जागृति और **प्रसन्नता** देखकर सभी

साधु-साध्वीजी को **आश्चर्यचकित** करना और बीमारी में भी **मर्दानगी** से देह कष्ट को **सहन** करना। नवसारी में आपको संसारी परिवार के प्रति न **ममत्व** था न **स्नेह**, आप **ज्ञानगर्भित वैराग्य** के धनी, अंतर से संसार की मोह-माया का त्याग किया था। नंदुरबार में पेट दर्द की बड़ी तकलीफ में भी **प्रभु-प्रभु** के नाम पर **समाधि** रखी, लेकिन पीड़ा की शिकायत न की, दुर्ध्यान नहीं किया।

आपका प्रिय गीत -

नाथ ! इतनी हे अरज, कृपा-निधान कीजे स्वीकार, तोड़ के माया के बंधन, कीजिअे **भवसिंधुपार**, आना-जाना सबको **अकेले**, इस जहाँ की भीड़ में, **अंतिम घडी** अब हे दयालु, करुं आप **''शरण स्वीकार''** मैं बनू कमजोर **मेरी सांस** भी हो आखरी **दीजे दरस** उस वक्त आकर हे यही **''अंतिम पुकार...''**

गोरेगांव में अंतिम दिन **श्री शंखेश्वर** प्रभु के पास **समाधि की प्रार्थना** की और करीबन १० बजे **पूर्वमहापुरुष के दर्शन** किये। गजसुकुमाल, **धन्ना-शालिभद्र जिन्होंने शिला पर संथारा किया था,** अवंतिसुकुमाल, मैंने पूछा ''अवंतिसुकुमाल काल करके कहाँ गये ?'' आपने होंठों से जवाब दिया, - **'नलिनी गुल्म !'** आप पूरे जागृत और होश में थे। इसीलिए अंत समय में गुरुमाँ को याद किया। **गुरुवचन** से **आत्मपुरुषार्थ** कर **वेदना-शरीर** को भूलकर **प्रभु-प्रभु** से **आत्मसमाधि साध** ली। बालवय में देह की दुर्बल अवस्था को प्रसन्नता से सहन करना यहीं आपकी महान साधना थी। आप सच्चे आत्मसाधक थे।

आपके सभी गुण विशिष्ट थे, साथ में आपका पुण्य - यश - सौभाग्य नामकर्म भी विशिष्ट था। आपकी हर पसंदगी विशिष्ट थी। भक्ति हो या अध्यात्मयोग, ज्ञान हो या सेवा-योग आप भी निराले और विशिष्ट थे। आपकी रुचि हमेशा आत्मलक्षी थी। आप बाहर के लोकसंपर्क व भौतिक आकर्षणों से निर्लेप थे। **आपका मूलभूत आत्मद्रव्य ही बहुत निर्मल था, आपकी पात्रता भी बहुत ऊँची थी।** इसीलिए खराब या विकट निमित्तों के बीच में भी आपने मन की स्वस्थता बनाई रखी। कभी भी दूसरों पर दोषारोपण, टीका व निंदा नहीं की। कभी भी आपको मायूस-नाराज होते हुए न देखा, कभी भी मुँह गिरा हुआ नहीं देखा। देखा हमेशा हसता-खिलता हुआ चेहरा, देखा नित्य स्वाध्याय ध्यान में संयमक्रिया में मग्नता। संसार में सुख-सामग्री और धर्मसामग्री तो सबको मिलती है, परंतु **प्रसन्नता पाना** तो, **जिनवचन से भावित आंतरिक निर्मल परिणति** से ही शक्य है। जिसके आप धारक थे।

समय-समय पर आपकी देह के साथ आत्मा की भी चिंता होती थी, इसलिए मेरे पढ़ते वक्त जो-जो अच्छे-अच्छे मार्मिक श्लोक आते थे, जिन्हें सुनकर आपकी आत्मजागृति, कर्म की कटु विपाकता, देह की नश्वरता के बार में, तत्त्वज्ञान की बढ़ोत्तरी होती थी और समाधि मिलती थी। जैसे कि - आचारांग, उत्तराध्ययन, ज्ञानसार, योगसार, हृदयप्रदीप, आत्मानुशासन समाधिशतक ग्रंथों के विशिष्ट श्लोक।

हे **ग्लान महात्मा !** आपने तीर्थंकर की सेवा का लाभ देकर मुझे उपकृत किया। आपने केवल गुरु के हृदय में ही स्थान प्राप्त नहीं किया, बल्कि हम सभी के हृदय में वास किया।

अनंतोपकारी तारक गुरुदेवश्री की कृपा से पिछले चार वर्षों से मुझे आपकी सेवा का उत्तम लाभ मिला। भले ही मैं अखंड सेवा न कर सका, लेकिन सेवा करने का भाव अखंड रहा। वह भवोभव मेरे साथ रहे। निःस्वार्थ सेवा करने का गुण मुझे प्राप्त हो, ऐसी परम कृपालु परमात्मा से प्रार्थना। आप मेरे विद्यार्थी भी थे, विद्यागुरु भी थे, गुरुभाई भी थे और शिष्य भी थे। समाधि देनेवाले भी थे और हितचिंतक कल्याणमित्र भी थे, हो और रहोगे।

हे पुण्यशाली ! गुरुकुल में सभी सहवर्तीओं में वैयावच्च गुण जोरदार था, जिससे आपको खूब शाता और समाधि रही। आप आत्मिक शांति का अनुभव हर क्षण करते थे। आप पूरे दिन अप्रमत्त रहते थे। **स्वाध्याय-सेवा** और **जाप** में मग्न रहते थे। आपकी अनोखी पहचान -

दिन में कभी सोना नहीं, रोग में कभी रोना नहीं,
हिम्मत कभी खोना नहीं, निजानंद से जुदा होना नहीं।

कृपासागर दोनों गुरुदेवश्री ने तो आपका उत्तम योगक्षेम करके विधिपूर्वक **अंतिम पच्चक्खाण** कराकर **दुर्लभ समाधि के शिखर** पर आरोहण कराया, उनका उपकार **अनंतगुणा** है। इस संयम पर्याय में दोनों गुरुदेवों का सर्वश्रेष्ठ गुणवैभव और उनकी अनुपम महानता - लघुता - दक्षता का साक्षात् दर्शन कर मैं कृत्यकृत्य हो गया, ओ गुरुवर ! मेरे उपर भी ऐसी कृपा जरुर करना। गुरुजी, पंन्यासजी भगवंत और सभी साथी मुनियों ने भक्तिभाव से खूब सेवा की और दोनों उपकारी हितचिंतक विद्यागुरु मुनि श्री मौर्यरत्नविजयजी म.सा. और मुनि श्री क्षमारत्नविजयजी ने भी रात-दिन आपकी अच्छी तरह सेवा करके समाधि प्रदान की। उनकी सच्चे दिल से अनुमोदना करता हूँ।

आपके संसारी माता-पिता ने भी जो हिम्मत - धीरज रखकर सेवा भक्ति की और समाधि में सहायक बने, उनकी भी खूब-खूब अनुमोदना। आपकी समाधि में सहायक तमाम आचार्य भगवंत - साधु-साध्वी भगवंत और श्रावक-श्राविका सकल श्री संघ का भावपूर्वक उपकार मानता हूँ। किसी ने आनंद - समाधि द्वारा, किसी ने तप-जप से और किसी ने तन-मन-धन से सेवा भक्ति की, उसकी भी अनुमोदना और धन्यवाद।

समाधि की सभी सामग्री (वस्तु, व्यक्ति, सहायक वचनदाता, प्रेरणादाता, स्थान, वातावरण आदि) उपस्थित होते हुए भी अगर व्यक्ति को समाधि रखने का लक्ष्य ही न हो तो सब निष्फल... आपका एक ही लक्ष्य था **Target समाधि...** जिसे **आपने प्रभु** के **स्मरण से सिद्ध** कर अंत में **राधावेध** को साध लिया...

'मुनि क्षमारत्नविजयजी' ने भी आपकी पुस्तक लिखकर कमाल-कमाल कर दिया... आपका **आदर्शमय जीवन** पढ़कर हर एक आत्मा की धर्मभावना अवश्य बढ़ेगी। कर्मोदय से दुःख या चिंता में **हिम्मत** मिलेगी... रोग-बीमारी में स्वस्थता - **सहनशीलता** मिलेगी। जीवन में कठिनाईयाँ **सहन** करने का एवं सदैव **खुश** रहने का भाव जगेगा। मुनि भगवंतों की तरफ आदरभाव-**सन्मानभाव** बढ़ेगा। बोधि बीज, **समकित** -विरति प्राप्त करेंगे। मृत्युकाल में **आत्मजागृति - समाधि** रखने का **आलंबन** मिलेगा, शास्त्रवर्णित **पंडितमरण** की चाहना भी सभी को होगी।

हे बालमुनि ! आप तो महानिर्जरा को साधकर स्वकल्याण कर गये और समता का उच्च आदर्श प्रदान कर परकल्याणक भी किया... अनंतभव के बाद ऐसी दुर्लभ घटनाएँ घटती है, एक बार पंडितमरण से भवोभव सुधर जाते हैं, मोक्ष नजदीक आता है, आत्मा-परमात्मा बनती है। समाधि रखना बहुत ही दुर्लभ और कठिनतम कार्य है, मात्र आत्मपुरुषार्थ से ही शक्य है।

गोरेगांव में यह **दृश्य** जिसने भी देखा वे **धन्य-धन्य** बन गये। इसे देखने शायद देवलोक से देव भी आये होंगे। इस **कलिकाल** में ऐसे **समताधारी बालमुनि** के दर्शन दुर्लभ है। जरुर **पूर्वभव** में कोई **महान साधक पुरुष होंगे ?** नहीं तो ऐसी **समाधि-समता** वह भी भयंकर व्याधि और अशाता के उदय में... ? Impossible... उन्होंने मात्र अंतकाल में ही समाधि नहीं रखी परंतु **आजीवन... पल-पल** समाधि की सीढ़ीयाँ चढ़कर **अंत में शिखर** पर चढ़े हैं। मेरे ऊपर भवोभव उपकार करते रहना। सहाय करते रहना... और मोक्षमार्ग में फिर से मिलना... मेरा भी आत्मकल्याण करना।

आपको मेरे निमित्त से थोड़ी सी भी तकलीफ हुई हो उसका त्रिविध-त्रिविध मिच्छामि दुक्कडम्...। आपकी आत्मा शीघ्रातिशीघ्र विश्वोपकार करने द्वारा मोक्षसुख को पाये, **हे गुणवान !** आपके जैसी जीवन में प्रसन्नता, संयम में जागृति और अंतकाल में समाधि सभी में और मुझ में आएँ, **सभी जीव मोक्षसुख** को पाये, यहीं अंतर की शुद्ध भावना...

॥ शिवमस्तु सर्व जगतः ॥

भवदीय कृपाकांक्षी
बालसेवक मुनि हिरण्यरत्नविजय

आदर्श 'संयम' जीवन

- मुनि श्री हिरण्यरत्नविजयजी म.सा.

(राग : चरणों में तेरे रहकर भगवन प्यार ही प्यार मिला...)

समता का आदर्श बताकर, जग को जीत लिया,
संयम का हर पल है सुंदर जीवन साध लिया...
समता का आदर्श...

बालवय में कितना सुंदर गुण को प्राप्त किया,
बड़े-बड़े दिग्गज आचार्यों के हृदय में वास किया,
''विनय'' विवेक करना कैसे, तुमसे सीख लिया....
समता का आदर्श... १

पूर्व जन्म का कर्म आया तब 'समता' धार लिया,
'खेद-शोक' नही करके तुमने 'प्रभु का ध्यान' किया,
'हसते-हसते' जीना कैसे तुमसे सीख लिया...
समता का आदर्श... २

दुःख में 'धीर' महादुःख में 'वीर' बनकर सहन किया,
समाधि मरण को पाकर तुमने 'संयम' सफल किया,
'श्रमण जीवन' को जीना कैसे, तुमसे सीख लिया...
समता का आदर्श... ३

पूर्व ऋणानुबंध के कारण मिलकर धर्म किया,
'प्रेम', 'समाधि' मुझको देकर उपकार बहुत किया,
'कल्याण मित्र' बनना कैसे तुमसे सीख लिया...
समता का आदर्श... ४

'देह विनाशी, मैं अविनाशी' गुरु शिक्षा प्राप्त किया,
'राधावेध' सम है अंतिम पल जागृत गुरु ने किया,
'गुरुपुण्य' वचन आचरणा कैसे तुमसे सीख लिया...
समता का आदर्श... ५

'गुरु समर्पण' पाकर तुमने जीवन धन्य किया,
गुरुदेव के हृदय में बसकर आतम साध लिया,
'गुणराज यशोमय' बनना कैसे तुमसे सीख लिया...
समता का आदर्श... ६

अंतिम क्षण में दर्द बढ़ा, तब 'गुरु' को याद किया,
गुरुदेव के वचन को पाकर 'प्रभु प्रभु' नाम लिया,
'समाधिमरण' को पाना कैसे तुमसे सीख लिया...
समता का आदर्श... ७

'समता, समाधि' का पाठ सिखाकर जग को बोध दिया,
'उपशमरस' मुनिगुण को धारके, मोह का नाश किया,
'शाश्वत मोक्ष' पाना कैसे, **'मुनिदान'** से सीख लिया..
समता का आदर्श... ८

समता = सहिष्णुता का अनुभव ● उपशम = शांति का अनुभव

विमल - समाधि प्रार्थना

(राग : जिन तेरे चरण की शरण ग्रहुं... / मैया मोरी...) - मुनि श्री हिरण्यरत्नविजयजी म.सा.

प्रभुजी ! समाधि द्यो ने विशाल...
तुम्हीं मेरे **'आतमस्वामी'**, 'स्वरुपरामी' जगपाल !
आजीवन घट में बिराजो, विनंति सुणो हे कृपाल ! १

जन्म-मरण के दुःख है भारी,
'अरिहंत' तुं ही संभाल,
जीवन-सूर्य संध्या ढलत है,
तिम आयु प्रतिपल ॥ २

'परमसौभाग्य' कितना मेरा,
दो गुरुवर रखवाल,
'गुरुकृपा' से 'समकित' पायो,
'आतमज्ञान' विशाल ॥ ३

सद्गुरु मैया परम उपकारी,
वारी मोह जंजाल,
'गुर्वाज्ञा' ही जीवन मेरा,
'मोक्ष' दिये तत्काल ॥ ४

'समतासुख' का फल है मीठा,
भावधरम उजमाल,
दास की इच्छा **'विमलसमाधि'**,
भवोभव देजो कृपाल ॥ ५

'एकदुःख शतसुख' मेरे जीवन में,
कर्मराय है दयाल !
'कर्मविपाक' को दिन-दिन सहते,
हसते-हसते **'बाल'** ॥ ६

औरन की चिंता जहर है,
'परपुद्गल भ्रमजाल',
'आतमचिंता' विन नवि पाऊँ,
'मुक्तिकन्या' वरमाल ॥ ७

पूर्वपुरुष कितने थे ज्ञानी,
देहचिंता दिया टाल,
देहातमभ्रमज्ञान से छूटा-छूटा
ममत्व विशाल ॥ ८

'मृत्युभय मुझ न सतावे,
'भवभ्रमण' दुःखटाल,
समता **'समाधि'** आनंद दीजे
आतम के रखवाल ॥ ९

तुम्ही मेरे **जीवनस्वामी**,
समाधिदायक रखवाल,
शंखेश्वर प्रभु प्रगट प्रभावी,
दर्शन द्यो प्रतिपल... १०

अंतिम श्वासे घट में पधारो
कृपा करो दयाल,
''दान'' दियो प्रभु ! इतनी अरज है
सेवक है अति **''बाल''** ॥ ११

भवोभव **'प्रीत'** निभावो सांई,
'दानवचन' को पाल,
'सेवक' **''प्रभु''** को नमन करत है,
केवलज्ञाने निहाल ॥ १२

शाता = देह की स्वस्थता ● समाधि = आत्मा का आनंद

अचिंत्य शक्ति स्रोत : महातपस्वी प.पू.आ.भ. **पुण्यरत्नसूरीश्वरजी म.सा.**
सद्गुरुदेव : महाज्ञानी प.पू.आ.भ. **यशोरत्नसूरीश्वरजी म.सा.**

दानगुण वंदनावली

(राग : हे प्रभु ! आनंददाता ज्ञान हमको...) - मुनि श्री हिरण्यरत्नविजयजी म. सा.

कलिकाल में ''आदर्श मुनिवर'', उच्चगुण से शोभते,
''समतासमाधि'' जीवन में, हरपल हृदय में धारते,
गुरुवाणी से शुभध्यान में, ''उत्तम समाधि'' साधते,
''मुनिदानरत्न'' को वंदना, शिवमार्ग को जो साधते.

''समतासमाधि'' धारके, संयम जीवन को पालते,
''आनंद और प्रसन्नता'', आजीवन दिल में धारते,
निजातमा में रमण करते, ''ज्ञानध्यान'' को साधते,
''मुनिदानरत्न'' को वंदना, शिवमार्ग को जो साधते.

समभावसमताऽऽलंबने ''निजशुद्ध तत्त्व'' गवेषते,
काया की ममता तोड़कर, ''समत्व'' मन में धारते,
''प्रसन्नमुख-मुद्रा'' मनोहर, शांति सद्गुण धारते.
''मुनिदानरत्न'' को वंदना, शिवमार्ग को जो साधते.

वैराग्य के शुभमार्ग को ''महायोगी'' बनकर साधते,
स्वजन-स्नेह को छोड़कर ''एकत्व'' मन में धारते,
संसारराग से रहित थे, ''निर्लेपगुण'' में मस्त थे.
''मुनिदानरत्न'' को वंदना, शिवमार्ग को जो साधते.

मुख सौम्यमुद्रा चंद्रसम है देह ''धन्ना मुनिवरा'',
''क्षमता सरलता नम्रता'' थे, चित्त के भूषणवरा
''गंगसम निर्मलजीवन'' और आत्मगुण से शोभते.
''मुनिदानरत्न'' को वंदना, शिवमार्ग को जो साधते.

''मैत्री करुणाधार के'' सभी जीव को मुनि चाहते,
विनय विवेक दाक्षिण्य से, सबके दिल को जीतते,
''कृतज्ञता में शिरोमणि'' उपकार को नहीं भूलते.
''मुनिदानरत्न'' को वंदना, शिवमार्ग को जो साधते.

''चैतन्यतत्त्व'' में रमणता और ज्ञानध्यान में लीनता,
प्रभुभक्ति की शुद्धता और गुरुजनों से नम्रता,
''प्रेममय'' व्यक्तित्व जिनका ''हेममय'' उज्ज्वलता.
''मुनिदानरत्न'' को वंदना, शिवमार्ग को जो साधते.

सरसविरस-आहाररस में ''स्वाददोष'' को टालते,
''भक्तिरस'' में डूबकर जो अशुभरस को टालते,
''उपशम अमीरस पान'' कर आनंदरस में म्हालते.
''मुनिदानरत्न'' को वंदना, शिवमार्ग को जो साधते.

गुरुदेवभक्ति मग्नता ''चारित्र'' में अनुरक्त थे,
गंभीरधीर सरलमना जो, ''ज्ञानरस'' में मग्न थे,
निंदा नही, दीनता नही, ''शुभप्रेम'' सबको अर्पते,
''मुनिदानरत्न'' को वंदना, शिवमार्ग को जो साधते

शासन के सारे योग में है ''समतायोग'' की मुख्यता,
''वर विनय सेवा ज्ञान तप और ध्यान-भक्ति मग्नता'',
''समभाव बिन मुक्ति'' नही यह ''तत्त्वरस'' को धारते,
''मुनिदानरत्न'' को वंदना, शिवमार्ग को जो साधते.

मुनि श्री हिरण्यरत्नविजयजी म. सा.

साधना की पुण्यकथा

(राग : पल-पल मेरे रोम में मेरे श्वास में...)

सभी जीव में ''सिद्धत्वदर्शी'' प्रेम से उपदेशते,
गंभीर मुद्रा ''प्रियदर्शी'' प्रेम से आलापते,
अपराध मेरा माफ करके ''प्रेम'' से अवलोकते,
मुनिदानरत्न को वंदना जो आत्महित को साधते

''तत्त्वश्रवण'' पाठन-पठन अभ्यास में जो ''चतुर'' थे,
जिनवाणी-प्रवचन वचन सुनकर ''तत्त्वज्ञान'' में मग्न थे,
विस्मयवदन ''पुलकित नयन'', अहोभाव को प्रगटाते,
मुनिदानरत्न को वंदना जो आत्महित को साधते.

शुभ भावना में मग्न बनकर याचते ''सम्यक्त्व'' को,
''संवेग और वैराग्य'' रखकर भूलते दुःख दर्द को,
गुरुवचन को स्वीकार करते ''बोधिरत्न'' को धारते.
मुनिदानरत्न को वंदना जो आत्महित को साधते

''अशाता'' दी गत जन्म में वो कर्म आज उदय हुए,
समता रखी ''निजरोग'' में और शुद्धि ''निज उपयोग'' में,
''निजकर्म दोष विचार कर'', संयम समाधि पालते.
मुनिदानरत्न को वंदना जो आत्महित को साधते.

''समताधणी'' समतामुनि समता को धार के जीवते,
''मुस्कान और सहिष्णुता'', आजीवन गुण से शोभते,
ना ''खेद-शोक'' की स्पर्शना, निजसत्त्व गुण को धारते.
मुनिदानरत्न को वंदना जो आत्महित को साधते

''प्रेम, खुशीयाँ'' हमको देकर, हर्ष से मुनि झूमते,
''व्यवहार सुंदर'' पालते, निश्चय से गुण को धारते,
''सेवा सहाय'' में नित्य तत्पर, ''आत्मभाव'' विकासते.
मुनिदानरत्न को वंदना जो आत्महित को साधते.

दोषित ग्रहण में रोते-रोते ''कर्ममल'' विनाशते,
विपत्तियों में हंसते-हंसते ''पापकर्म'' को तोड़ते,
महारोग में प्रभु नाम जपते ''मोहकर्म'' को टालते.
मुनिदानरत्न को वंदना जो आत्महित को साधते

''गुरुचरण'' का अभिषेक करके भाव से आरोगते,
''गुरुवचन'' का स्वीकार करके भावदोष निकालते,
''गुरुराज'' को की प्रार्थना ! ''हर जन्म में मिलना मुझे'' !
मुनिदानरत्न को वंदना जो आत्महित को साधते.

''गुणरत्न'' निर्मल देखकर सभी लोक आपको चाहते,
''प्रतिकूलता में प्रसन्नता'' आश्चर्य से अवलोकते,
सूर्यसम गुणतेज से ''आत्मकमल'' विकासते,
मुनिदानरत्न को वंदना जो आत्महित को साधते.

''गुरुपुण्ययश'' सौभाग्य कीर्ति विश्व में तुज गूंजता,
थे ''वीरयोद्धा'' कर्मयुद्ध में, मोह डरकर भागता,
''स्वाध्याय सेवा गुरु समर्पण'' जीवन में गुण मुख्य थे,
मुनिदानरत्न को वंदना जो आत्महित को साधते.

	ॐ ह्रीँ ''अनंतसमताधारक'' मुनिवरेभ्यो नमो नमः	
	समाधिधारक मुनिराज श्री दानरत्नविजयाय नमो नमः	
	उपकारी सर्वसाधुसाध्वी भगवंतो को नमस्कार	

समाधि की यशोगाथा

(राग : अरिहंत वंदनावली)

समता समाधि के धनी, शुभ ध्यानज्ञान शिरोमणी,
जीवन में समता देखकर, ''गुणगान'' सभी मिल गावते,
''शासनप्रभावक सूरीवरा'' भी, यह ''समाधि'' चाहते,
मुनिदानरत्न को वंदना, आतम समाधि साधते (१)

''सिंहसत्त्व'' के स्वामी बने ''निजतत्व'' के रागी बने,
अर्जुन के जैसे ''वीरयोद्धा'' ''राधावेध'' को साधते,
''गुरुपुण्ययश'' महती कृपा से ''समाधिमरण'' को धारते,
मुनिदानरत्न को वंदना, आतम समाधि साधते (२)

पाकर ''समाधि'' आत्मबल से, जीवन को धन-धन किया,
निजात्मधून में मग्न होकर मोह का चूरण किया,
पल-पल ''समाधि-शांति'' रखकर देहवेदना भूलते,
''मुनि दानरत्न'' को वंदना आतमसमाधि साधते (३)

आनंद है आनंद है आनंद है आनंद है,
इस रोग में आनंद है इस योग में आनंद है,
आनंद है आनंद है आनंद है आनंद है,
मेरे हृदय में आनंद है, मेरे जीवन में आनंद है (४)

''शासन सितारे'' चमककर देवलोक में विराजते,
''शासनप्रभावक'' जैसा जीवन श्रेष्ठगुण से शोभते,
शासन रहस्य को जानकर ''आत्मकल्याण'' को साधते,
''शासनविभूति'' दानरत्न ! भवसागर से तारना... (५)

''महारोग संग युद्ध करते'', कर्मराजा कांपते,
''घनघोर व्याधि'' दुःख को सहते मोह आदि हारते,
आरोग्य नहि ''सुंदर समाधि'', प्रार्थना को चाहते,
मुनिदानरत्न को वंदना, आतम समाधि साधते (६)

होश में पूरे जोश से ''महाकाल'' को स्वीकारते,
अंतिम समय ''प्रभु को पुकारें'' सर्वातम देश से,
''महावीर'' बनकर किया पराक्रम मृत्यु को भी जीतते,
मुनिदानरत्न को वंदना आतम समाधि साधते (७)

समाधिरत्न का ''दानरत्न'' अंतकाल में दे देना,
''मुनिदानरत्न'' की प्रार्थना ! प्रभु आठ कर्म निवारना,
''प्रेमदान'' के दानरत्न से मेरे जीवन को संवारते,
मुनिदानरत्न को वंदना आतम समाधि साधते (८)

गोरेगाँव की पावनभूमि पर 'देवलोक मुनिवर' हुए,
''समाधिमरण'' को साधकर नश्वर शरीर छोड़ते,
शुभभावना में चढ़ते - चढ़ते भवभ्रमण को संकोचते,
''मुनिदानरत्न'' को वंदना ''आत्मसमाधि'' साधते (९)

आज मेरा जीवन धन्य, शुभ भाव की वृद्धि हुई,
पाकर कृपा ''गुणरत्न'' की शुभकार्य की सिद्धि हुई,
भवकोटि दुर्लभ ''सद्गुरु सूरिपुण्ययश'' सत्संगता,
सेवक ''बालमुनि'' चाहे ''सभी जीव पाए सिद्धता'' (१०)

बालमुनि की *Diary* में मन की प्रार्थनाएँ...

હે પ્રભુ! આ આપની નિગ્રહ નહીં પણ અનુગ્રહ કૃપા જ છે, આ પરિસ્થિતિ
સર્જાઈ અને આવા બે મહાન ગુરુદેવોનો અંદરનો પ્રેમ માણવા મળ્યો, અન્ય
વિશિષ્ટ મહાત્માઓનો અંતરના આશીર્વાદ - આશીર્વચનો મળ્યા, પૂજ્ય
ગચ્છાધિપતિ - જયસુંદરસૂરિજી - રત્નસુંદરસૂરિજી - રાજહંસ સૂરિજી આદિ
સ્વ-પર સમુદાયના મોટા ② આચાર્યો - તથા મહાત્માઓનો અંતરનો
પ્રેમ માણવા મળી રહ્યો છે. હે પ્રભુ! આ તારી અનંત કરૂણા-પ્રેમ
છે. કષ્ટ સહન કર્યા વગર તો પ્રભુ! આપનેય કેવળજ્ઞાન મળ્યું નથી
આપને કષ્ટ ઓછા પડ્યા માટે આપ તો અનાર્ય દેશમાં સામેથી કષ્ટો
વેઠવા ગયા. માટે કષ્ટો એ ખરેખર દુઃખ નથી પણ કર્મો દૂર કરવાનું
તથા કેવળજ્ઞાનની નજીક જવાનું અમોઘ બાણ છે.

હે પ્રભુ ખરેખર આપની આ કેવી અનહદ કરૂણા છે, --- કર્મસત્તાએ આ
કર્મનો ઉદય આપ્યો પણ એની સામે સતત આટલા બધા મહાત્માઓ નો
પ્રેમ; તેમના હિતવચનો, આચાર્યભગવંતોની વાચના - હિતવચનો - પ્રેમ
આપ્યો જેના પ્રતાપે મને સાક્ષાત્ સમાધિ નું પ્રદાન કર્યું. જો સંસારમાં
હોત તો મારા ભુક્કા નીકળી જાત કેવા આર્તધ્યાન માં હોત,
પ્રભુ! બસ એક જ પ્રાર્થના કરૂં છું કે ગમે તેવા દુઃખમાં સમાધિ
ટકાવી શકું એ માટે ની જાગૃતિ રહે અને એ જાગૃતિ સમ્યગ્ દર્શન વિના
નહીં જ મળે માટે પ્રભુ! મને સમ્યગ્ દર્શન રૂપી રત્ન આપજો બસ
એ રત્ન આવ્યું એટલે આપ આવ્યા અને આપ મારી સાથે હશો
તો ચોક્કસ મને કોઇ પણ અસમાધિમાં નહી લઇ જઇ શકે.

હે પ્રભુ! પેલા પશુઓની તો કેવી ભયાનક સ્થિતિ છે, સામે પોતાનો સાથી
જીવતો ચિરાય છે અને ફફડે છે, આ દ્રશ્ય જોઇને એને પણ ચોક્કસ
ખબર તો પડી જ ગઇ છે કે --- મારી પણ આવી જ હાલત થવાની છે,
ત્યાં તેને સમાધિ આપનાર કોઇ જ પરિબળો નથી, નથી કોઇ પ્રેમ
આપનાર, કે નથી કોઇ આશ્વાસન આપનાર, કરૂણ રૂદન સિવાય
એની પાસે કોઇ જ ઉપાય નથી. જ્યારે અહીં તો થોડી ગણી
માંદગીમાં આટલા બધા અપવાદોનું સેવન કરીને સમાધિને સાચવવાના
પ્રયત્નો કરાય છે. હે પ્રભુ!

दोषित गोचरी वापरने के पहले की जानेवाली प्रार्थना...

1) શિવમસ્તુ... 2) અણુપરમાણુ... 3) ખામેમિ સવ્વજીવે...
4) ઓ અરીહંત! મિચ્છામિદુક્કડમ્ 3 વાર
5) 3 નવકાર
6) હે પ્રભુ! આ દેહની કાળજી માટે હમણાં મારે દોષિત ગોચરી વાપરવી પડે છે આપ એવી કૃપા વરસાવો કે જલ્દીમાં જલ્દી હું પણ બધા મહાત્માઓની જેમ નિર્દોષ ગોચરી વાપરું અને સંયમ જીવનને શુદ્ધ બનાવુ
7) હે વનસ્પતિના જીવો તમે તમારાં જીવનનું બલિદાન આપીને મારા દેહની પુષ્ટિ કરો છો, તે બદલ તમારો ખૂબ ② આભાર.
આપને મારા માટે પોતાનું જીવન સમર્પણ કરવું પડ્યું એ બદલ આપને મારા હૃદયથી વાંરવાર મિચ્છામિદુક્કડમ. મને માફ કરજો.

वाचना के पदार्थ...

આપણા માથે Death નક્કી છે પણ Date નક્કી નથી.
ઇચ્છા જેવો દુનિયામાં કોઇ રોગ નથી. ઇચ્છા જેવું કોઇ દુઃખ નથી.
ઇચ્છા જેવું કોઈ પાપ નથી.
ગાંઠનું વરસ જાય તેનું નામ વરસગાંઠ.
જ = જન્મ [પછી] ન = નક્કી મ = મરણ ⇒ જનમ
દેહવિલય થાય તે પહેલાં દોષવિલય થવો જરૂરી છે.
દોષવિલય વિનાનો દેહવિલય દુષ્ટ મૃત્યુ છે.
દુનિયામાં 3 વસ્તુ ક્યારેય કોઇની રાહ નથી જોતું
1) સમય 2) ગ્રાહક 3) મૃત્યુ
વ્યક્તિએ સદ્ધ્યાનમાં રહેવા માટે સત્પ્રવૃત્તિની જરૂરત છે,
અને એથીય વધુ સત્પરિણતિની અનિવાર્યતા છે.

तन व्याधि में डूब रहा,
मन में समाधिगान...
प्रसन्नता मुख पर बसे,
हाँ ! वे ही हैं मुनि

"दान"

Created by :
Kirit B. Vadecha
✆ 23737600 / 7977406533